NAGRI PRCHARNI G.K.V.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
110746
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरीप्रचारिणी पत्रिका

त्रैमासिक

वर्ष ४७ [नवीन संस्करण] अंक १

वैशाख १९९९

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
मानस-पाठभेद [लेखक—मानस-मराल श्री शंभुनारायण चौबे, बी० ए०, एल-एल्० बी०]	१–१४३

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित

मूल्य प्रति संख्या २॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक-मंडल

केशवप्रसाद मिश्र वासुदेवशरण अग्रवाल
पद्मनारायण आचार्य कृष्णानंद (संपादक)

सूचना

सभा का सं० १९९८ का वार्षिक विवरण पत्रिका के इस अंक के साथ सभासदों की सेवा में पहुँचना चाहिए था ; किंतु खेद है, कागज न मिलने से वह अभी प्रकाशित नहीं हो सका। कागज की प्राप्ति के लिये निरंतर उद्योग किया जा रहा है। वार्षिक विबरण छपते ही सभासदों की सेवा में पहुँचेगा। आशा है, इस विवशता के लिये सभासद हमें कृपया क्षमा करेंगे।

प्रधान मंत्री

नवीन पुस्तकें

संस्कृत साहित्य का इतिहास

प्रथम भाग—इस ग्रंथ में काव्यशास्त्र के सुप्रसिद्ध रीति-ग्रंथों एवं उनके प्रणेताओं के परिचय तथा काल-निर्णय के संबंध में ऐतिहासिक निरूपण किया गया है। पृष्ठसंख्या ३३४। सजिल्द प्रति का मूल्य सवा रुपया मात्र।

द्वितीय भाग—इसमें काव्यग्रंथों के विषय, काव्य के प्रयोजन और हेतु एवं काव्य के लक्षण आदि पर विभिन्न आचार्यों के मतों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और काव्य के पंच सिद्धांत रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति और ध्वनि का स्पष्टीकरण तथा इनके पाँचों संप्रदायों का आलोचनात्मक विवेचन कर उनका रहस्योद्घाटन किया गया है। पृष्ठसंख्या २१४, सजिल्द पुस्तक का दाम केवल सवा रुपया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110746

110746

नागरीप्रचारिणी पत्रिका

वर्ष ४७-अंक १ [नवीन संस्करण] वैशाख १९९९

मानस-पाठभेद

[लेखक—मानस-मराल श्री शंभुनारायण चौबे, बी० ए०, एल-एल्० बी०]

रामचरितमानस का मूल पाठ, जिस रूप में गोस्वामी जी के कर-कमलों से संपन्न हुआ था, निर्धारित करना बड़े महत्त्व का कार्य है। कितने ही प्रकाशित संस्करणों तथा हस्तलिखित ग्रंथों से इस कार्य में सहायता ली जा सकती है। परंतु सभी हस्तलिखित ग्रंथों का पर्यवेक्षण करना एक असंभव सी बात है और जिस किसी हस्तलिखित ग्रंथ के पीछे पड़ना श्रेयस्कर भी नहीं।

रामचरितमानस की प्रतिलिपि तो गोस्वामी जी के जीवनकाल ही में प्रारंभ हो गई थी और जैसे जैसे इस 'चारु चिंतामनि' का जौहर खुलता गया, लोग इसे अपनाते गए। धन्य थी वह शुभ घड़ी जब कि गोस्वामी जी ने अपनी चिर पुण्य लेखनी को हाथ में लेकर जन्म-जन्मांतर के पुण्य-प्रताप की कमाई जगत्-कल्याण के निमित्त शब्दब्रह्म को समर्पित की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरितमानस के शुद्ध स्वरूप की झाँकी जैसी पंडित रामगुलाम द्विवेदी[१] ने की, जैसी उनके चेला चोपईराम ने की, वंदन पाठक ने की,

---

१—पं० रामगुलाम द्विवेदी, मुहल्ला गनेशगंज, शहर मिर्जापुर के रहनेवाले, रीवाँ नरेश महाराज रघुराजसिंह के समकालीन, मानस के अनन्य प्रेमी तथा हनुमान्‌जी के सच्चे भक्त हो गए हैं। ये दिन भर फेरीदारी करते थे और रात्रि में नित्य नियमपूर्वक लोंहदी नदी पार करके श्री हनुमानजी के दर्शनों को जाया करते थे। कहते हैं कि एक दिन भरे भादों की घनी अँधेरी रात में जब कि लोंहदी की पहाड़ी नदी खूब बाढ़ पर थी—अब तो पुल भी बन गया है—ज्योंही पंडित जी ने पार करने के लिये कछनी काछी कि स्वयं हनुमान्‌जी ने दर्शन देकर पंडितजी से कहा कि 'अब इतना कष्ट न किया करना, कोई प्रतिमा रखकर उसी में मुझे देखा करना'। तभी से पंडितजी एक छोटे से अनगढ़ पाषाण की प्रतिमा के सामने बैठकर पढ़ते, रोते, हँसते थे। रामायण की वे बड़ी सुंदर कथा कहते थे, पर कथा कहने का अभिमान उन्हें छू तक न गया था। वे कहते थे कि गोस्वामी जी ने, न मालूम क्या समझ कर, किस भाव से प्रेरित होकर, इन चौपाइयों को लिखा था और इनका अर्थ करने में मेरे मुँह से क्या निकल गया उसका ध्यान न करके गोस्वामी जी के हृदय तक पहुँचना चाहिए।

यह एक दुःख और लज्जा की बात है कि स्मृति-स्वरूप छोड़ी गई हनुमान् जी की प्रतिमा तथा पंडित जी का खड़ाऊँ दर दर मारे फिरने के बाद उनके मकान के एक कोने में रख दी गई है। पंडित जी के बाद जिन जिन लोगों ने उनके मकान को नीलाम लिया या खरीदा उनका कारबार नष्ट हो गया अथवा उनपर कोई अन्य आपत्ति आई और आज दिन रामचरितमानस के नाते जो स्थान पूजा-गृह होना चाहिए था वह 'भुतहा' कहा जाता है।

इनका निधन संवत् १८८८ वि० (१८३१ ई०) में हुआ।

इंडियन ऐन्टिक्वेरी, भा० २२—पृ० १२३ तथा १२८ के फुटनोट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाला छक्कनलाल[१] ने की और पिछले काँटे पं० रामकुमार मिश्र ने की वैसी और किसके भाग्य में लिखी है। उन दिनों छापे की सुविधा न थी, प्रेस-प्रकाशक इतने सुलभ न थे, कागज-स्याही कम थी, अन्यथा ये महात्मा-गण गोस्वामी जी का पाठ बाँधकर रख गए होते और आज दिन इतनी धाँधली न दीख पड़ती।

गोस्वामी जी की वाणी का तथ्य जितना उन्हीं के ग्रंथों द्वारा समझा जा सकता है उतना और किसी प्रकार से नहीं। किसी भी शब्द, वाक्य, या भाव का गोस्वामी जी ने ऐकांतिक प्रयोग नहीं किया है। किसी न किसी दूसरे स्थान से उनकी पुष्टि, उनका समर्थन और स्पष्टीकरण अवश्य होता है। यदि ध्यानपूर्वक मिलान किया जाय तो गोस्वामी तुलसीदासजी ने सभी प्रकरणों का उपक्रम और उपसंहार इतनी सुंदरता से किया है, एक प्रकार के वस्तु-वर्णन में भिन्न भिन्न स्थलों पर शब्दों की कुछ ऐसी समानता रख दी है कि जिन पर दृष्टि न रखने से लोग भटक जाते हैं। कहीं कहीं तो एक ग्रंथ का भाव दूसरे ग्रंथ की सहायता से अधिक स्पष्ट होता है। उदाहरण के लिये नीचे रामचरितमानस के कुछ स्थल दिए जाते हैं जहाँ

१—**लाला छक्कनलाल**, पंडित रामगुलाम द्विवेदी के शिष्य थे। इन्होंने पंडित जी की पोथी पर से एक प्रति लिखी थी। ये काशिराज महाराज ईश्वरी-नारायण सिंह के नवरत्नों में थे और रामनगर में वृद्धावस्था बिताते थे। पंडित रामकुमार मिश्र गुरु मानकर इनकी बड़ी सेवा करते थे। बुढ़ौती और अफीम के कारण पिनकते हुए गुरु के सामने हुक्का चिलम भरकर पंडित जी जोहते रहते थे। वृद्ध गुरु भी शिष्य पर विशेष कृपा रखते थे और कहते थे "क्या करूँ रामकुमार, तुम देर में मिले, सब तो बतलाने की सामर्थ्य नहीं है, हाँ रामचरितमानस की कुछ झलक दिखलाए जाता हूँ।" गुरु के आशीर्वाद से पंडित रामकुमार जी मिश्र अपने समय के कथावाचकों के सिरमौर हुए। उस एक झलक ने पंडित जी के हृदय को ऐसा प्रकाशमान बना दिया जिससे आज तक कथावाचकों का समुदाय प्रभासित है। आजकल रामायण की कथा में जहाँ कहीं वास्तविक चमत्कार का निदर्शन हो उसे पंडित रामकुमार जी की देन समझनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलान न करने के कारण लोगों को धोखा हुआ है और पाठ में गड़-बड़ी की गई है।

(१) सकइ उठाइ सरासुर मेरू। सोउ तेहि सभा गएउ करि फेरू।

१।२६१।७

सर + असुर = बाणासुर—इस अर्थ को न समझ कर बहुत लोगों ने 'सुरासुर' पाठ कर दिया है। यदि निम्नलिखित अवतरणों पर ध्यान दिया गया होता तो 'सरासुर' ऐसा सुंदर आलंकारिक शब्द न बदला जाता।

रावन बान महा भट भारे। देखि सरासन गवहिं सिधारे।
जिनके कछु बिचार मन माहीं। चाप समीप महीप न जाहीं।

१।२४६।२

रावन बान छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा।

१।२५५।३

(२) ओर निबाहेहु भायप भाई। करि पितु मातु सुजन सेवकाई।

२।१५१।५

'ओर निबाहेहु' का अर्थ होता है अंत तक निबाहना। इसका पाठ लोगों ने "और निबाहेहु" वा 'अउर निबाहेहु' बदल दिया है। निम्नलिखित अवतरणों पर ध्यान न देने से यह भूल हुई है।

सेवक हम स्वामी सिय नाहू। होउ नात यह ओर निबाहू।

२।२३।६

प्रनतपाल पालहिं सब काहू। देव दुहूँ दिसि ओर निबाहू।

२।३१३।४

पद-पद्म गरीब निवाज के।
देखिहौं जाइ पाइ लोचन फल हित सुर साधु समाज के।
गई बहोरि ओर निरबाहक साजक बिगरे साज के॥

गीतावली (सुंदर कांड) पद सं० २६

मों पै तो न कछू ह्वै आई।
ओर निबाहि भली बिधि भायप चल्यौ लषन सो भाई॥

गीतावली (लंका कांड) पद सं० ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमिरत श्री रघुबीर की बाहैं।

होत सुगम भव उदधि अगम अति, कोउ लाँघत, कोउ उतरत थाहैं ॥

... ...

सरनागत आरत प्रनतनि को दै दै अभय पद ओर निबाहैं।

करि आईं, करिहैं करती हैं तुलसिदास दासनि पर छाहैं ॥

गी० (उत्तर कांड) पद सं० १३

दुखित देखि संतन कह्यो सोचै जनि मन माहूँ।

तोसे पसु पाँवर पातकी परिहरे न सरन गए रघुबर ओर निबाहू।

विनयपत्रिका पद सँ० २७५

(३) एहि बधि बेगि सुभट सब धावहु। खाहु भालु कपि जहँ तहँ पावहु।

६।२३२।१

सभी बाजारू प्रतियों में 'एहि बिधि' पाठ मिलता है जिसका कोई युक्तिसंगत अर्थ ही नहीं बैठता जो पूर्वापर के अनुरूप हो।

'घरहु कपिहिं धरि मारहु सुनि अंगद मुसकाइ' के ठीक आगे की चौपाई में रावण कहता है कि इसे तो अभी ही बध डालो फिर चारों तरफ जाकर जहाँ जहाँ बंदर भालु पाओ खाते जाओ। अतः 'बधि' पाठ ही शुद्ध तथा प्राचीन है।

(४) 'एक बार अति सैसव चरित किए रघुबीर।'

७।७५

सैसव चरित = बाललीला—इस अर्थ को न समझकर प्रतियों में 'अतिसय सब' या 'अतिसय सुखद' पाठ बिगाड़ा गया है। जब पाठ ही भ्रष्ट है तो अर्थ कहाँ से ठीक होगा।

यहाँ पर भुसुंडि-गरुड-संवाद में लोग अपनी अपनी बीती सुना रहे हैं। गरुड़ ने कहा कि भाई जब श्री रामचंद्र जी नागपाश में बँध गए तब उन्हें मुक्त करने के लिये नारद जी ने मुझे भेजा था। मैंने जाकर जो देखा उसके कारण मुझे मोह हो गया। नाग-पाश में बँधने तक तो कोई बात न थी। पर उस बंधन में पड़कर महाराज रामचंद्र जी को विकल देखकर मुझे मोह हुआ जिसकी वृद्धि इस बात से और हुई कि मैंने उन्हें मुक्त किया—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहि भएउ अति मोह प्रभुबंधन रन महँ निरखि।
चिदानंद संदोह राम बिकल कारन कवन ॥

देखि चरित अति नर अनुसारी। भएउ हृदय मम संसय भारी ॥७।६८

काग भुसुंडी जी बाललीला के उपासक हैं।

जब जब राम मनुज तन धरहीं। भगत हेतु लीला बहु करहीं।
तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ। बाल चरित बिलोकि हरषाऊँ।
जन्म महोत्सव देखौं जाई। बरष पाँच तहँ रहउँ लोभाई।
इष्ट देव मम बालक रामा। सोभा बपुष कोटि सत कामा।
निज प्रभु बदन निहारि निहारी। लोचन सुफल करौं उरगारी।
लघु बायस बपु धरि हरि संगा। देखौं बालचरित बहु रंगा।

... ...

रूपरासि नृप-अजिर-बिहारी। नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी।
मोहि सन करहिं बिबिध बिधि क्रीड़ा। बरनत चरित होति अति व्रीड़ा।
किलकत मोहिं धरन जब धावहिं। चलौं भागि तब पूप देखावहिं।

आवत निकट हँसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं।
जाउँ समीप गहन पद फिर फिरि चितै पराहिं ॥
प्राकृत सिसु इव लीला देखि भएउ मोहिं मोह।
कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह ॥७७॥

इसी 'सिसु-लीला' का संकेत करके कहा गया है कि 'एक बार अति सैसव चरित किए रघुबीर'। अर्थात् हे गरुड़ जी, जिस प्रकार आपको अति नर अनुसारी चरित्र देखकर मोह हुआ उसी प्रकार मुझे अति सैसव चरित्र देखकर मोह हुआ। इन प्रकरणों में 'अति' और 'चरित' शब्द मारके के हैं।

(५) सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुबीर।
भुवन भुवन देखत फिरौं प्रेरित मोह समीर ॥७।८१

'समीर' पाठ लोगों ने बदल कर 'सरीर' कर दिया है। प्रेरणा करने का गुण समीर का है, यथा—

पुनि बहु बिधि गलानि जिय मानी। अब जग जाइ भजौं चक्रपानी
ऐसेहि करि बिचार चुप साधी। प्रसव पवन प्रेरेउ अपराधी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरेउ जो परम प्रचंड मारुत कष्ट नाना तैं सह्यो।
सो ज्ञान ध्यान बिराग अनुभव जातना पातक दह्यो।
विनयपत्रिका पद १३६ (५)

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि वास्तविक अर्थ तथा भाव बोध के लिये शुद्ध पाठ कितना आवश्यक है। रामचरितमानस के पाठ-सुधार का बुनियादी काम पं० रामगुलाम द्विवेदी ने प्रारंभ किया था। इनके पास मानस के इतर ग्रंथ भी शुद्ध रूप में वर्तमान थे। गोस्वामी जी के ग्रंथों के संबंध में इनका एक प्रसिद्ध कवित्त है।

रामलला[1]नहछू बिराग[2] संदीपनी हूँ बरवै[3] बनाय बिरमाई मति साँईं की।
पारबती[4] जानकी[5] के मंगल ललित गाय रम्य राम[6] अज्ञा रची कामधेनु नाईं की ॥
दोहा[7] औ कवित्त[8] गीत[9] बंध कृष्ण[10] कथा कही रामायन[11] बिनय[12] माँह बात सब ठाईं की।
जग में सोहानी जगदीसहू के मनमानी संत सुखदानी बानी तुलसी गोसाईं की ॥

द्विवेदी जी के दो मुख्य शिष्य हुए—चोपईराम कसेरा और लाला छक्कनलाल कायस्थ। लालाजी ने रामचरितमानस की एक प्रति लिखी थी और बहुत से लोगों ने उसी पोथी की नकल की थी।

आगे चलकर काशी के बाबा रघुनाथदास जी ने मानस के पाठ को शुद्ध रखने का काम किया था। इनकी प्रति का पाठ लेकर काशी से छः प्रतियाँ भिन्न भिन्न स्थानों से विक्रमी सं० १९१४, १९२२, १९२६, १९३३, १९३४, १९४० में प्रकाशित हुई थीं। इस अंतिम छपी पोथी ने जो आकार ग्रहण किया उसी के परिष्कृत रूप में श्री भागवतदास छत्री ने सं० १९४२ में अपना संस्करण छपवाया था। गोस्वामीजी के ग्रंथों के उद्धार में भागवतदासजी का प्रयास सर्वोपरि है। इन्होंने सं० १९४३ में अन्य ग्यारह ग्रंथ भी सरस्वती प्रेस, काशी से छपवाए थे। इन पोथियों का पाठ बहुत शुद्ध है। इनका उपयोग ग्रियर्सन साहब ने इंडियन एंटीक्वेरी में अपनी लेखमाला लिखते समय तथा बाँकीपुर से रामचरितमानस निकालते समय किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरितमानस का पाठ-संशोधन केवल कुछ शब्दों के बदल देने से अथवा उलट-फेर कर देने से ही नहीं होता; क्योंकि रामचरितमानस जितना ही साधारण और सुलभ ग्रंथ है उतना ही असाधारण और अथाह भी है। इसकी अर्धाली के प्रत्येक खंड अपितु प्रत्येक शब्द को ग्रहण करने के पूर्व रुकना चाहिए और खूब आद्यंत विचार करना चाहिए। किसी भक्त की वाणी को 'बिना जाने बिगाड़ना' उचित नहीं। कहीं कहीं के पाठ, भारतवर्ष के इतिहास के वर्तमान रूप की नाईं इतने भ्रमपूर्ण हैं और उनका कुसंस्कार ऐसा दृढ़ है कि शुद्ध स्वरूप के ग्रहण करने में विज्ञ लोग भी आनाकानी करते हैं। ऐसी दशा में प्रामाणिक प्रतियों के पाठ निर्देश करने की दृष्टि से यह लेख लिखा जा रहा है।

प्रस्तुत लेख में मुख्य पाठभेद का निर्देश भागवतदास, वि० सं० १७२१,[1] सं० १७६२, छक्कनलाल, रघुनाथदास, बंदन पाठक, काशिराज, कोदोराम की प्रतियों से किया गया है। बाल कांड में श्रावणकुंज की प्रति (सं० १६६१) तथा अयोध्या कांड में राजापुर की प्रति का पाठ दिया गया है। रामचरितमानस के पाठ-शोध के लिये इन दस प्रतियों का पाठ आवश्यक और पर्याप्त है। लेख में पहले पाठभेद-वाली पंक्ति अपने संकेतस्थल के सहित—अर्थात् किस कांड के, कौन से दोहे के आगे की कौन सी पंक्ति—दी गई है, जिसमें पाठभेद के शब्द मोटे टाइप में हैं और उनके सामने प्रमाणभूत मानी गई उपर्युक्त प्रतियों के पाठभेद दिए गए हैं। संकेत-सुविधा के विचार से प्रतियों के लिये संख्या निर्धारित कर दी गई है। पाठपंक्ति अक्षरशः भागवतदास के प्रथम संस्करण (सं० १९४२) से ली गई है।

१—१७२१ की प्रति का अयोध्याकांड कहीं अन्यत्र चला गया है इसलिये अयोध्याकांड के पाठभेद में इस प्रति का पाठभेद नहीं दिया गया है। पर अन्य कांडों में भागवतदास की प्रति से सं० १७२१ की प्रति इतनी मिलती जुलती है कि भागवतदास का पाठ १७२१ की प्रति का पाठ ही समझा जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठभेद के मुख्य कारण जो समझ में आते हैं वे इस प्रकार हैं—

(१) लेखक की असावधानता तथा लेख प्रमाद। यथा—१।१७; १।३१।१२; २।१०५।८; ७।१३; ७।२१।९; ७।२५।१; ७।८०।७।

(२) सावधान लेखक भी कहीं कहीं अशुद्ध लिखने के बाद अपने लेख में काट-कूट न करने के निमित्त—यह जानते हुए कि गलत लिख गया है—उसका सुधार नहीं करता; और यदि लेखक का अक्षर सुंदर हुआ—जैसा प्राचीन काल में प्रायः होता ही था—तो यह प्रलोभन और भी जोर पकड़ता था। कहीं पर इस भूल का सुधार, अर्थ में कोई विपर्यय न होने की भावना से भी नहीं होता था।

(३) गोस्वामी जी के शब्दों का अर्थ न समझ कर पाठ-परिवर्तन। यथा—२।१२५।५; ७।८०।६; ७।८६।७।

(४) गोस्वामी जी की वाणी का भाव न समझ कर अपनी बुद्धि से पाठ-परिवर्तन। यथा—१।२९५।३; १।३४४।३; ३।२१।५; ७।७५।

(५) गोस्वामी जी के प्रयुक्त संस्कृत शब्दों का तद्भव तथा प्रांतीय रूप देकर पाठ परिवर्तन। यथा—१।१० (ग्राम्य); ३।१०।१० (कुमारी); ३।१०।११ (कुमार); ३।३२।५ (सत्य); ५।५४ (विकटास्य); ४।२०।३, ६।७।६, ७।४५।४ (बस्य); ७।५२।६ (निजात्मक); ७।४७।६ (उपरोहित्य); ७।६९ (गोप्यमपि)।

इसी प्रकार तद्भव तथा प्रांतीय शब्दों के स्थान पर पंडित लोगों ने संस्कृत रूप कर दिए हैं।

(६) प्राचीन लिपि की अनभिज्ञता। यथा—१।१७; १।३१।१२; ३।४ का२४।

(७) चौपाइयों में जान लाने के लिये तथा अर्थ में चमत्कार दिखलाने लिये कथक्कड़ों की अपनी युक्ति। यथा—१।११८।२; १।२७४।६; १।२८०।५; ७।९७।१।

(८) शब्दालंकार गढ़ना एवं प्रयुक्त अलंकारों को न समझना। यथा—१।२६।७; १।१७८।८; १।२७३।२; ३।६का८; ३।२१।११; ६।७३।५; ६।७३।७; ७।५९।५; ७।९८।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(९) चौपाइयों की यति-गति ठीक करने की बुद्धि । यथा—१।७७।८; ३।१।८; ३।८; ६।११८; ७।२८; ७।११६।१ ।

(१०) अर्थ को स्पष्ट करने की इच्छा ।

(११) शब्दों के उलट-फेर मात्र । यथा—१।१९।८; १।३८।६; १।४८।७; १।५१।८; १।६२।६; १।६७।५; १।७६।३; १।७७।८; १।२१२।२; १।२३७।७; १।२६०।६; १।२६४।७; ३।२१।१०; ६।७।८; ६।४१; ६।९३; ६।९९।३; ७।१।५; ७।२२; ७।२८।५; ७।७२।४; ७।७६।९; ७।८१; ७।११२।३; ७।११७।१० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतियों का संकेत

१=सं० १७२१ वि० की प्रति

२=सं० १७६२ वि० की प्रति

३=छक्कनलाल की प्रति

४=रघुनाथदास की प्रति

५=बंदन पाठक की प्रति

६=सं० १७०४ वि० की काशिराज वाली प्रति

७=कोदवराम की प्रति

८= { बाल कांड में—श्रावण कुंज की प्रति
अयोध्या कांड में—राजापुर की प्रति }

भा=भागवतदास की प्रति

जो पाठ ( ) के भीतर हैं वे किन्हीं फुटकर प्रतियों के हैं जो प्रामाणिक नहीं हैं।

जो अंक ○ के भीतर हैं वे उस अंकवाली प्रति के विलक्षण पाठ का निर्देश करते हैं जो अन्य प्रामाणिक प्रतियों में नहीं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल कांड

१।० **जो** सुमिरत **सिधि** होइ, गन नायक करिवर बदन। ...	१,२,३,४,५,६,७–जो, सिधि; ८–जेहि; (सिध्र)
१।० बंदौं गुर पद कंज कृपा सिंधु नर रूप **हरि**। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–हरि; (हर)
१।१।१ **गुरु पद मृदु मंजुल रज** अंजन।...	१,२–पद मृदु मंजुल रज; ३,४,५,६,७,८–पद रज मृदु मंजुल
१।१।५ साधु चरित सुभ **चरित** कपासू। ...	१,२,३,४,५,८–चरित; ६,७–सरिस
१।१।८ **सरसै** ब्रह्म बिचार प्रचारा। ...	१,२,५–सरसै; ३,४,६,७,८–सरसइ; (सरस्वति)
१।१।११ तीरथ **साज** समाज सुकर्मा। ...	१,२,३,६–साज; ४,५,७,८–राज
१।२।६ पारस **परस** कुधातु सुहाई। ...	१,२,४,५,६,८–परस; ३,७–परसि
१।२।१२ साक बनिक मनि **गन गुन** जैसे।	१,२,३,४,५,६,७–गन गुन; ८–गुन गन
१।३।१ जे बिनु काज **दाहिनेहु** बाँए। ...	१,२,३,४,५,७–दाहिनेहु; ६–दाहिनहु; ८– दाहिने
१।३।८ सहस बदन **बरनै** पर दोसा। ...	१,२,३,४,५–बरनै; ६,७–बरनइ; ८–बरनहिं
१।४ **जानि** पानि जुग जोरि जन, बिनती करइ सप्रीति। ...	१,२,३,४,५,६,७–जानि; ८–जानु
१।४।२ होहिँ निरामिष **कबहिँ** कि कागा।	१,२,३–कबहिं; ४,५,६,८–कबहुँ
१।४।३ बंदौं संत **असज्जन** चरना। ...	१,२,३,४,५,८–असज्जन; ६,७–असंतन
१।४।५ उपजहिँ एक संग **जग** माहीँ।...	१,२,३,४,५,६,७,८–जग;(जल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।५।८	कासी मग सुरसरि **कबिनासा**, मरु **मालव** महिदेव गवासा। ...	१,३,४,५,६–कविनासा; २–कर्मनासा; ७,८–क्रमनासा; १,२,३,४,५,७–मालव; ६,८–मारव
१।६	संत हंस गुन **ग्रहहिँ** पय, परिहरि बारि बिकार। ...	१,२,३,६–ग्रहहिं; ४,५,७,८–गहहिं
१।६।३	सो सुधारि हरि**जन** जिमि लेहीँ। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–जन;तन तन
१।७	ससि **पोषक सोषक** समुझि, ...	१,२,३,५,६,७–पोषक सोषक; ४,६,८–सोषक पोषक
१।७।१२	जे पर **भनिति** सुनत हरषाहीँ। ...	१,२,३,४,५,६,७–भनिति; ८–भनित
१।७।१३	जग बहु नर **सरिसर** सम भाई। ...	१,२,४,५–सरि सर; ३,६,७,८–सरसरि; (सुरसरि)
१।७।१४	सज्जन **सकृत** सिंधु सम कोई। ...	१,३,४,५,६–सकृत; ७–सुकृत; २–सकृति
१।८	पैहहिँ सुख सुनि सुजन **जन**, ...	१,२,३,४,५–जन; ६,७,८–सब
१।८।१	हंसहि बक **गादुर** चातकही। ...	१,२,३,४,६,८–गादुर; ५,७–दादुर
१।८।८	कबि न होउँ नहिँ **चतुर** प्रबीनू। ...	१,२,३,४,५,७–चतुर; ६,८–बचन
१।८।११	सत्य कहौं लिखि **कागद** कोरे। ...	४,५,७–कागद; १,२,३,६,८–कागर
१।१०	गिरा **ग्राम्य** सिय राम जस, ...	१,२,३,६,७,८–ग्राम्य; ४,५–ग्राम
१।१०।७	सिर धुनि गिरा **लगति** पछिताना।...	१,२,३,४,५,७–लगति; ६,८–लगत
१।१०।८	**स्वाती सारद** कहहिँ सुजाना। ...	१,२,३,४,५,६,७–स्वाती सारद; ८–स्वाति सारदा
१।११।४	धिग धरमध्वज धंधक धोरी। ...	१,२,३,४,५,७–में भा० का पाठ है; ८-धीग; ६–धीग धरमध्वज धंधरच
१।११।६	**थोरेहि** महँ जानिहहिँ सयाने। ...	१,२,३–थोरेहि; ४,५,६,७,८–थोरे महुँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।११।७ समुझि विविधि **बिनती अब** मोरी ।	१,२,३–बिनती अब; ४,५,६,७, ८–विधि बिनती
१।११।८ एतेहु पर करिहहिं **जे असंका** । ...	१,२,३–जे असंका ; ४,५,७–जे संका; ६, ८–ते असंका
१।११।८ मोहि ते अधिक **ते** जड़ मति रंका । ...	१,२,३,४,५,७,८–ते; ६–जे
१।१२।६ **जेहिं** करुना करि कीन्ह न कोहू । ...	१,३,४,५,६,८–जेहिं ; २–जेहि; ७–तेहि
१।१२।१० तेहि मग चलत **सुलभ** मोहि भाई ।...	१,२,३–सुलभ; ४,५,६,७,८–सुगम
१।१३।६ प्रनवौं सबनि कपट **छल** त्यागे । ...	१,२,३,४,५–छल; ६,७,८–सब
१।१४ करहु कृपा हरि जस कहौं, पुनि पुनि **कहौं निहोरि** । ...	१,२,३–कहौं निहोरि; ४,५–कहहुँ निहोर; ६,७,८–करउ निहोर ।
१।१४।७ **होउ महेस** मोहि पर अनुकूला । ...	१,२–होउ महेस; ४,५,८–सोउ महेस; ६,७–सो उमेस; ३–सो महेस
१।१४।७ **करहु** कथा मुद मंगल मूला । ...	१, २,–करहु; ३,४,५,७–करउँ; ६, ८–करिहि
१।१६।७ **जो** अवतेरउ भूमि भय टारन । ...	१,२,३,४,५,६,७–जो; ८–सो
१।१७ प्रनवौं पवन कुमार , खल बन पावक **ज्ञान घर** । ...	१,२,३–ग्यानघर; ४,५,६,७,८–ज्ञानघन
१।१८ गिरा अरथ जल बीचि सम, **देखिअत भिन्न न भिन्न** । ...	१,२,३,४,५,७–देखिअत;६,८–कहिअत
१।१८।१ बंदौं **नाम राम** रघुबर को । ...	१,२,३,४,५,६,७,८ नाम राम; (राम नाम)
१।१८।५ जान आदि कवि नाम **प्रभाऊ** । ...	१,२–प्रभाऊ ; ३,४,५,६,७,८–प्रतापू
१।१८।५ भयेउ सुद्ध **कहि** उलटा **नाँऊ** । ...	१,२–कहि उलटा नाँऊ; ३,४,५,६,७,८–करि उलटा जापू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।१८।६ **जपि जेईं** प्रिय संग भवानी। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–जपि जेईं; (जपी जाइ)
१।१६।३ कहत सुनत **सम्रुझत** सुठि नीके। ...	१,२,३,४,५,७–समुझत; ६,८–सुमिरत
१।१६।४ ब्रह्म जीव **इव** सहज सँघाती। ...	१,२,३,४,५–इव; ६,७,८–सम
१।१६।८ जन मन **कंज मंजु** मधुकर से। ...	१,२,३,५–कंज मंजु; ४,६,७,८–मंजु कंज
१।२० तुलसी रघुबर नाम के, बरन **बिराजित** दोउ। ...	१,२,३–बिराजित; ४,५,६,७,८–बिराजत
१।२१ तुलसी भीतर **बाहरौ** जौ,	१,२,३,४–बाहरौ; ५–बाहेरौ; ६,८–बाहरहु; ७–बाहिरउ; (बाहिरौ)
१।२१।३ **जानी** चहहिं गूढ़ गति जेऊ। ...	१,२,३,४,६–जानी; ५,७,८–जान
१।२१।३ नाम जीह जपि **जानहिँ** तेऊ। ...	१,२,३,४,७–जानहिं; ५–जानहि; ६, ८–जानहु
१।२१।४ साधक नाम जपहिँ **लौ** लाए। ...	१,२,३–लौ; ४,५,६,८–लय; ७–लउ
१।२२ नाम **पेम** पीयूष ह्रद तिन्हहु किए,	१,२,३,६–पेम; ४,५,७,८–प्रेम
१।२२।२ **हमरे** मत बड़ नाम दुहूँ ते। ...	१,२,३–हमरे; ४,५,६,७,८–मोरे
१।२२।३ **प्रौढ़ि** सुजन जनि जानहिँ जन की।	१,२,६,८–प्रौढ़ि; ३,४,५,७–प्रौढ़
१।२४।५ राम **सकल कुल** रावन मारा ...	१,२,३,–सकल कुल; ४,५,६,७,८–सकुल रन
१।२५।२ सुक सनकादि **साधु** मुनि जोगी। ...	१,२, ३, ४, ५,७–साधु; ६,८–सिद्ध
१।२५।३ जग प्रिय हरि **हरि** हर प्रिय आपू।...	१,२,३,४,५,६,७–हरि; ८–हर
१।२५।५ **थापेउ** अचल अनूपम ठाऊँ। ...	१,२–थापेउ; ३,४, ५, ६,७,८–पायेउ
१।२५।७ **अपत** अजामिल गज गनिकाऊ। ..	१,२,३,४,५,८–अपत; ६–अपरु ७–जपत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।२६ जो सुमिरत **भयो** भाँग ते, **तुलसी** तुलसीदास। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ८—भयो ... तुलसी; ७—भए ... तुलसी
१।२६।३ द्वापर **परितोषन** प्रभु पूजे। ...	१,२,३,४,५—परितोषन; ६,७,८—परितोषत
१।२६।५ सुमिरत सकल समन **जंजाला**। ...	१,२,३—जंजाला; ४, ५, ६, ८—समन सकल जग जाला; ७—सुखद सुलभ सब काला
१।२६।७ नहिँ कलि करम न **भगति** बिबेकू।...	१,२,३,४, ५, ६, ७, ८—भगति; (धरम)
१।२७ जापक जन प्रह्लाद **जिमि**......।...	१, २, ३,४,५, ६, ७, ८—जिमि; (इव)
१।२७।११ को जग मंद मलिन **मन** मो तें।...	१, २, ३, ४,५,७—मन; ६, ८—मति
१।२८।३ भगति **भोरि** मति स्वामि सराही।...	१, २, ३, ५, ७—भोरि; ४,६,८—मोरि
१।२८।४ कहत नसाइ **होइ हिय** नीकी। ...	१, २, ३, ६, ८—होइ हिअ; ४, ५, ७—होइ हिय; (होइहि अति)
१।२८।८ **राज सभा** रघुबीर बखाने। ...	१,३,४,५,७—राज सभा; २,६,८—राम सभा
१।२९ तुलसी **कहीँ** न राम से, साहिब सील निधान। ...	१,२,३,४,५—कहीं; ६,७,८—कहूँ
१।२९।६ **सबदरसी** जानहिँ हरिलीला। ...	१,२,३,५,६,८—सबदरसी; ४,७—समदरसी; (सभदरसी)
१।३० स्रोता......कथा राम **कै** गूढ़, किमि **समुझौं मैं**। ...	१,२,३,४,५,६,७,८—कै...समुझौं मैं; (की...समुझै यह)
१।३०।२ **भाषा बंध** करबि मैं सोई। ...	१,२,३,४,५,७—भाषा बंध; ६,८—भाषा बद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।३१।१२	राम भगत जन जीवन **धन** से।	... १,२,३,४,५,७,८–धन; ६–धर
१।३३।२	पुनि सबही **प्रनवौं** कर जोरी।	... १, २, ३, ४, ५.७–प्रनवौं; २–प्रनवों; ६, ८–बिनवौं
१।३४।३	लोक समस्त बिदित **अति** पावनि।	... १, २, ३, ४, ५, ६, ७,८–अति; (जग)
१।३४।१०	कलि कुचालि **कुलि** कलुष नसावन।	१, २, ३, ४, ५, ६,७,८–कुलि; (कलि)
१।३६।३	उपमा **बिमल** बिलास मनोरम।	... १, २–बिमल; ३, ४, ५, ७, ८–बीचि; ६–बीच
१।३६।१३	छमा दया **द्रुम** लता बिताना।	... १, २, ३, ४, ५,६–दम; ७,८–द्रुम
१।३६।१४	**सम जम नियम** फूल फल ग्याना।	... १, २, ३, ६–सम जम नियम; ४,५–सम जम नेम; ७–संयम
१।३६।१४	हरि पद **रति रस** बेद बखाना।	... १,२,३,४,५,७–रति रस; ६, ८–रस बर
१।३८।६	सोइ सादर **मज्जन** सर करई।	... १, २, ३, ४, ५–मज्जन सर; ६,७,८–सर मज्जन
१।३८।७	जिन्ह के राम चरन भल **चाऊ**।	... १,२, ३, ४–चाऊ; ५, ६,७,८–भाऊ
१।३८।११	चली सुभग कबिता सरिता **सो**।	... १,२,३,४,५,६,८–सो; ७–सी
१।४०।४	घाट **सुबंध** राम बर बानी।	... १,२,३,७–सुबंध; ४, ५–सुबंधु; ६,८–सुबद्ध
१।४०।७	परब जोग जनु **जुरेउ** समाजा।	... १, २, ३, ४,५,७–जुरेउ; ६,८–जुरे
१।४१	कलि **खल अघ** अवगुन कथन।	... १, २, ३, ४, ५, ७–खल अघ; ६,८–अघ खल
१।४२।१	लघुता ललित सुबारि न **खोरी**।	... १,२,३, ४, ५, ६–खोरी; ७,८–थोरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।४२।२ अदभुत सलिल सुनत **गुन कारी** ।...	१,२,३,४,५,७,८–गुनकारी; ६–सुखकारी
१।४३ मति अनुहारि सुबारि गुन, गन **गनि** मन अन्हवाइ । ...	१, २, ३, ४, ५, ७,८–गनि; ६–गनत
१।४३ अब रघुपति पद पंकरुह, हिय धरि पाइ प्रसाद । ... कहौं जुगल मुनिवर्ज कर, मिलन सुभग संवाद । ...	१,२,३, ४, ५,७,८ में भा० का पाठ है; ६–भरद्वाज जिमि प्रश्न किय, जागबलिक मुनि पाय । प्रथम मुख्य संवाद सोइ, कहिहौं हेतु बुझाय ।
१।४३।७ जाहिँ जे **मज्जन** तीरथ राजा । ...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८–मज्जन ६–मज्जहिँ
१।४४।८ कहत सो मोहि **लागत्ति** भय लाजा ।	१,२,३–लागति; ४,५,६,७,८–लागति; (लाग)
१।४५।८ **भए** रोष रन रावन मारा । ...	१, २–भए; ३, ४, ५, ६,७,८–भएउ
१।४६।१ जैसे मिटै **मोह** भ्रम भारी । ...	१, २,३, ४,५–मोह; ६, ७, ८–मोर
१।४८ **गुपुत** रूप अवतरेउ प्रभु, **गएँ** जान सबु कोइ । ...	१, २, ३, ७–गुपुत ... गये; ४, ५–गुप्त ... गए; ३, ७–गए; ६,८–गुप्त ... गएँ
१।४८।६ मृग बधि बंधु सहित **प्रभु** आए ।...	१, २, ३, ४, ५,७–प्रभु; ६,८–हरि
१।४८।७ बिरह बिकल **इव नर** रघुराई । ...	१,२–इव नर; ३,४,५,६,७,८–नर इव ।
१।४८।८ देखा प्रगट **दुसह** दुख ताके । ...	१, २, ३,४,५,७–दुसह; ६,८–बिरह
१।४६।१ उपजा हिय **तेहि** हरष बिसेखा । ...	१, २,–तेहि; ३, ४,५, ६,७,८–अति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।४६।६	सुर नर मुनि सब **नावहिँ** सीसा। ...	१,२,३,४,५,७–नावहिँ; ६, ८–नावत
१।५०।६	संसय अस न धरिअ **तन** काऊ। ...	१,२,३,५–तन; ७–मन; ४,६,८–उर
१।५१।४	**करइ** बिचार करौँ का भाई। ...	१, २, ३, ४, ५,७–करइ; ६,८–करहिं
१।५१।५	**इहाँ** संभु अस मनु अनुमाना। ...	१,२,३,४,५,६,८–इहाँ; ७–उहाँ
१।५१।८	अस कहि **जपन लगे** हरि नामा। ...	१,२,३,४,५,७–जपन लगे; ६,८–लगे जपन
१।५२।३	**सब दरसी** सब अंतरजामी। ...	१,२,३,४,५,६,८–सबदरसी; ७–समदरसी
१।५२।७	पिता समेत लीन्ह **हरि** नामू। ...	१,२,३,५–हरि; ४,६,७,८–निज
१।५५।१	भय बस **प्रभु** सन कीन्ह दुराऊ। ...	१,२,३,४,५–प्रभु; ६,७,८–सिव
१।५५।३	मोरे मन प्रतीति **अति** सोई। ...	१,२,३,४,५,६,८–अति; ७–असि
१।५६	परम **प्रेम तजि जाइ नहिं**, किए प्रेम बड़ पाप। ...	१,२,३,४,५–प्रेम तजि जाइ नहिं; ६,८–पुनीत न जाइ तजि; ७–प्रेम नहिं जाइ तजि
१।५६।१	सुमिरत राम हृदय अस **गावा**। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–आवा
१।५७	बिलग **होत** रस जाइ, कपट खटाई परत **हीँ**। ...	१,२,३–होत...हीं; ४,५,६,७–होइ...ही; ८–होइ...पुनि
१।६१	तौ मैँ जाउँ कृपा **अयन**, सादर देखन सोइ। ...	१,२,३–अयन; ४,५,६,७,८–यतन
१।६१।८	नहिँ भलि बात **हमारेहि** भाए। ...	१,२,३,४,५,७–हमारेहि; ६,८–हमारें भाएं
१।६२।६	पाछिल दुख **अस हृदय न** ब्यापा।	१,२,३,४,५,७–अस हृदय न; ६,८–न हृदय अस
१।६३।४	**काढ़िअ** तासु जीभ जो बसाई। ...	१,३,४,५–काढ़िअ; २,६,७,८–काटिअ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।६५।२ सहज बैर सब **जीवन** त्यागा। ...	१,२,७–जीवन्ह ; ६,८–जीवइ; ३,४,५–जीवन
१।६५।६ पद पखारि **तब** आसन दीन्हा। ...	१,२,३–तब; ४,५,६,७,८–बर
१।६५।७ चरन सलिल **तब** भवन सिचावा। ...	१–तब; २,३,४,५,६,७,८–सब
१।६५।८ निज सौभाग्य बहुत **बिधि** बरना। ...	१,२,३,४,५,७–बिधि; ६,८–गिरि
१।६६।६ **त्रिय** चढ़िहहिँ पतिब्रत असि धारा।...	१,२,३,६,८–त्रिय; ४,५,७–तिय
१।६७।५ मिलन कठिन **भा मन** संदेहू। ...	१,२,३,४,५,७-भा मन; ६,८–मन भा
१।६७।७ झूठि न होइ देवरिषि बानी। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–झूठि; (झूठ)
१।६८।५ बुध कछु तिन्ह **कर** दोष न धरहीं।...	१,२,६,८–कर; ३,४,५,७–कहँ
१।६८।८ समरथ **को** नहिँ दोस गुसाईं। ...	१,२,३,४,५ को; ६,८–कहु; ७–कहँ
१।६९ जौं **ऐसहि इसिखा करहिँ नर,** बिबेक अभिमान। ...	१,२–ऐसहि इसिखा करहिं नर; ३,४,५,६,७,८–अस हिसिखा करहिं नर जड़
१।७० होइहि **अब कल्यान सब,** ...	१,२,३,४,५–अब कल्यान सब; ६,७,८–यह कल्यान अब
१।७०।२ नाथ न मैं **बूझे** मुनि बैना। ...	१,२,३–बूझे; ४,५,६,८–समुझे; ७–समुझउँ
१।७१ प्रिया सोच परिहरहु **अब,** **पारबती** निरमयेउ। ...	१,२,३–अब···पारबती; ४,५,६, ७,८–सब···पारबतिहि
१।७१।४ अस बिचारि **सब** तजहु असंका। ...	१,२,३–सब; ४,५,६,७,८–तुम्ह
१।७२।८ **भएउ** बिकल मुख आव न बाता। ...	१,२–भएउ; ५,६,७,८–भए; ३,४–भये
१।७३।६ **बेलपाति** महि परै सुखाई। ...	१,२,३,४,५–बेलपाति; ७–बेलपात; ६, ८–बेलवाती
१।७४।४ मिलिहि **जबहिँ अब** सप्त रिषीसा।...	१,२,३–जबहिँ अब; ४,५,६,७,८–मिलहि तुम्हहि जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110748

१।७५ चिदानंद सुखधाम सिव, बिगत मोह मद काम। ... १,३,४,५,७,८–काम; २,६–मान

१।७६।३ मातु पिता प्रभु गुर कै बानी। ... १,२,३–प्रभु गुरु; ४,५,६,७,८–गुरु प्रभु

१।७७ गिरिहि जाइ पठएहु भवन। ... १,२,३–जाइ पठएहु; ४,५,७–प्रेरि पठवहु; ६,८–प्रेरि पठएहु

१।७७।३ हम सन सत्य मरस सब कहहू। ... १,२,३,७–सब; ४,५,८–किन; ६–की न

१।७७।५ कहत मरम मन अति सकुचाई। ... १,२,३,४,५,७–मरम; ६,८–बचन

१।७७।७ नारद कहा सत्य हम जाना। ... १,२,३,४,५–सत्य हम; ७–सत्त सोइ; ६,८–सत्य सोइ

१।७७।८ चाहिअ सिवहि सदा भरतारा। ... १,२,३,७–सिवहि सदा; ४,५,६,८–सदा सिवहि

१।७९।४ सुनत बचन कह बिहँसि भवानी। १,१,३,४,५–बचन कह बिहसि; ६,७,८–बिहसि कह बचन

१।८०।२ अब मैं जनम संभु सैं हारा। ... १,२,३,४–सैं; ५–से; ६,७,८–हित

१।८०।५ जनम कोटि लगि रगरि हमारी। ... १,२,३,४,५,७,८–रगरि; ६–रार

१।८१।६ तेहि सब लोक लोकपति जीते। ... १,२,३,४,५,८–तेहिं; ६–तेइ; ७–ते

१।८१।६ भए देव सुख संपति रीते। ... १,२,३,४,५,७,८–सुख; ६–सब

१।८१।८ तब बिरंचि पहिँ जाइ पुकारे। ... १,२,३,४,५–पहिँ; ६,७,८–सन

१।८२।७ एहि बिधि भलेहि देव हित होई। ... १, २, ३, ४, ५, ७, ८–भलेहि; ६–भले

१।८२।८ अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अस हेतू। ... १,२, ३, ४, ५, ७–अस; ६,८–अति

१।८२।८ प्रगटेउ विषम बान झष केतू। ... १, २, ३, ४, ५,७,८–बान झष; ६–बारिचर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।८३।२ परहित लागि तजै **जे** देही। ... १,२,३,४,५,६–जे; ७,८– जो

१।८३।३ सुमन धनुष कर **लेत** सहाई। ... १, २,३,४,५–लेत; ६, ७,८–सहित

१।८४।८ **सिद्ध** बिरक्त महामुनि जोगी। ... १, २, ३, ४, ५, ७, ८–सिद्ध; ६–सदा

१।८५ अबला बिलोकहिँ पुरुषमय जग, पुरुष **सब** अबलामय। १,२,३,४,५,७,८–सब; ६–मय

१।८५।६ कुसुमित नव तरु **सखा** बिराजा। १, ३, ४, ५–सखा; ६,८–राज; २,७–जाति

१।८५।७ परम सुभग **सब** दिसा बिभागा। ... १,२,३,४,५,७,८–सब; ६–दस

१।८६।१ देखि **रसाल** बिटप बर साखा। ... १, २, ३, ४, ५, ७, ८–रसाल ६–बिसाल

१।८६।३ छाड़े बिषम **बिसिष** उर लागे। ... १, २, ३, ४, ५, ७–बिसिष; ६,८–बान

१।८७।४ देवन्ह समाचार **सब** पाए। ... १, २, ३, ४, ५, ७,८,–सब; ६–यह

१।८८।५ सुनि बिधि **बिनय** समुझि प्रभु बानी। ...१,२,३,४,५,७,८–बिनय; ६–बचन

१।८८।७ तुरतहिँ **बिधि** गिरि भवन पठाए।... १, २,३, ४, ५, ७,८–बिधि; ६–हिमि

१।८९ कहा हमार न सुनेहु तब, नारद **के** उपदेस। ... १,२,३,४,५,७–के; ६–कर; ८–सुनहु...के

१।९०।६ जाइ बिधिहि **तिन्ह दीन्हि सो** पाती। १,२,३,४,५,७, ८–तिन्ह दीन्ही; ६–दीन्ही सो

१।९०।७ लगन बाचि **बिधि** सबहि सुनाई। ... १, ३, ४, ५–बिधि; २–अस; ७,८–अज; ६–तेहि

१।९०।७ हरषे **मुनि सब** सुर समुदाई। ... १,२,३,४,५,८–मुनि सब; ७–मुनिवर; ६–सुनि सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।९१ होहिं सगुन मंगल **सुभद,** ... १,२,८–सुभद ; ३,४,५–सुभग ;
करहिं अपछ्रस गान । ... ६,७–सुखद

१।९१।५ कर त्रिसूल अरु **डमरु** बिराजा । ... १,२,३,४,५,७,८–डमरु; ६–डवरु

१।९३ तन षीन कोउ अति पीन पावन,
कोउ अपावन **गति** धरें । ... १,२,३,४,५,६,७,८–गति; (तनु)

१।९३।१ कौतुक बिबिध **होहिं** मग जाता । ... १,२,३,४,५,७,८–होहिं ; ६–होत

१।९३।५ **सहित समाज सहित** बर नारी ।... १, २, ३, ४, ५,८–सहित समाज सहित; ६–सहित समाज सोह; ७–सकल समाज सहित

१।९३।६ गए सकल **तुहिनाचल** गेहा । ... १,२,३,४,७–तुहिनाचल; ६,५, ८–तु हिमाचल; (आए सकल हिमाँचल)

१।९३।८ पुर सोभा अवलोकि **सुहाई** । ... १,२,३,४,५,७,८–सुहाई ; ६–न जाई

१।९४ जगदंबा जहँ···बरनि **कि जाइ** । ... १,२,३,४,५,७,८–कि जाइ; ६–न जाइ

१।९४ रिधि सिधि संपति सकल, १,३,५ में भा० का पाठ है; २,
सुख नित नूतन । ... ६,८–रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख; ४, ७–रिद्धि सिद्धि संपति सकल सुख

१।९४।१ नगर निकट बरात **सुनि** आई । ... १,२,३,४,५,७,८–सुनि; ६–जब

१।९४।२ करि बनाव **सजि** बाहन नाना । ... १,२,३,४,५,७–सजि; ६,८–सब

१।९४।७ कहिअ **काह** कहि **जाइ** न बाता । ... १,२,३,४,५,७,८–काह····जाइ ; ६–जात

१।९४।८ बरु बौराह **बरद** असवारा । ... १,२,३,४,५,६,७–बरद; ८–बसह

१।९५।४ **अबलन्ह** उर भय भएउ बिसेषा । ... १,२–अबलन्ह; ६,७–अबलन्हि; ३,४,५–अबलन

१।९६।१ नारद कर मैं **काह** बिगारा । ... १,२,४,५,६,७–काह; ३,८–कहा

१।९६।१ भवन मोर **जिन्ह** बसत उजारा । ... १,२,३,४,५,७,८–जिन्ह; ६–जेहि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।६६।६ सो न टरै जो रचै बिधाता। ... १,२,३,४,५,७,८–टरै; ६–मिटै

१।६६।८ तुम्ह सन मिटहिँ कि बिधि के अंका। १, २, ३, ४, ५, ८–के; ६–कर; ७–कै

१।६६।३ जाइ न बरनि बिरंचि बनावा। ... १,२,३,४,५,७,८–बिरंचि ; ६–बिचित्र

१।६६।७ जगदंबिका जानि भव भामा। ... १, २, ३, ४, ५, ७,८–भव भामा; ६–भव बामा

१।६६।८ जाइ न कोटिहु बदन बखानी। ... १,३,४,५,७,८–कोटिहु; २–कोटि बहु; ६–कोटिन

१।१००।४ जय जय जय संकर सुर करहीं। ... १,२,३,४,५,७,८–सुर; ६–जै जै संकर सुर सब करहीं।

१।१०१ नाथ उमा मम प्रान प्रिय, गृह किंकरी करेहु। ... १,२,३,४,५,७,८–प्रिय; ६–सम

१।१०१।४ बचन कहत भरे लोचन बारी। ... १, २, ३, ८–भरे; ५,६,७–भरि; ४–भर

१।१०१।७ परम प्रेम कछु जाइ न बरना। ... १,२,३,४,५,७,८–प्रेम ; ६–सो स`म मोहि जात न बरना

१।१०२ जननिहि बहुरि मिलि चलीं, ... १, २, ३, ४, ५, ७, ८–जननिहि; ६–जननी

फिरि फिरि बिलोकति मातु तन, जब सखी लै सिव पहिं गईं। ... १,२,३,४,५,७–जब; ६,८–तब

जाचक सकल संतोषि संकर, उमा सहित भवनहि चले।... १,२,४,७–भवनहिं; ३, ५, ६–भवन; ८–भवने

१।१०२।७ जब जनमेउ षटबदन कुमारा। ... १,२–जब; ४,५,७–तब जनमे ; ३, ६, ८–तब जनमेउ

१।१०३ यह उमा संभु बिवाह जे नर, नारि कहहिँ जे गावहीं। ... १,२,३,४,६,८–कहहिं ; ५,७–सुनहिं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।१०३।२	**नयनन्हि** नीर रोमावलि ठाढ़ी । ...	१,२,३,८–नयनन्हि; ४,५,६,७–नयन
१।१०३।८	पुनि करि रघुपति भगति **देखाई** । ...	१, २, ३, ४, ५, ६,७,८–देखाई; (दृढ़ाई)
१।१०६।५	पति हिय हेतु अधिक **मनमानी** । ...	१,२–मनमानी; ३,५–मनमाहीं; ४,६,७,८–अनुमानी
	बिहँसि उमा बोली **मृदु बानी** । ...	१, २, ७–मृदु बानी; ३,५–हर पाहीं; ४,६,८–प्रिय बानी
१।१०६।१	जदपि जोषिता **अन** अधिकारी । ...	१,२,३,४,५,७–अन; ६,८–नहिं
१।११०।६	प्रश्न उमा **कै** सहज सुहाई । ...	१–कै; २, ६, ८– कै; ४, ३, ५, ७–कर
१।१११।६	तुम्ह समान नहिँ कोउ **उपकारी** ।...	१,२,६,७,८–उपकारी; ३,४,५–अधिकारी
१।११२	राम कृपा ते **हिमसुता**, सपनेहु तव मन माहिँ । ...	१,३,४,५–हिम सुता ; २,६,७, ८–पारबति
१।११४।३	**जिन्हहिं** न सूझ लाभु नहिं हानी ।	१,२,३,४,५,७ जिन्हहि न ; ६, ८–जिन्ह के
१।११८।२	रघुबर **सब** उर अंतर जामी । ...	१,३,४,५,७,८–सब; २,६–बस
१।११६।३	सुखी **भइउँ** प्रभु चरन प्रसादा । ...	१,२,४,५,७–भइउँ; ३–भइउ अब; ६,८–भएउँ
१।१२०।१	सुनु गिरिजा हरि चरित **सुहाए** । ...	१, २, ६, ७, ८–सुहाए; ३,४,५–सुहावा
१।१२२।१	तीनि जनम द्विज बचन **प्रमाना** । ...	१,३,४,५, ७–प्रमाना; २,६,८–प्रवाना
१।१२३।१	तासु साप हरि **कीन्ह** प्रवाना । ...	१,३,४,५,७–कीन्ह; २,६,८–दीन्ह
१।१२३।६	नारद बिष्नु भगत **पुनि** ज्ञानी । ...	१, २,३,४,५,८–पुनि; ६–मुनि; ७–पुनि जानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।१२५।३	काम कृसानु **जगावनि** हारी। ...	१, २–जगावनि; ३,४,५,६,७,८–बढ़ावनि
१।१२६	गहेसि जाइ मुनि चरन, **कहि सुठि आरत मृदु बैन**।	१, २, ३, ४, ५,६,७–कहि सुठि आरत मृदु बैन; ८–चरन तब कहि सुठि आरत बयन
१।१२६।८	तिमि जनि हरिहि **सुनायहु** कबहूँ। ···	१,७–सुनायहु; ३, ४, ५–सुनाएहु; २,६,८–सुनावहु
१।१२७।५	हरषि **मिले** उठि रमा निकेता। ...	१, २, ७–मिले; ६, ८–मिलेउ; ३,४,५–उठे प्रभु कृपा
१।१२८।८	सुनहु कठिन करनी **ते** केरी। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–तेहि
१।१२६।४	श्री बिमोह **जिसु** रूपु निहारी। ...	१, २, ३, ६,८–जिसु; ४,५,७–जेहि
१।१२६।७	पुरबासिन्ह **सब** पूछत भयऊ। ...	१,२,३,४,५,६,८–सब; ७–सन
१।१३०।८	जप तप कछु न होइ **तेहि** काला। ...	१, २, ४, ५, ६,७,८–तेहि; ३–येहि
१।१३०।८	**है** बिधि मिलै कवन बिधि बाला। ...	१, २, ६, ८–हैं; ३,४,५,७–हे
१।१३३।३	करहिँ **कूटि** नारदहि सुनाई। ...	१,२,३,४,६,८–कूटि; ५,७–कूट
१।१३४।२	पुनि पुनि मुनि **उकसहिं** अकुलाहीँ।...	१,२,३,४,५, ६, ७, ८–उकसहिं; (उसकहिँ)
१।१३४।४	दुलहिनि **लै गये** लच्छि निवासा।	१,४–लै गये; ३,५–लै गै; ७,८–लै गे; ६–ले गे; २–ले गये
१।१३९।३	तब तब कथा मुनीसन्ह गाई। ...	१,२,३,४,५,६,८–तब तब कथा मुनीसन्ह गाई; ७–तब तब कथा बिचित्र सुहाई। परम पुनीत मुनीसन्ह गाई
१।१३६।३	परम पुनीत प्रबंध बनाई। ...	१, २, ६, ८–परम पुनीत प्रबंध बनाई; ३, ४, ५–परम बिचित्र प्रबंध बनाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।१४०।२ **जेहि** कारन अज अगुन अरूपा। ... १, २, ३, ४, ५, ६,७,८–जेहि; (केहि)

१।१४१।३ **ध्रुव** हरि भगत भएउ सुत जासू। ... १, ३, ४,–ध्रुव; २, ६, ८–ध्रुव; ५,७–ध्रुव हरि भक्त

१।१४१।८ प्रभु आयसु **बहु** बिधि प्रतिपाला। ... १,३,४,५–बहु; २,६,८–सब

१।१४२।१ बरबस राज सुतहि **नृप** दीन्हा। ... १,७–नृप; ३,४,५—पुनि; २,६, ८–तब

१।१४२।८ **संत** समाज नित सुनहिँ पुराना। ... १,३,५,६, ७, ८–सत; २,४ संत

१।१४३।५ **निजानंद** निरुपाधि अनूपा। ... १, २, ३, ५, ७, ८–निजानंद; ४, ६–चिदानंद

१।१४४।१ ठाढ़े रहे एक **पद** दोऊ। ... १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–पद; (पग)

१।१४४।६ मागु मागु **धुनि** भै नभ बानी। ... १, २,३, ४,५–माँगु माँगु धुनि; ७–बर भइ; ६,८–बरु भै

१।१४८।१ धरि धीरजु **बोले** मृदु बानी। ... १, ३, ४, ५, ६,७–बोले; २,८–बोलीं

१।१४९।५ जदपि **भगत हित** तुम्हहि सुहाई। ... १,३,४,५,७–भगत; २–भगति; ६,८–भगति ... सोहाई

१।१४६।७ कहा जो प्रभु **प्रवान** पुनि सोई। ... १, २, ३, ४, ६, ८–प्रवान; ५–प्रमान

१।१५०।१ सुनि मृदु गूढ़ रुचिर **बच** रचना।... १, २, ६–बच; ३, ४, ५, ८,७–बर

१।१५०।६ मम जीवन **मिति** तुम्हहि अधीना।... १, २, ३, ६,८,मिति; ४,५,७–तिमि

१।१५१।६ **आपुनु** आवै ताहि पहि, ताहि ताहाँ लै जाइ। ... १, २,६–आपुनु; ७,८–आपु न; ३,४,५, ताहि ले

१।१६१।६ तब बोला तापस **बग ध्यानी**। ... १,२,३,६, ८–बग ध्यानी; ४,५, ७–बक ध्यानी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।१६३ मोहि तोहि पर अति प्रीति, सोइ चतुरता **बिचारि** तव।...	१,२,३,४,५,६,८–बिचारि, ७–देखि
१।१६४।४ **चलै** न ब्रह्मकुल **सन** बरिआई। ...	१,२–चलै न...सन; ३,४,५,६,७,८–चल न
१।१६७।३ मन **क्रम** बचन भगत तैं मेरा। ...	१,२,३,४,५–क्रम; ६,८–तन
१।१६७।४ जोग जुगुति **जप** मंत्र प्रभाऊ। ...	१,२,३,४,५–जप; ६,७,८–तप
१।१७४।२ **बिरचत** हंस काग किअ जेही। ...	१,२,३,४,५,७–बिरचत; ६,८–बिचरत
१।१७५।८ बरनि न **जाहिं** बिस्व परितापी। ...	१,३,४,५–जाहिं; २,६,७,८–जाइ
१।१७८।८ एक बार कुबेर **पर** धावा। ...	१,२,३,७,८–पर; ६–कहु; ४,५–बेर···पर
१।१८१।५ गर्जत गर्भ **स्रवत** सुर रवनी। ...	१,२,३,४,५–स्रवत; ६,७,८–श्रवहिं
१।१८१।८ देइ देवतन्ह गारि **पचारी**। ...	१,२,८–पचारी; ३,४,५,६,७–प्रचारी
१।१८२ **मंडलीकमनि** रावन राज, ...	१,२,३,४,५,६,७,८–मंडलीकमनि; (मंडलीकपति)
१।१८२।१ सो सब जनु **पहिलेहि** करि रहेऊ।...	१,२,४,५,७,८–पहिलेहि; ३,६–पहिले
१।१८२।७ **देव** बिप्र गुरु मान न कोई। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–देव; (वेद)
१।१८२।८ नहि हरि भगति **जज्ञ तप ग्याना**।	१,२,८–जज्ञ तप ग्याना; ३,४,५,६–जज्ञ जप ज्ञाना; ७–जोग जप दाना; (जज्ञ जप दाना)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।१८३।३ ते जानेहु निसिचर **सम** प्रानी। ...	१, ३, ४, ५, ७–सम ; २, ६, ८–सब
१।१८३।४ अतिसय देखि धर्म कै **हानी**। ...	१,२,४,५,७–हानी ; ३, ६, ८–ग्लानी
१।१८४ सुर मुनि गंधर्बा…**लोका**…**सोका**।	१,३,४,५,७,८–लोका, सोका ; २,६–लोक…सोक
१।१८४।२ कोउ कह पयनिधि **बस प्रभु** सोई।...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८–बस प्रभु; ६–मन बस
१।१८४।७ प्रेम ते प्रभु **प्रगटै** जिमि आगी। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ८–प्रगटै ; ७–प्रगटे
१।१८६ जय जय; भगवंता; प्रियकंता; मुकुंदा; मुनिबृंदा; सच्चिदानंदा; बरूथा; जूथा।	१,३,४,५,७,८ में भा० का पाठ है; २,६–भगवंत; प्रियकंत; मुकुंद; मुनिबृंद; सच्चिदानंद, बरूथ; जूथ;
जो भव भयभंजन मुनि मन रंजन, **गंजन** बिपति बरूथा। ...	१,२,३,४,५–गंजन ; ७–खंजन; ६, ८–खंडन।
१।१८६।८ तुरत **फिरे** सुर हृदय जुड़ाना। ...	१, ६–फिरेउ; २, ३, ४, ५, ७, ८–फिरे
१।१८७ बानर तनु धरि **धरि महि** हरि पद,	१, २, ३–धरि महि; ५, ६,७–धरि धरनि; ४,८–धरनि महँ
१।१८७।५ गिरि कानन जहँ तहँ **महि** पूरी।	१,३,४,५–महि; २,६,७,८–भरि
१।१८७।५ **रहे** निज निज अनीक **रुचि रूरी**। ...	२, ६, ५–रुचि रूरी; ३, ४, ७, ८–रचि
१।१८८।३ निज दुख सुख सब **गुरहि** सुनाएउ।	१,२,३,४,७–सब गुरहि; ५, ६, ८–सब गुरुहिं
१।१९३।२ ब्रह्मानंद मगन सब **लोई**। ...	१,२,६,८–लोई; ४,५,७–कोई ; ३–नर लोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।१९४ गृह गृह बाज बधाव सुभ, प्रगटेउ **प्रभु सुखकंद**। ...	१,२,७–प्रभु सुखकंद; ३४५–प्रभु प्रगटे सुखकंद; ६, ८–प्रगटेउ सुखमाकंद
१।१९५।५ बीथिन्ह फिरहिँ **मगन मन** भूले। ...	१,२,५,८–मगन मन; ३, ४, ६, ७–सकल रस
१।१९५।६ यह **सुभ** चरित जान पै सोई। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–सुभ
१।२००।४ भोजन करत **देखि** सुत जाई। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ८–देखि; ७–देखि; (दीख)
१।२०२।३ चूड़ा **करन** कीन्ह गुर जाई। ...	१,२,३,४,५,६,७–करन;७–करम
१।२०३ **भाजि** चले **किलकत** मुख, दधि ओदन लपटाइ। ..	१, २, ६. ८–भाजि ··· किलकत; ५,७–भागि ··· किलकात; ३,४–भागि चले किलकत
२।२०५।७ **एहू मिस देखौं** पद जाई। ...	१, २, ३, ६, ८–एहू मिस देखौं; ४, ५–एहि मिस मैं देखौं ; ७–यहि मिस देखौं प्रभु पद
१।२०६ करि मज्जन **सरजू** जल, गए भूप दरबार। ...	१, ३, ४, ५, ६–सरजू , २, ८–सरऊ; ७–सरयू
१।२०७ धर्म सुजस प्रभु **तुम्ह कौं इन्ह कहँ**; अति कल्यान।	१,३,६–तुम्हकौं इन्ह कहँ; ४,५, ७–तुम्ह कहँ इन्ह कहँ; २, ८–तुम्ह कौं इन्ह कहँ
१।२०७।५ सब सुत **प्रिय मोहि** प्रान कि नाईं।	१, ३, ४, ५–प्रिय मोहिं; २,६, ८–प्रिय प्रान की; ७–मोहिं प्रिय प्रान
१।२०८।१ नील **जलज** तनु स्याम तमाला। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७,८–जलज; (जलद)
१।२०८।४ मोहि **निति** पिता तजेउ भगवाना।...	१, २, ३, ५, ६,८–निति; ४,७–हित; (लगि)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।२०९।५	पावक सर सुबाहु पुनि **जारा** । ...	१, २, ३, ४, ५,७–जारा ; ६, ८–मारा
१।२०९।१०	धनुष जज्ञ **सुनि** रघुकुल नाथा । ...	१, ३, ४, ५, ७, ८–सुनि; २–कह; ६–करि
१।२११	तुलसिदास सठ **तेहि** भजु, छाड़ि कपट जंजाल । ...	१,२,३,६,८–तेहि; ४,५,७–ताहि
१।२१२।२	मनिमय **जनु बिधि** स्वकर सँवारी ।	१,२,७–जनु बिधि ; ३,४,५,६, ८–बिधि जनु
१।२१६	मख राखेउ सबु साखि जगु, **जिते** असुर संग्राम । ...	१, २, ३, ४, ५,६,८–जिते; ७–जीति
१।२२०।१	जों न मोह **यहु** रूपु निहारी । ...	१, २, ७–यहु; ३, ४, ५–यह ; ६, ८–येह
१।२२५।५	गुरु पद **पदुम** पलोटत प्रीते । ...	१,३,४,५,७–पदुम; २, ६, ८–कमल
१।२२८।१	देखन बाग कुँअर **दुइ** आए । ...	१, २, ६, ८ दुइ; ३, ४,५,७–दोउ
१।२२८।४	एक कहइ नृप सुत **तेइ** आली । ...	१, २, ३, ४, ५, ६,८–तेइ; ७–सोइ
१।२३०।४	फरकहिँ **सुभद** अंग सुनु भ्राता । ...	१, २, ८–सुभद; ३, ४,५,६,७–सुभग
१।२३०।५	मन कुपंथ पगु धरैं न काऊ । ...	१,२,६,७,८ में भा० का पाठ है; ३, ४, ५–भूलि न देहिं कुमारग पाऊ
१।२३०।७	नहिँ **पावहिँ** परतिय मनु डीठी ।...	१,२,३,५,६,८–पावहिँ ; ४,७–लावहिं
१।२३१।१	कहँ गए नृप किसोर मन **चिंता** । ...	१, २, ३, ४,५,६,८–चिंता; ७–चीता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।२३२।१ नील पीत **जलजात** सरीरा। ... १,२,३,४,५–जलजात; ६,८,७–जलजाभ

१।२३२।२ **मोर पंख** सिर सोहत नीके। ... १,२,३,५,६,८–मोर पंख; ४,७–काकपच्छ

१।२३२।२ **गुछ** बीच बिच कुसुमकली के। ... १,२,६,८–गुछ;३,४,५,७–गुच्छे; (गुच्छ)

१।२३३ देषि भानुकुल भूषनहि,
बिसरा **सखिन्ह** अपान। ... १, २, ३, ४, ५, ७,८–सखिन्ह; ६–सबै

१।२३३।१ धरि धीरजु एक **आलि** सयानी। ... १, २, ३, ४, ५, ७, ८–आलि; ६–अली

१।२३३।५ **भयेउ** गहरु सब कहहिं सभीता। ... १,३,४,५–भयेउ; २,६,८–भये; ७–भयउ

१।२३३।६ पुनि आउब **एहि बेरिआँ** काली। ... १,२,३,८–ऐहि बेरिआँ; ४,५–बिरिआ; ६, ७–यहि बरिया; (यहि बिरिया)

१।२३३।८ **फिरी** अपनपउ पितु बस जाने। ... १,२,३,८–फिरी अपनपउ; ४, ५ ७–फिरी अपनपौ; ६–फिरि आपनपौ

१।२३४।२ सुख सनेह सोभा **गुन** खानी। ... १,२,७,८–गुन; ३,४,५,६–कै

१।२३४।३ चारु **चित्र भीतर** लिखि लीन्ही। ... १,२,८–चित्त भीती; ६–विचित्र भीति; ३, ४,५,७–चित्र भीतर

१।२३४।७ नहिं तव आदि **अंत** अवसारा। ... १,२,३,६८–अंत; ४,५,७–मध्य

१।२३५ पति देवता **सुतीय** महुँ,
मातु प्रथम तव रेख। ... १,२,३,४,५,७,८–सुतीय; ६–सो तीय

१।२३५।१ **बरदायनी** पुरारि पियारी। ... १, २–बरदायनी पुरारि; ३ बरदाइनी पुरारि; ६–बरदाइनि त्रिपुरारि ४, ५, ७–वरदायिनि पुरारि; ८–बरदायनी पुरारि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।२३५।४	अस कहि चरन गहे वैदेही। ...	१,२,३,४,५,८–गहे; ६, ७–गही
१।२३५।६	सादर सिय प्रसादु सिर धरेऊ। ...	१,२,३,४,५,७,८–सिर, ६–उर
१।२३५।६	बोली गौरि हरषु हिय भरेऊ।	१,२,३,४, ५, ६,७–भरेउ; ८–भयेऊ
१।२३६	मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरु, सहज सुंदरु साँवरो, रावरो।	१, २, ३, ४, ५, ६, ७–साँवरो, रावरो; ८–साँवरे, रावरे
१।२३६।७	सिय मुख सरिस देखि सुखु पावा।	१,२,३,४,५,७,८–सुखु पावा; ६–मन भावा
१।२३७।७	पंकज कोक लोक सुख दाता।	१,२,३,४,५,७,८–कोक लोक; ६–लोक कोक
१।२३८	जिमि तुम्हार आगमनु सुनि, भए नृपति बलहीन। ...	१,२,३,४,५,७,८–जिमि…आगवन; ६–तिमि
१।२३९।६	बाल जुवान जरठ नर नारी। ...	१,२,३,४,५,७,८–बाल जुवान; (बालक जुवा) [यह पंक्ति काशिराज में नहीं है]
१।२४०	उत्तम मध्यम नीच लघु, निज निज थल अनुहारि। ...	१,२,३,४,५,७,८–थल; ६–सब
१।२४०।५	देखहिँ भूप महारन धीरा। ...	१,२,३,४,५,६,७–भूप; ८–रूप
१।२४१।३	सिसु सम प्रीति न जाति बखानी। ...	१, २, ८–जाति; ३, ४, ५, ६, ७–जाइ
१।२४१।६	रामहि चितव भाय जेहि सीया। ...	१, २, ३, ५, ८–भाय; ४,६,७–भाव
१।२४१।६	सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया। ...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८–सुखु; ६–मुख
१।२४१।८	एहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ। ...	१,२,८–येहि; ७–यहि; ३,४,५, ६–जेहि
१।२४२।३	चितवनि चारु मार मनु हरनी। ...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८–मनु; ६–मद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।२४३।३ एकटक लोचन **चलत न तारे।**	...	१, २, ३, ८–चलत न तारे; ६, ७–टरत न टारे; ४–चलत न टारे; ५–टरै न टारे
१।२४४ मुनि समेत दोउ बंधु **तहँ** बैठारे महिपाल।	...	१,२,३,४,५,७,८–तहँ, ६–वर
१।२४४।३ बिनु भंजेहु **भव धनुष** बिसाला।	...	१,२,३,४,५,७,८–भव धनुष; ६–शिव धनुक
१।२४४।३ मेलिहि सीय राम **उरमाला।**	...	१, २, ३, ४, ५,७,८–उरमाला; ६–जयमाला
१।२४४।८ यह सुनि **अवर महिप** मुसुकाने।	..	१, २, ८–अवर महिप; ६, ७–अपर भूप; ३,४,५–अपर महिप
१।२४५।१ **व्यर्थ** मरहु जनि गाल बजाई।	...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८–व्यर्थ; ६–वृथा
१।२४५।१ मन मोदकन्हि कि भूष **बताई।**	...	१,२,३,५,६,८–बताई; ४, ७–बुताई
१।२४६।३ **सिय बरनिय** तेइ उपमा देई।	...	१,२,३,४,५,७,८–सिय बरनिय तेइ; ६–सीय बरनि तेहि
१।२४६।४ जौं पटतरिअ तीय **सम** सीया।	...	१, २, ३, ४, ५, ७,८–सम; ६–महँ
१।२४७।३ भूषन सकल **सुदेस** सुहाए।	...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८–सुदेस; ६–अनूप
१।२४८ **लागि** बिलोकन सखिन्ह तन, रघुबीरहि उर आनि।	...	१,२,३,४,५,८–लागि; ६, ७–लगी
१।२४८।१ राम रूप अरु सिय छवि **देखेँ**...। निमेखेँ।		१,२,३,४,५,७,८–देखें...निमेखे; ६–देखी...निमेखी
१।२४९।७ तमकि **ताकि** तकि सिव धनु धरहीं।		१,२,३,४,५,८–ताकि; ६, ७–तमकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।२५० तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप, उठै न चलहिं लजाई।	१,२,५,६–उठै ; ३,४,७–उठइ; ८–उठे
१।२५०।५ श्रीहत भए हारि **हिय** राजा। ...	१,३,४,५,७,८–हिय; २–हियँ; ६–सब
१।२५१।२ तिल भरि भूमि न **सके छुड़ाई**। ...	१,२,८–सके छुड़ाई; ३, ४, ५–सकेउ छुड़ाई ; ६–उठाई ; ७–सकै छुड़ाई
१।२५२।५ सकौं मेरु मूलक **जिमि** तोरी। ...	१, २, ७, ८–जिमि; ३, ४, ५, ६–इव
१।२५२।६ तौ प्रताप महिमा **भगवाना**, **को** बापुरो। ...	१–तौ''' भगवाना, को; २, ३, ४, ५, ७, ८–तव...भगवाना, का ; २–को ; ६–तव...बलवाना, का
१।२५३ जौ न करौं प्रभु पद सपथ, कर न धरौं धनु **भाथ**।	१, २, ३, ४, ५, ६,७,८–भाथ; (पुनि न धरौ धनु हाथ)
१।२५३।१ लषन सकोप बचन **जब** बोले। ...	१,२,३,४,५,६,७-जब ; ८–जे
१।२५३।८ ठाढ़ भए उठि सहज **सुभाएँ**। ...	१,२,३,४,५,८–सुभाएँ; ६, ७–सुहाए
१।२५४।७ बंदि पितर **सुर** सुकृत सँभारे। ...	१,२,३,४,५,७,८–सुर; ६–सब
१।२५५।२ कोउ न बुझाइ कहै **नृप** पाहीं। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७–नृप ; ८ गुरु
१।२५५।५ सखि बिधि गति **कछु जाति न** जानी।	१,२,७,८–कछु जाति न; ३,४, ५–कछु जाइ न; ६–कहि
१।२५६।३ मिटा बिषादु **बढ़ी अति** प्रीती। ...	१,२,७,८–बढ़ी अति ; ६–भइ अति; ३,४,५–भई मन
१।२५६।७ आजु लगें **कीन्हेउ तुअ** सेवा। ...	१,२–लगें कीन्हेउ तुअ; ३,५, ७, ८–कीन्हिउँ तुव; ६–कीन्हेउ तव; ४–कीन्हिउ तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।२५७।३ सचिव **सभय** सिख देइ न कोई। ...	१, २, ३, ४,५,७,८–सभय;६–सबय
१।२५७।६ सकल सभा **कै** मति भै भोरी। ...	१,२,३,४,५,६,७–कै; ८–के
१।२५७।८ लव निमेष जुग **सय** सम जाहीं। ...	१, २, ६, ८–सय ; ३, ४, ५, ७–सत
१।२५८ प्रभुहि **चितइ पुनि चितव** महि, राजत लोचन लोल।	१,२,७,८–चितइ पुनि चितव ३,४,५–चितव पुनि चितव; ६–चितै पुनि चितै
१।२५८ खेलत मनसिज मीन जुग, जनु **बिधु** मंडल डोल। ...	१,२,३,४,५, ६, ७, ८–बिधु... डोल ; (बिध)
१।२५८।४ तन मन बचन मोर **पनु** साचा। ...	१, २, ३, ५, ७, ८–पनु; ४–पन; ६–मन
१।२५८।४ रघुपति पद सरोज **चितु** राचा। ...	१,२,३,८–चितु; ४,५,६,७–मन
१।२५८।७ प्रभु तन चितै प्रेम **पनु** ठाना। ...	१,३,७–पनु; २, ४, ५, ६–पन; (८) तन
१।२५८।८ चितव **गरुरु** लघु ब्यालहि जैसें। ...	१,२,३,८–गरुरु; ४, ५, ६, ७–गरुड
१।२५९।६ राम बाहु बल **सिंधु** अपारू। ...	१,२,३,४,५,७,८–सिंधु; ६–राम सिंधु घन बांह अपारू
१।२६०।१ देखी **बिपुल बिकल** बैदेही। ...	१, २, ६, ७, ८–बिपुल बिकल; ३,४,५–बिकल अतिहि
१।२६०।३ का बरषा **सब** कृषी सुखाने। ...	१, २, ३, ४, ८–सब ; ५, ६, ७–जब
१।२६०।६ पुनि **नभ धनु** मंडल सम भयऊ। ...	१,२,३,८–नभ धनु; ४,५,६,७–धनु नभ
१।२६०।८ तेहि छनु राम **मध्य धनु** तोरा। ...	१, २, ४,५,६,७,८–मध्य धनु ; (छन मध्य)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।२६१ कोदंड **खंडेउ** राम तुलसी जयति बचन उचारहीं। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–खंडेउ; (भंजेउ)
१।२६१ **बूड़** सो सकल समाज, **चढ़ा** जो प्रथमहि मोह बस।	१, २, ८–बूड़ ... चढ़ा; ५, ७–बूड़े ... चढ़े; ६–बूड़ ... चढ़े; ३, ४–बूड़ा ... चढ़ा
१।२६१।८ मुदित कहहिँ जहँ तहँ **नर** नारी। ...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८–नर; ६–सब
१।२६२।१ मेरि ढोल **दुंदुभी सुहाई**। ...	१, २, ३, ४, ५, ८–दुंदुभी सुहाई; (दुंदुभी सोहाई); ७–दुंदुभी बजाई; ६–डिंडिभी
१।२६२।३ सखिन्ह सहित हरषीं **अति** रानी।	१, २, ३, ४, ५–अति; ६, ७, ८–सब
१।२६२।८ सीता **गमनु** राम पहिं **कीन्ही**। ...	१, २, ३–गमनु, कीन्ही; ४, ५, ६, ७, ८–गमनु कीन्हा
१।२६३।२ विस्व विजय सोभा **जेहि** छाई। ...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८–जेहि; ६–जनु
१।२६४।१ खल भए मलिन साधु सब **राजे**। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–राजे; (गाजे)
१।२६४।३ नाचहिँ गावहिं **बिबुध** बधूटी। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–बिबुध; (बिबिध)
१।२६४।३ बार बार **कुसुमांजलि** छूटी। ...	१, २, ८–कुसुमांजलि; ३, ४, ५, ६, ७–कुसुमावलि
१।२६४।५ महि पाताल **ब्यौम** जस ब्यापा। ...	२, ३, ४, ५–ब्योम; २, ६, ७, ८–नाक
१।२६४।७ सोहति **सीय राम** कै जोरी। ...	१, २, ३, ४, ५, ७–सीय राम; ८–सोहत सीयराम; ६–राम सोअ
१।२६५।३ धरि **बाँधहु** नृप बालक दोऊ। ...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८–बाँधहु; ६–मारहु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।२६६	देखहु रामहिँ नयन भरि, तजि इरिषा मदु **कोहु** । ...	१,२,३,८–कोह ; ४,५,६,७–मोह
१।२६६।१	बैनतेय बलि जिमि चह **कागू**।...**भागू**	१,२,३,४,५,७,८–कागू, भागू ; ६–कागा ··भागा
१।२६६।३	**लोभु लोलुप** कल कीरति चहई ।	१,२,३–लोभ लोलुप; ४,५,६,७, ८–लोभी लोलुप
१।२६६।४	हरि पद विमुख **सुगति जिमि** चाहा ।	१,३,४,५–सुगति जिमि ; २,६–परा गति; ७, ८–परम गति
१।२६७	मनहुँ मत्त गज गन निरषि, सिंह **किसोरहि** चोप । ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७-किसोरहि; ८–किसोरहु
१।२६७।१	खरभरु देखि बिकल **पुर** नारीँ । ...	१,२,७,८–पुर; ३,४,५,६–नर
१।२६७।७	चारु जनेउ **माल** मृग छाला । ...	१, २, ६, ८–माल; ३, ४, ५–कटि
१।२६८	**सांत** बेष करनी कठिन, बरनि न जाइ सरूप । ...	१,२,३,४,५,८–सांत ; ७–संत ; ६–साधु
१।२६८।२	पितु समेत कहि **कहि** निज नामा ।...	१,२,३,४,५,७,८–कहि; ६–निज निज कहि
१।२६८।३	जेहि **सुभाय** चितवहिं हितु जानी ।...	१, २,३,४,५,७, ८–सुभाय; ६–सुभाव
१।२६८।३	सो जानै जनु **आइ** खुटानी । ...	१, २, ३, ५, ६,८–आइ; ४,७–आयु
१।२६८।६	बिस्वामित्र मिले **पुनि** आई । ...	१, २, ३,४,५, ७,८–पुनि; ६–तब
१।२६८।७	दीन्हि असीस देखि भल जोटा । ...	१,२,३,४,५,८–दीन्ह असीस...; ६,७–देखि असीस दीन्ह...
१।२६८।८	रामहि चितइ रहे **थकि** लोचन । ...	१,२,३,४,५,७,८–थकि; ६ भरि; (थक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।२६९	बहुरि बिलोकि बिदेह सन, कहहु **काह** अति भीर।	... १,२, ३, ४,५, ७,८-काह; ६-कहा
१।२६६।२	सुनत बचन **फिरि** अनत निहारे।	... १,२,३,४,५,८-फिरि; ६,७-तब
१।२६६।३	कहु जड़ जनक धनुष **केइँ** तोरा।	... १,३,४, ५,७-केइँ; २,८-कैं; ६-केहि
१।२६९।७	बिधि **अब सबरी** बात बिगारी।	... १,२,६-अब सवँरी; ३,४,५-सवँरि सब; ७,८-अब सबरी
१।२७०	सभय बिलोके लोग सब, जानि **जान**की भीरु।	... १,२,३-जानकी भीरु; ४,५,७,८-जानकी भीर; ६-जानि सीय अति भीर
१।२७०।५	सो बिलगाउ **बिहाइ** समाजा।	... १,२,३, ४,५,७,८-बिहाइ; ६-बिहाउ
१।२७१।२	देखा राम **नए के** भोरे।	... १,२-नए कें भोरें; ३,४,५-नये के; ६,७,८-नयन के
१।२७१।५	केवल मुनि **जड़ जानहि** मोही।	... १,२,३,४,७,८-जड़ जानहि; ५-जानेहि; ६-जाने
१।२७२	मातु पितहि जनि सोच बस, **करसि महीस** किसोर।	... १,२,८-करसि महीस; ३,४,५-करहिं महीप; ६,७ करसि महीप
१।२७२।४	मैं कछु **कहा** सहित अभिमाना।	... १,२, ३, ४,५,८-कहा; ६, ७-कहेउँ; (कहउँ)
१।२७२।५	**भृगुकुलु** समुझि जनेउ बिलोकी।	... १,२, ३, ४, ५, ६, ७-भृगुकुल; ८-भृगुसुत
१।२७३।२	निपट निरंकुस **अबुधु** असंकू।	... १,२,३,४,५,७,८-अबुध असंकू... ६-निठुर निसंकू
१।२७३।६	बार अनेक भाँति **बहु** बरनी।	... १,२,३, ४, ५, ७, ८-बहु; ६-तुम्ह
१।२७४	बिद्यमान रन पाइ रिपु, कायर **करहिँ प्रलापु**।	... १,२,३,४,५,६,७-करहिँ प्रलापु; ८-कथहिं प्रताप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।२७४।६ कर कुठार मैं **अकरन** कोही। ...	१, ३, ४, ५,६,७–अकरन; २–अकारुन; ⑧ खर...अकरुन
१।२७५ **गाधि सूनु** कह हृदय हसि, मुनिहि **हरिअरेइ** सूझ। ...	१,२–गाधि सूनु···हरिअरेइ; ६–गाधि सुवन हरिअरै; ३,४,५,७–गाधि सूनु...हरिअरइ ; ८–गाधि सूनु···हरियने
१।२७५ **अयमय खाँड न ऊखमय,** ...	१,२,३,५,६,७,८–अयमय खाँड; ४–अयमय खंड; (अजगव खंडेउ ऊख जिमि)
१।२७७ जेहि बस जन अनुचित करहिं, **होहिं** बिस्व प्रतिकूल। ...	१, ३, ४, ५–होहिं; ७–परहि; २, ८–चरहिं
१।२७८ सुनि लछिमन **बिहँसे बहुरि**, नयन तरेरे राम। ...	१,२,३,४,५,७,८–बिहँसे बहुरि; ६–बोले बिहँसि
१।२७८ गुरु समीप गवने **सकुचि**, परिहरि बानी बाम। ...	१,२,७,८–सकुचि; ३,४,५–बहुरि; ६–तुरत
१।२७८।६ मुनि नायक सोइ **करउँ** उपाई। ...	१,२,८–करौं; ३,४,५,७–करउँ; ६–करहु
१।२७९।३ आजु **दया** दुख दुसह सहावा। ...	३, ४, ५, ८–दया; १,२–दयां ६, ७–दैव
सुनि सौमित्रि **बिहसि** सिरु नावा। ...	१,२,३,४,५,८–बिहसि; ६, ७–बहुरि
१।२७६।५ जौं पै कृपाँ **जरहिं** मुनि गाता। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७,८–जरहिं; (जरिहि)
१।२७९।८ बिहँसे लषनु कहा **मन माहीं**। ...	१,२,३,४,५,८–मन माहीं; ६,७–मुनि पाहीं
१।२८०।५ **गुनहु** लषन कर हम पर रोषू। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७–गुनहु: ⑧ गुनह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।२८०।६ टेढ़ जानि **संका** सब काहू। ...	१,२,४,५,६–संका ; ७–बंदइ ; ८–सब बंदे काहू
१।२८०।७ राम कहेउ रिस **तजिअ** मुनीसा। ...	१,२,३–तजिअ ; ४,५–तजिय ; ६,७–तजहु ; (८) तजअ
१।२८१ वेष बिलोके कहेसि कछु, **बालकहूँ** नहि दोसु। ...	१,२,३,४,५,६,७–बालकहूँ ; ८–बालक
१।२८२ बोले भृगुपति सरुष **हँसि,** तहूँ बंधु सम बाम। ...	१,२,३,४,५,८–हँसि ; ६,७–होइ
१।२८२।४ **दीन्हे** समर जञ जग कोटिन्ह **कीन्हे**	१,२,३, ४, ५, ७–दीन्हे-कीन्हे ; ६–दीन्हा-कीन्हा ; ८–दीन्हे ; समर जग्य जप कोटिन्ह कीन्हे
१।२८४ जाना राम **प्रभाउ** तब, पुलक प्रफुल्लित गात। ...	१, २, ३, ४, ५, ६,७,८–प्रभाउ; ६–प्रताप
१।२८४ जोरि पानि बोले बचन, हृदय न प्रेमु **अमात**। ...	१,२,८–अमात ; ३,४,५,६,७–समात
१।२८४।५ करौं **काह** मुख एक प्रसंसा। ...	१, ३, ६,७, ८–काह; २,४,५–कहा
१।२८४।६ अनुचित **बहुत** कहेउँ अज्ञाता। ...	१,२,३,४,५,८–बहुत;६,७–वचन
१।२८४।७ भृगुपति गये **बनहि** तप हेतू। ...	१, २, ३,४,५,७,८–बनहि; ६–गएउ तपहि बन
१।२८४।८ अपभयँ **कुटिल** महीप डेराने। ...	१,२,३,४,५, ८–कुटिल; ६,७–सकल
१।२८५ हरषे पुर नर नारि सब, **मिटी** मोह मय सूल। ...	१, २, ३, ४, ५,८ मिटी; ६,७–मिटा
१।२८५।६ अब जो उचित सो **कहिअ** गोसाँई।	१, २, ३, ८–कहिअ; ४,५,७–कहिय ; ६–करहु
१।२८६।१ **आनहिँ** नृप दसरथहिं बोलाई। ...	१, २, ३, ४, ५, ७,८–आनहिं; ६–आनौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।२८६।४ हाट हाट मंदिर **सुरबासा**। ... १, २, ३, ४, ५, ७, ८–सुरबासा; ६–चहुँपासा

१।२८६।५ पुनि परिचारक **बोलि पठाए**। ... १,२,३,४,५,७,८–बोलि पठाए ; ६–निकर बोलाये

१।२८७।१ सरल **सपरव** परहिँ नहिँ चीन्हे।... १,२,३,५,८–सपरव ; ६–सपर्व ; ४,७–सपरन

१।२८८।७–तेहि लघु **लाग** भुवन दस चारी। ... १, २, ३, ४, ५, ६, ७–लाग ; ८ लगति

१।२८९ बसे नगर जेहि लछि करि,
कपट नारि वर **वेषु**। ... १,२,३,७,८– बेषु; ४,५–वेष ; ६–भेष

१।२८६।७ आए भरतु सहित **हित** भाई। ... १,२ ८–हित ; २,४,५,६–दोउ ; ७–लघु

१।२६१ राम लषन **जाके** तनय,
बिस्व बिभूषन दोउ। ... १,२,३,४,५,६–जाके ; ७, ८–जिन्ह के

१।२६१।३ तिन्ह कहँ कहिय नाथ **किमि** चीन्हे। १, २, ३, ४, ५, ७, ८–किमि ; ६–बिनु

१।२६१।७ सकइ उठाइ **सरासुर** मेरू। ... १,३,५–सरासुर ; २,४,६,७,८–सुरासुर

१।२६३।१ सुनि बोले **गुर** अति सुख पाई। ... १,२,३,५–गुर ; ४,७,८–गुरु ; ६–मुनि बोले

१।२९५।३ भुअन चारिदस **भरा** उछाहू। ... १,२,६,८–भरा; ७–भरेउ; ३,४, ५–भएउ

१।२६५।६ तदपि प्रीति कै **रीति** सुहाई। ... १,२,३,४,५६,७,८–रीति

१।२६६।२ बिधु बदनीँ मृग **सावक** लोचनि। १,३,४,५,७,८–सावक ; २, ६–बालक

१।२९७।४ रचि **रुचि** जीन तुरग तिन्ह साजे। १,२,३,५,६,८–रुचि ; ४,७–रचि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।२९७।५ **अय** इव जरत धरत पग धरनी। ... १,२,४,५,७,८–अय ; ६–हय ; (हुअ)

१।२९७।७ भरत सरिस **बब** राज कुमारा। ... १,२,३,६,७,८–बय ; ५–बए ; ४–सब

१।२९८।५ **सावकरन** अगनित हय होते। ... १,२,३,४,५,६,८–सावकरन; ५,७–स्यामकरन

१।३००।१ रथ रव बाजि **हिसँहि** चहुँ ओरा। १,२–हिसँहि; ६–हिंसहिं; ३,४,५,७,८–हिंस

१।३००।३ महा **भीर** भूपति केँ द्वारेँ। ... १,२,३,४,५,६,७–भीर ; ८–भीरु

१।३००।४ चढ़ी अटारिन्ह **देखहि** नारी। ... १,२,३,४,५,७,८–देखहिं ; ६–निरखहिं

१।३०१।७ घंट घंटि धुनि बरनि न **जाहीं**। ... १,२,३,४,५,७,८–जाहीं; ६–जाई

सरव करहिँ **पाइक** फहराहीं। ... १,२,६–सरौ; ३,४,५,७,८–सरव
१,२,३,८–पाइक ; ४,५,६,७–पायक ; (पाउक)

१।३०२।५ सुरभी सनमुख सिसुहि **बियावा**। ... १,२,३,४,५,६७,८–पिआवा

१।३०४।१ कनक कलस **कल कोपर** पारा। ... १,२,३,४,५–कल कोपर ; ६–कोपर भरि ; ८,७–भरि कोपर

१।३०४।२ भाँति भाँति नहिं जाहिँ बखाने। ... १,२,३,४,५,६,७–भाँति भाँति नहिं ; ८–नाना भाँति नहिँ

१।३०४।८ मुदित **बराती** हने निसाना। ... १,२,३,४,५–बराती ; ६,७,८–बरातिन्ह

१।३०७ **उठे** हरषि सुख सिंधु महुँ, १,२,३,४,५–उठे ; ६,७,८–उठेउ

१।३०७।६ **मनभावती** असीसैँ पाईं। ... १,२,३,४,५,७,८–मन भावती ; ६–मनभावते

१।३११।३ निज निज **गेह** गए महिपाला। ... १,२,३,४,५–गेह; ६,७,८–भवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।३११।८ कहहिँ जोतिषी **अपर** बिधाता। ... १,२,३,४,५–अपर ; ६,८–आहि ७–बिप्र

१।३१४।५ जनु तनु धरे करहि **सुर** सेवा। ... १,२,३,४,५–सुर; ६,७,८–सुख

१।३१४।७ मरकत कनक बरन **तनु** जोरी। ... १,३,४,५–तन; २,६,७,८–बर

१।३१५।२ **मंगल मय** सब भाँति सुहाए। ... १,२,३,४,५,७–मय; ८–सब

१।३१६ जगमगत जीन **जराव** जोति, ... १,२,३,४,५,८–जराव ; ६,७–
सुमेति मनि मानिक लगे। ... जड़ाव

१।३१६ प्रभु मनसहि लयलीन मन, १,२,३,४,६–चाल ; ५,७,८–
चलत **चाल** छबि पाव। ... बाजि

१।३१८ जो सुख भा सिय मातु **मन**, १,२,३,४,५,६,७,८–मन ; (पन)
देखि राम बर बेषु। ...

१।३१८।२ बेद बिहित अरु कुल **आचारू**। ... १,२,३,४,५,६–आचारू····व्यव-
व्यवहारू हारू ; ७–व्यवहारू···आचारू;
८–व्यवहारू व्यवहारू

१।३१८।३ पंच सबद **धुनि** मंगल गाना। ... –१,२,३,४,७,८–धुनि;५,६–सुनि

१।३२१।६ बिनु पहिचानि **प्रान** ते प्यारी। ... १,२,३,५,७–प्रान; ६,८–प्रानहु;
३,४–पहिचान प्रान

१।३२२ नव **सप्त** साजेँ सुंदरी सब, ... १,३,४,५,७,८–सप्त; २,६–सत्त
मत्त कुंजर गामिनी।

१।३२३ भरे कनक कोपर कलस सो, १,२,३,४,५,७,८–तब लिए; ६–
नव लिए परिचारक रहैँ।... तब लिएहि

१।३२४ करि मधुप मन मन जोगि जन, १,२,३,४,५,६,७,८–सेइ; (पाइ)
जे **सेइ** अभिमत गति लहैं। ...

१।३२४ बर कुँअरि करतल जोरि, १,२,३,४,६,८–साखोचारू ; ५–
साखोचारु दोउ कुलगुर करैँ। साखोचार ; ७–साखोचार

१।३२४।३ **जगमगाति** मनि खंभन्ह माहीं। ... १, २, ३, ४,५,७,८–जगमगाति ;
(जगमगात) यह अर्धाली काशी-
राज में नहीं है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।३२५ सो **जनक** दीन्ही ब्याहि लषनहिं, सकल विधि सनमानि कै। ...	१,२,३,४,५,७–जनक ; ६,८–तनय
१।३२६ ए दारिका परिचारिका करि, पालिबी करुना मई। ...	१,२,४,५,७–मई; २,६,८–नई
१।३२६ अपराधु छमिबो बोलि पठए, बहुत हैों ढीठ्यो **दई**। ...	१,२,३,४,५-दई ; ६,७,८–कई
१।३२७ निज पानि मनि महँ **देखि प्रति मूरति** सरूप निधान की।	१,२,३,४,५,७–देखि प्रति मूरति; ८–देखि यति मूरति ; ६–देखि पति मूरति
१।३२७।१ पठए जनक बोलाइ बराती। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–जनक
१।३२७।७ बोलि **सूपकारक** सब लीन्हे। ...	१, ३, ४–सूपकारक ; २,५,६, ७,८–सूपकारी
१।३२८।५ छरस रुचिर बिंजन बहु **जाती**। **भाँती**	१, २, ३, ४, ५, ६, ८–जाती··· भाँती; ७–भाँती···जाती
१।३३१।१ नृप सब **राति सराहत बीती**। ...	६,८–भाँति सराह बिभूती; १,२, ७–राति सराह बिभूती ; ३,४,५– राति सराहत बीती
१।३३२।१ **बूझत** बिकल परसपर बाता। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–बूझत; (पूछत)
१।३३२।५ पठए जनक अनेक **सुआरा**। ...	१,३,४,५,७–सुआरा ; २,६,८– पठई···सुसारा
१।३३५ रूप सिंधु सब बंधु लखि, हरषि **उठेउ** रनिवास। ...	१,२,३,४,५,७–उठेउ ; ६,८– उठी
१।३३५।५ बिदा होन **हम इहाँ** पठाए। ...	१,२,७–हम इहाँ ; ३,४,५,६,– हित हमहिँ
१।३३६ **तुलसी सुसील** सनेहु लखि, निज किंकरी करि मानिबी। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७;८–तुलसी सुसील; (तुलसीसु सील)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।३३६।३ राम बिदा **मागा** कर जोरी। ... १,२,३,४,५,६,७–मागा; ८–मागत

१।३३९।५ फिरिअ **महीस** दूरि बड़ि आए। ... १, २, ३, ४, ५,६,७,८–महीस; (महीप)

१।३४१ **सबुइ सुलभ** जगजीव कहँ, भएँ ईसु अनुकूल। ... १,२–सबुइ सुलभ; ३,४,५–सबइ सुलभ; ६,८–सबइ लाभ; ७–सबहिं सुलभ

१।३४१।२ **करहिं** कलप कोटिक भरि लेखा। ... १,२,३,४,५,७,८–करहिँ; ६–करिहि

१।३४१।८ बिनती **बहुत** भरत सन **कीन्ही**। दीन्ही ... १,३,४,५–बहुत…कीन्ही; ७–बहुत कीन्हा; २–बहु… कीन्ही; ६,८–बहुरि कीन्ही

१।३४२।५ सब **सिधि** तव दरसन अनुगामी।... १,२,३,६,८–सिधि; ५–सिद्धि; ४,७–बिधि

१।३४३।२ झाँझि **बीरि** डिंडिमी सुहाई। ... १–बीरि; ८–बिरव; ३,४,५–बीन; २,६,७–भेरि

१।३४४।३ तनु धरि धरि दसरथ गृह **छाए**। ... १,२–छाए; ३,४,५,६,७,८–आए

१।३४५।१ **मोद** प्रमोद बिबस सब माता। ... १,२,३,६,८–मोद; ४,५,७–प्रेम

१।३४५।५ **मंजुल मंजरि** तुलसि बिराजा। ... १,२,७–मंजुल मंजरि; ६,८–मंजुर मंजरि; ३,४,५–मंजुल मंगल

१।३४५।६ मदन **सकुन** जनु नीड बनाए। ... १,३,४,५,७–सकुन; २,६,८–सकुच

१।३४६।८ मूक बदन **जनु** सारद छाई। ... १,२,३,६,८–जनु; ४,५–जिमि; ७–जस

१।३५१।४ देत असीस **सकल** मन तोषे। ... १,२,३,५,८–सकल; ६,७–चले; ४–सकल परितोषे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।३५२।४ चैल चारु भूषन पहिराईं। ... १,२,६,८–चैल; ३,४,५,७–चीर

१।३५५।१ जटित कनक मनि पलँग डसाए। ... १,२,३–जटित; ४,५,७–जड़ित; ६,८–जरित

१।३५७।४ सुंदर बधू सासु लै सोई। ... १,२,३,४,५,६–सुंदर बधू ; ७–सुंदरि बधुन्ह ; ८–सुंदरि बधुन

१।३५७।६ बंदि मागधन्हि गुन गन गाए। ... १,२,६,८–बंदि मागधन्हि ; ३,४,५,७–बंदी मागध

१।३५८।८ रामलषन उर अतिहि उछाहू। ... १,२,३,४,५,६–अतिहि; ७,८–अधिक

१।३५९।१ सुदिन साधि कल कंकन छोरे। ... १,२,३,४,५–साधि ; ६,७,८–सोधि

१।३५६।३ राम सप्रेम बिनय बस रहहीं। ... १,२,३,४,५,७,८–सप्रेम ; ६–सनेह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयोध्या कांड

२।श्लो०।१	**वामांके** च विभाति भूधरसुता । ...	२,३,४,५,६,७–वामांके ; ८–यस्यांके
२।०।७	**फलित** बिलोकि मनोरथ बेली । ..	२,३,४,५,६,८–फलित ; ७–फुलित
२।१०।२	**आवहु** बेगि नयनु फल पावहिँ । ...	२,३,४,५,६,७,८–आवहु ; ५–आवहिँ
२।१०।६	बिधन **मनावहिँ** देव कुचाली । ...	३,४,५,७,८–मनावहिँ ; २,६–बनावहिँ
२।११।५	चली बिचारि **बिबुध** मति पोची । ...	३,४,५,७,८–बिबुध ; २,६,८–बिविध
२।१६।७	बिनु **जर** जारि करइ सोइ छारा । ...	३,६,७,८–जर ; २,४,५–जल
२।१६।७	दिन प्रति **देखउँ** राति कुसपने । ...	२,४,५,६–देखउँ ; ७–देखैां; ३,८–देखहुँ
२।२०।२	मरन नीक तेहि **जीवन चाही** । ...	२,३,४,५,६,७–जीवन चाही; ५,८–जीव न चाही ; (जिवन न चाही)
२।२१।१	कुबरीँ **करी कबुली** कैकेई । ...	२,३,४,५,६,७,८–करि कबुली (करी कुबली)
२।२१।८	बचन मोर **फुर** मानहु जीते । ...	३–फुर ; २,४,५,६,७,८–प्रिय
२।२४	गवनु निठुरता निकट **किय**, जनु धरि **देह** सनेह । ...	३,४,५,७–किय; २,६,(८)–किये
२।२६।५	ऐसिउ पीर बिहँसि **तेहिँ** गोई । ...	२,३,६,८–तेहिं ; ४,५–तेइ; ३–अैसिहु ; २–अैसिउ ; ७–तब
२।२६।६	कोटि कुटिल **मनि** गुरु पढ़ाई । ...	३,४,५,६,८–मनि ; २,७–मति
२।२७।३	दुइ कै चारि माँगि **मकु** लेहू । ...	३,६,७,८–मकु ; ४, ५–किन ; २–बरु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।२७।६ वेद पुरान बिदित मनु गाए। ... ३,७,८–मनु ; २,४,५,६–मुनि

२।२७।७ सुकृत सनेह अवधि रघुराई। ... २,३,४,५,६,७–अवधि ; (८) अवध

२।२७।८ बात दिढ़ाइ कुमति हँसि बोली। ... ३,४,५,७–दिढ़ाइ ; २, ६, ८–दृढ़ाइ

२।२७।८ कुमति कुबिहग कुलह जनु खोली। २,३,४,५,६–कुबिहग ; ७,८–कुबिहंग

२।२८।१ सुनहु प्रान प्रिय भावत जी का। ... २,३,४,५,७–सुनहु ; ६, (८) सुनहुँ

२।३०।५ भीर प्रतीत प्रीति करि हाती। ... २,६,७,८–भीर ; ३,४,५–भीरु

२।३१।५ अजहूँ हृदय जरत तेहि आँचा। ... २,३,४,५,६,७,८–तेहि ; (ते)

२।३२।६ मोहि न बहुत परपंच सुहाही। ... २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–प्रपंच

२।३३।५ लखी नरेस बात सब साची। ... २,३,४,५,६,७–सब ; ८–फुरि ; (फुर)

२।३५।१ चहत न भरत भूपतहि भोरे। ... २,३,६,८–भूपतहिं ; ४,५,७–भूप पद

२।३५।८ मारसि गाइ नहारू लागी। ... २,३,६,८–नहारू ; ७–नाहरू ; ४,५–नहारुहि

२।३६।६ पढ़हिँ भाट गुन गावहिँ गायक।... २, ३, ४,५, ६, ७, ८–पढ़हिँ ; (पठहि)

२।३७ जागेउ अजहुँ न अवधपति, कारनु कवनु बिसेषि। २,३,६,८–जागेउ ; ४,५,७–जागे

२।४१।४ तेउ न पाय अस समउ चुकाही ँ।... २, ४, ५, ७–पाइ अस ; ६, (८) पाइअ समय ; ३–पाय न समउ

२।४१।८ जाते मोहि न कहत कछु राऊ। ... ३–जाते ; २,६,८–जातें ; ४,५, ७–ताते

४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।४२ चलइ जोँक **जल** बक्र गति, जद्यपि सलिलु समान । ... २,३,४,६,७,८–जल; ५–जिमि

२।४६।७ सब बिधि **अगहु** अगाध दुराऊ । ... ८–अगहु ; ३,४,५,७–अगम ; २,६–अगमु

२।४७।८ राम भरत कहुँ **परम** पिआरे । ... २,६–परम ; ३,४,५,७,८–प्रान

२।४८ चंदु **चवइ** बरु अनल कन, सुधा होइ बिष तूल । ... २,३,५,६,८–चवइ ; ४,७–चुवइ

२।४६।१ सोक कलंक **कोठि** जनि होहू । ... ६,८–कोठि ; ३,४,५,७–कोटि ; २–कोपि

२।५०।८ **मिटा** सोचु जनि राखै राऊ । ... २,३,६,८–मिटा ; ४,५,७–इहै;

२।५१ नव गयंदु **रघुबीर मनु**, राजु अलान समान । ... २,३,४,६,८–रघुबीर मनु; ५,७–रघुबंस मनि

२।५२।८ जनि सनेह बस डरपसि **मोरे** । ... ३,५–मोरे; २,४,६,७,८–भोरे

२।५६।६ परम अभागिनि आपुहि **जानी** । ... २,३,४,५,८–जानी ; ७–मानी (यह अर्धाली काशिराज में नहीं है)

२।५९।५ **सुरसर** सुभग बनज बन चारी । ... २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–सुरसर ; (सुरसरि)

२।६०।८ कहौं **सुभाव** सपथ सत मोही । ... २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–सुभाय ; (सुभाव)

२।६१।१ मैं पुनि करि **प्रवान** पितु बानी । ... २,६,८–प्रवान; ३,४,५,७–प्रमान

२।६४।३ प्रिय बिनु **तिअहि** तरनिहु ते ताते ।... २,३,४,५,६,–तिअहि ; ७–तिय

२।६६ राखिअ अवध जो अवधि लगि, रहत **जानिअहि** प्रान । ... २,३,४,५,६,७,८–जानिअहि; (न जानिअ)

२।६८।४ सेवा समय **दइअ** बनु दीन्हा । ... ३,४,५–दइअ ; २,६,८–दैअ ; ७–दैव

२।६८।४ मोर मनोरथु **सफल** न कीन्हा । ... २,६,८–सफल; ३,४,५,७ सुफल

२।७२।५ **पूँछे** मातु मलिन मनु देखी । ... २,३,४,६,८–पूँछे ; ५–पूछेउ ; ७–पूछा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।७४।२	राम विमुख सुत ते हित **जानी** । ...	३,४,५,८–जानी ; २,४,७–हानी
२।७४।४	सकल सुकृत कर बड़ **फलु** येहू । ...	३,७,८–बड़ फल ; २,४,५,६–फल सुत
२।७५	उपदेस यहु जेहि **जात** तुम्हरे, राम सिय सुखु पावहीं ...	४,७–जात ; २,३,५,६,८–तात
२।७५	तुलसी **प्रभुहि** सिख देइ, आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई ।	२, ३, ४, ६, ७, ८–प्रभुहि; ५–सुतहि
२।७७।२	**लखी** राम रुख रहत न जाने । ...	२,३,४,६,७,८–लखी ; ५ लखा
२।७८।८	चले जनक **जननी** सिरु नाई । ...	२,३,६,७,८–जननी ; ४,५–जननिहिं
२।७७।४	मीत पुनीत प्रेम **परितोषे** । ...	२,३,६,८–परितोषे ; ४,५,७–परिपोषे
२।८३।२	नगरु **सफलु** बन गहबर भारी । ...	२,५,६,७,८–सफलु; ३,४–सकल
२।८८।८	दोना भरि भरि राखेसि **पानी** । ...	३,८–पानी; २,४,५,६, ७–आनी
२।८९।४	कटि **भाथी** सर चाप चढ़ाई । ...	२,६,८–भाथी ; ३,४,५,७–भाथा
२।८९।७	सुरपति सदनु न पटतर **पावा** । ...	२,३,४,५,६,७–पावा ; ८–आवा
२।९०।७	**सोवति** महि बिधि बाम न केही । ...	२,३,६,४,५,७–सोवति;८–सोवत
२।९३।२	जागे जग मंगल **सुख दातारा** । ...	६,७,८–सुखदारा; २, ३,४,५–दातारा
२।९४।२	तात धरमु **मगु** तुम्ह सबु सोधा । ...	२,३,४,५,६,७–मगु ; ८–मतु
२।९७।१	नृप मनि मुकुट **मिलित** पद पीठा ।	३, ८–मिलित ; २,४,५,६,७–मिलत
२।९७।२	सुख निधान अस **पितुगृह** मोरे । ...	३,४,५,८–पितुगृह ; २,६,७–माइक
२।९७।६	मोहि **केउ** सपनेहु सुखद न लागा ।...	७–केउ ; ३,४,५–सब ; २,६,८–कोउ ;
२।९८	**मोरि** सोचु जनि करिअ कछु, मैं बन सुखी सुभायँ । ...	४,५,८–मोरि ; २,३,६,७–मोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।९९।१	प्रजा मातु पितु **जीहहिं** कैसे । ...	४,५,६–जीहहिँ; २,७–जीवहिं; ३,८–जिइहहिं
२।१००।२	होत बिलंबु **उतारहि** पारू । ...	२,३,४,५,६,७–उतारहि ; ८–उतारिहि
२।१००।४	जेहिँ जग **किए** तिहुँ पगहु ते थोरा ।	२,३,४,५,६,७–किय ; ८–किये
२।१०३।८	करि परितोषु बिदा **सब** कीन्हे । ...	२,३,४,५,६-सब ; ७,८-तब
२।१०५।८	मुनि मन **मोद** न कछु कहि जाई ।...	२,३,४,५,६,७–मोद ; Ⓒ मोह
२।१०६।३	अति लालसा **सबहिं** मन माहीं । ...	२,३,४,५,७–सबहि ; ६,८–बसहिं
२।११०।८	**सोच** सनेह बिकल नर नारी । ...	२,३,४,५,६,७–सोच ; ८–होहिं
२।१११।५	जोतिष झूँठ **हमारें** भाएँ । ...	२, ३, ४, ५, ६-हमारें; ७,८-हमारेहिं
२।११५।८	**इन्ह ते लहि** दुति मरकत सोने । ...	२,३,४,५,८–एन्ह ते लहि ; ६-एन्ह ते लही ; ७–इन्ह ते लहि
२।११७।७	बिधि निधि **दीन्हि** लेत जनु छीने ।...	२,३,६–दीन्हि ; ४,५,७,८–दीन्ह
२।१२०।२	गदबरि हृदय **कहहिं मृदु** बानी ।...	२,४,५,६–कहहिँ ; ८–कहइ बर; ३,७–कहहि बर
२।१२१।३	दीन्ह हमहि **जेहिं** लोचन लाहू । ...	३,५–जेहिँ २,४,६,७–जेहिं ; ८–जेइ
२।१२३।१	**बसहिं** लषनु सिय रामु बटाऊ ।...	२,३,४,५,६,७–बसहिँ ; ८-बसहुँ
२।१२६।५	**चितानंद** मय देह तुम्हारी । ...	३-चितानंद ; २,४,५,६,७,८-चिदानंद
२।१२८	मुकुताहल गुन गन चुनइ, राम बसहु **मन** तासु ।	२,३,४,५,६,–मन ; ७,८–हिय
२।१२९।१	काम **कोह** मद मान न मोहा । ...	२,३,६–कोह ; Ⓒ मोह ; ४,५ ७–क्रोध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।१३०।६ सब तजि तुम्हहि रहइ लउ लाई। ... २,३,६–लउ ; ४ लौ ; ५–लै ; ७–लय ; ⑧ उर

२।१३२।६ चले सहित सुरथपति प्रधाना। ... २,६,७,८–सुरथपति ; ३,४,५–सुरपति परधाना

२।१३५।५ हम सब भाँति करब सेवकाई। ... २,४,५,६,७,८–करब ; ३–करबि

२।१३५।७ जहँ तह तुम्हहि अहेर खेलाउब। ... २,३,४,६–जहँतहँ;५,७,८–तहँ तहँ

२।१३६।७ मनहु बिबुध बन परिहरि आए। ... २,३,४,५,६,७–बिबुध; ८–बिबिध बन

२।१३८।६ कहि न सकहिँ सुख मा जसि कानन। २,४,७–सुख मा ; ३,५,६,८–सुखमा ; (सुषमा)

२।१३९।६ असनु अमिअ सम कंद मूल फर। २,३,४,५६,७,८–फर ; ५–फल

२।१४१।८ जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं।... २,३,४,५,६,७,८–जनु ; जिमि

२।१४२।६ अडुकि परहिँ फिरि हेरहिँ पीछे।... २,३,६,८–अडुकि; ४,५–अटकि; ७–उडुकि

२।१४३।४ रही न अंतहु अधमु सरीरू। ... ३–रही न ; २,४,५,६,७,८–रहिहि न

२।१४७।२ कहहु कहाँ नृप जेहि तेहि बूझा।... ३,४,५,७–जेहि तेहि ; २,६,८–तेहि तेहि

२।१४७।३ कौसल्या गृह गईं लवाई। ... २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–लवाई ; (लेवाई)

२।१४८।७ राज सुनाइ दीन्ह बनवासू। ... २,३,४,५,६,७–राज ; ८–राउ

२।१५० प्रथम बासु तमसा भएउ,
दूसर सुरसरि तीर। २,३,४,५,६–दूसर ; ७,८–दूसरि

२।१५१।१ तात सुनाएउ बिनती मोरी। ... ३–सुनाएउ ; २,४,५,७,८–सुनायेहु ; ६–सुनायेउ

२।१५१।५ ओर निबाहेहु भायप भाई। ... २,३,४,५,६,८–ओर ; ७–और ; (अउर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।१५२।२	जिअत **फिरेउँ लेइ** राम सँदेसू।	... २,३,६,७–फिरेउँ; ८–फिरउँ, ४,५–फिरेउ
२।१५४	तलफत मीन मलीन जनु, **सीँचेउ** सीतल बारि।	... २, ४, ५-सीँचेउ ; ३, ६, ७-सींचेउ ; ८-सींचत
२।१५४।६	सो तनु राखि **करबि** मैँ काहा।	... २,३,४,५,६,७,८–करबि; (करब)
२।१५५।२	राम बिरह **भरि** मरनु सँवारा।	... ३,४,५–भरि ; २,६,७,८–करि
२।१५७।४	रटहिँ कुभाँति कुखेत **करारा**।	... २, ३, ४, ५, ७, ८–करारा; ६–कराला
२।१६०।२	तात राउ नहिँ **सोचइ** जोगू।	... २,३,६,८–सोचइ ; ४, ५, ७–सोचन
२।१६१।७	मे अति अहित रामु **तेउ** तोही।	... २,३,५, ६, ८–तेउ ; (तेइ) ७–ते ; ४–प्रिय तेहीँ
२।१६५।१	मुख प्रसन्न मनु **राग न रोषू**।	... ३,७–राग न रोषू ; २,६,८–रंग न रोषू ; ४,५–हरष न रोषू
२।१६७	जे परिहरि हरिहर चरन, भजहिँ **भूत घनघोर**।	... ३–भूत घनघोर; २,४,५,६,७,८–भूत गन घोर
२।१६८।१	राम **प्रानहु ते** प्रान तुम्हारे।	... २,३,६,८–प्रानहु ते ; ४,५,७–प्रान तेँ
२।१६८।२	बिधु बिष **चवइ** श्रवइ हिमु आगी।	... ३,४,५,८–चवइ;७–चुवइ;२,६–बमइ।
२।१६९	उठे भरत गुर बचन सुनि, करन कहेउ सब **साजु**।	... २,३,६,८–साजु; ४,५७–काजु
२।१७१।६	सोचिय सूद्रु बिप्र **अवमानी**।	... २,३,६,८–अवमानी; ४,५,७–अपमानी
२।१७३।५	करहु तात पितु बचनु **प्रवाना**।	... २, ३, ६, ८–प्रवाना; ४,५,७–प्रमाना
२।१७४।३	बेद **बिहित** संमत सब ही का।	... २, ४, ५, ६,७–बिहित; ३,८–बिदित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।१७४।७ **मरम** तुम्हार राम कर जानिहिं। ... २,५,७-मरम; ३, ४-प्रेम; ६, (८) परम

२।१७५।३ बन रघुपति **सुरपुर** नरनाहू। ... ३,४,५,७-सुरपुर ; २,६, (८) सुरपति

२।१७६।२ मातु उचित **धरि** आयसु दीन्हा। ... २,३,४,५,६,८-धरि; ७ पुनि

२।१७७।२ मैं अनुमानि **दीखि** मन माहीं।... २,३,६,८-दीखि ; ४,५,७-दीख

२।१७८।२ **रसा** रसातल जाइहि तबहीं। ... २,३,४,५,६,७-रसा ; ८-राजु

२।१७८।५ **बैठ** बात सब सुनउँ सचेतू। ... २,३,४,६,७-बैठ; (बैठि)

२।१७९।१ कैकेई भव **तनु** अनुरागे, **पाँवर** प्रान...। ... २,३,४, ५-तनु...पाँवर; ६,८-तनु, पावन; २-पावन; ७-तनु ते पाँवर

२।१८० **तेहि** पिआइअ बारुनी, कहहु **कवन** उपचार। ... २,३,६-तेहि; ४,५,७-ताहि; (८) तोहि; ३,४,५,७-कवन; २, ६-कौन; ८-काह

२।१८०।३ राय **राजु सबही** कहँ नीका। ... २, ३, ४, ५, ७-राजु सब ही कहँ; ६-रजायसु सबही; ८-रजायसु सब कहँ

२।१८१।३ कोउ न **कहिहि** मोर मत नाहीं। ... २, ३, ४, ५,६,८-कहिहि; ७-कहहि

२।१८१।५ डरु न मोहि जगु **कहिहि** कि पोचू। २,३,५,६,७-कहहि ; ८-कहिहि

२।१८३।७ **बसहिँ** कलप सत नरक निकेता।... २, ३, ४, ५, ६, ७, ८-बसहिँ; (बसिहि)

२।१८५ सनमुख होत जो रामपद, करइ न **सहस** सहाइ। ... ३,६,८-सहस; २,४,५,७-सहज

२।१८५।१ हरषु हृदय **परभात** पयाना। ... २, ३, ४,५, ६, ७, ८-परभात; (प्रभात)

२।१८५।७ जो जेहि लायक सो **तहँ** राखा। ... २, ४, ५, ७-तहँ; ३,६,८-तेहि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१।१८६।१ **चहत** प्रात उर आरत भारी। ...	२,३,४,५,७–चहत; ६ ⓒ चलत
२।१८६।५ अरुंधती अरु अगिनि **समाऊ।... राऊ**	... २,३,६,८–समाऊ; (सुभाऊ... राऊ) ४,५,७–समाजू...राजू
२।१८७ सौंपि नगरु सुचि सेवकनि, सादर **सबहि** चलाइ।	२,३,४,५,६,७–सबहिं ; ८–सकल
२।१८९।५ स्वामि काज **करिहहुँ** रन रारी। ...	३–करिहहुँ; ८–करिहहु ; २,४,५,६–करिहउँ; ७–करिहौं
२।१८९।५ जस **धवलिहहुँ** भुअन दसचारी। ...	३–धवलिहहुँ ; २,४,५,६,८–धवलिहउँ ; ७–धवलिहौं।
२।१९०।४ **भाथी** बाँधि चढ़ाइन्हि **धनुही**। ...	२,३,५,६,८–भाथी ; ४,७–भाथा २,३,४,५,७–धनुही; ६,८–धनही
२।१९३।५ राम राम कहि जे **जबुहाहीँ**। ...	२,३,६–जबुहाहीँ; ४,५,७,८–जमुहाहीं
२।१९४ रामु कहत **पावन** परम, होत भुअन बिख्यात।	... २,३,४,५,६,७–पावन; ८–पाँवर
२।१९५।७ भेंटेउ राम **भद्र** भरि बाहू।	... २,३,४,५,८–भद्र ; ७–चंद्र ; ६–भाइ
२।१९६।१ मे सनेह **सब** अंग सिथिल तव। ...	४,५,७–वस ; २,३,६,८–सब
२।१९६।२ जनु **तनु** धरे बिनय अनुरागू।	... २,३,४,५,७–तनु ; ६,८–धनु ; २–विषय अनुरागू
२।१९६।३ **दीख** जाइ जग पावनि गंगा।	... २,३,४,५,६,७–दीख; ⓒ दीखु
२।१९७।२ **गुर** सेवा करि आयसु पाई।	... २, ३, ४, ५, ६–गुर ; ७ गुरु ; ८–सुर
२।१९८।५ जथा अवध नर नारि मलीना।	... २,३,४,५,७–मलीना ; ६,ⓒ–बिलीना
२।१९९ बिहरत हृदउ न हहरि हर, **पवि** ते कठिन बिसेषि।	... २,३,४,५,६,७–पवि ; ⓒ पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।१९९।३ भे न भाइ अस अहहिं न होने। ... ३,४ ५,७–अस ; २,⑥ असे

२।१९९।८ सादर कोटि कोटि सत सेषा। ... ३,८–सादर ; २,४,५,६,७–सारद

२।२००।६ साँइ दोह मोहि कीन्ह कुमाता। ... २,३,६,८–सांइ दोह ; ५–साँई द्रोहि ; ४,७–साँई द्रोह

२।२००।८ यह निरजोसु दोसु बिधि बामहि। ... २,३,४,६,८–निरजोसु; ५–निरजोस; ७–निरदोस

२।२०४।१ जानहुँ राम कुटिल करि मोही। ... २,३,४,६,८–जानहु; ५,७–जानहिं

२।२०५।४ मूरतिवंत भाग्य निज लेखे। ... २,४,५,७–मूरतिवंत ; ३,६,८–मूर्रति मंत

२।२०६।४ राउ सत्यव्रत तुम्हहि बोलाई। ... २,४,५,६,७,८–बोलाई ; ३–बलाई

२।२०७।३ प्रेम पात्रु तुम्ह सम कोउ नाहीं। ... ४,५,७–प्रेमपात्र ; २,३,६,८–प्रेमपात्रु

२।२०८ राम भगति रस सिद्धि हित, भा यह समउ गनेसु २,३,४,५,६,७–सिद्धि ; ८–सिद्ध

२।२०८।५ गुर अवमान दोष नहिँ दूषा। ... २,३,६–अवमान ; ४,५,७,८–अपमान

२।२०८।६ कीन्हिहु सुलभ सुधा बसुधाहू। ... २,३, ६, ७–कीन्हिहु; ४,५,८–कीन्हेहु; (कीन्हेउ)

२।२०९।१ कीरति बिधु तुम्ह कीन्हि अनूपा। ... २, ३, ६–कीन्हि ; ४,५,७,८–कीन्ह

२।२०९।६ भरतु धन्य तुम्ह जगु जसु जयऊ।... २,४,५,७,८,–जगु जसु ; ३,६–जसु जगु

२।२१०।५ पितहु मरन कर नाहिन सोकू। ... २,७–नाहिन; ३, ४, ५, ६, ८–मोहि न

२।२११।६ मिटइ कुजोगु रामु फिरि आए। ... २,५,६,८–कुजोगु ; ३,४,७–कुरोग।

२।२१३।४ अस कहि रचेउ रुचिर गृह नाना। ... २,३,४,५,६,८–रचेउ; ७–रचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।२१७ रामु सकोची प्रेम बस, भरतु **सुपेम** पयोधि।	... ३,६–सुपेम; २,४,५,७–सुप्रेम; ८–सपेम
२।२१७ बनी बात **बेगरन** चहत......	... २, ३, ६–बेगरन; ४, ५, ७,८–बिगरन
२।२१८।३ गहहिँ न पाप **पुंनु** गुनु दोषू।	.. ३,८–पुनु; ४,५,७–पुन्य;२,६–पूनु
२।२२१।५ कहहिँ सकल **तोहि** सम न सयानी।	.. २,३,४,५,६,७–तोहि; ८–तेहि
२।२२४।६ सीय **समेत** बसहिँ दोउ बीरा।	... २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–समेत; (समीप)
२।२२६ तुलसी उठे अवलोकि कारनु, काह **चित सचकित** रहे।	... २,३,६,८–चित सचकित; ४,५–चित चक्रित; ७–चित चक्कित।
२।२२६।८ आपनि समुझि **कहइ** अनुगामी।	.. २,३,४,५,६–कहइ; ७–कहौं; ८–कहउँ
२।२२८।७ भरत हमहिँ **उपचरा** न थोरा।	.. २,६–उपचरा; ३, ४, ५, ७,८–उपचार
२।२२६ **छत्र** जाति रघुकुल जनमु, राम **अनुज** जगु जान।	... २, ३,४,६–छत्र; ५,७,८–छत्रि; २,३,४,५,७–अनुज; ६,८–अनुग
२।२३०।७ जो अँचवत **नृप मातहि** तेई।	... २,३,६,७–नृप मातहि; ४,५,८–मातहिं नृप
२।२३०।७ नाहिन साधु सभा **जेहिँ** सेई।	... २,३,६,७,८–जेहि ँ; ४,५–जेइ
२।२३१।३ मसक फूक **मकु** मेरु उड़ाई।	... २,३,४,५,६,८–मकु; ७–बरु
२।२३३ मातु मते महुँ **मानि** मोहि, जो कछु **करहिँ** सो थोर।	... २,३,४,५,६,७,८–मानि;(जानि) २, ३, ४, ५, ६, ७–करहिँ; ८–कहहिं
२।२३३।२ मोरे सरन **राम** की पनहीं।	... २,४,५–राम; ३,६,७,८–रामहिँ
२।२३३।५ फेरत **मनहिँ** मातु कृत खोरी।	... २,३,४,५,६,७–मनहिं; ८–मनहु
२।२३६।३ **तिन्ह** तरु बरन्ह मध्य बटु सोहा।	... २,३,४,५,६,७–तिन्ह; ८–जिन्ह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।२३६।४ **अबिरल** छाँह सुखद सब काला। ... ३,६,८–अबिरल; २,४,५,७–अबिचल

२।२३८।८ जिअ की जरनि **हरत** हँसि हेरत। ... ३,५,७,८–हरत; २,६–मनहु; ४–हिय को जरनि हरत

२।२३९।४ बंधु सनेह **सरस इहि** ओरा, उत साहिब सेवा **बर** जोरा। ... २, ३,४,५,६, ८–सरस एहि; ७–सरिस यहि ३, ४,५,७–बर; २,६,८–बस

२।२४० भरत राम की मिलन लखि, **बिसरा** सबहि अपान। ... ३,७–बिसरा; २,४,५,६,८–बिसरे

२।२४१ भूरि **भायँ** मेंटे भरत, लछिमन करत प्रनाम। २,३,६,८–भायँ; ४, ५–भाय; ७–भाग

२।२४६।७ सहित समाज **सुसरित** नहाए। ... २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–सुसरित; (सुरसरित)

२।२४७।४ बोले गुर सन **राम** पिरीते। .. ३,४,५,७,८–राम; २,६–मातु; (भरत)

२।२५१ तुलसी कृपा रघुबंस बनि, की लोह लै **लौका** तिरा। ३,६,८–लौका; २,४,५,७–नौका

२।२५१।१ **पुर नर नारि** मगन अति प्रीती। ... २,३,४,५,७–पुर नर नारि; ६, ८–पुरजन नारि

२।२५२ निसि न नींद नहिँ भूष दिन, भरतु बिकल **सुठि** सोच। २,३,४,५,६,७–सुठि; ८–सुचि

२।२५२।६ **हर** गिरि ते गुरु सेवक धरमू। ... ३,४,५,६,७,८–हर; २–है।

२।२५६।३ गा चह पार जतनु **हिय** हेरा। ... ३,४,५,६,७,८–हिय; २–हिये; (बहु)

२।२५६।४ **सरसी सीपि** कि सिंधु समाई। ... २,६,८–सरसी सीपि; ३,४,५,७–सर सीपी

२।२५७।१ सूझ जुआरिहि **आपन** दाऊ। ... २, ३, ४, ५, ६, ७–आपन; ८–आपुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।२६०।४ मुकुता प्रसव कि संबुक **काली** ।	२,३,६,८–काली; ४,५,७–ताली
२।२६०।५ सपनेहु दोष **कलेसु** न काहू । ...	२,४,५,७,८–कलेस ; ३, ६–कलेसु (क लेसु)
२।२६१।८ तजहिँ बिषम बिष **तापस** तीछी ।...	२,६–तापस; ३,४,५,७,८-तामस
२।२६३ **मिटिहइँ** पाप प्रपंच सब,	२,३,४,५,६–मिटिहइ ; ७,८–मिटिहहिं
२।२६४।२ **करत उपाउ बनत** कछु नाहीँ ।...	६,७–करत उपाय बनत ; ३,४,५,८–बनत उपाय करत
२।२६४ २।२६६।२ } **प्रसन्न** २।२६८।२	३,४,५,७–प्रसन्न; २,६,८–प्रसंन
२।२६८।३ देव दीन्ह सबु **मोहि अ भारू** । ...	२,३,६,८–मोहिअ भारू; ४,५,७–मोहि सिर भारू
२।२७१।५ **किए** बिस्राम न मगु महिपाला । ...	४,५,८–किए ; २,३,६–किये ; ७–किय
२।२७२।४ **गनप गौरि तिपुरारि** तमारी । ...	२,३,६,८–गनप गौरि तिपुरारि; ४,५,७–गनपति गौरि पुरारि
२।२७६ अवगाहि **सोक** समुद्र सोचहिँ ...	२,३,४,५,६–सोक ; ७–शोक ; ८–सोच
२।२७९ पूजि पितर **सुर** अतिथि, गुर लगे करन **फलहार** ।	... २, ३, ४, ५,६,७, ८–फलहार; (फरहार)
२।२८०।६ सीलु सनेहु **सकल** दुहुँ ओरा । ...	२,३,४, ६, ८–सकल; ५,७–सरस
२।२८१।४ **जो** सुभ असुभ सकल फल दाता ।...	२,३,४,५,६,८–जो ; ७–सो
२।२८२।१ सुत सुत बधू **बिबुध** सरि बारी । ...	२, ३, ६–बिबुध ; ४,५,७,८–देवसरि
२।२८४ हमरैँ **तौ** अब ईस गति, कै मिथिलेसु सहाय ।	... ३,४,५,७–तौ ; २,६,८–तब भूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।२८५।६ सिय **सनेह** बढ़ु बाढ़त जोहा। ...	२,३,४,५,६,७-सनेह; ⑧ समेत
२।२८५।८ मोह मगन **मति** नहिं बिदेह की।	२,३,४,५,६,७-मति ; ⑧ अति
२।२८६।५ सीय **सकुच महुँ** मनहुँ समानी। ...	२,६,७-सकुच महुँ ; (सकुचि महि) ; ३,४,५-सकुच महि ; ८-सकुचि महु
२।२८८।४ **बहुरहिं** लषन भरतु बन जाहीं। ...	२,३,४,५, ६, ७-बहुरहिं; ⑧ बर नहिं
२।२८८।६ जद्यपि रामु **सीम** समता की। ...	३-सीम ; २,४,५,७-सींव ; ६,⑧ सीय
२।२९१।४ प्रमुदित फिरब बिवेक **बढ़ाई**। ...	४,५,७-बढ़ाई ; २,३,६, ⑧ बड़ाई
२।२९२ **संकट** सहत सँकोच बस, कहिअ जो आपसु देहु	२,३,४,५,६, ७-संकट ; ⑧ संकत
२।२९३।४ भूप भरतु मुनि **साधु** समाजू। ...	२,३,४,५,६,७,८-साधु; (सहित)
२।२९४।६ चंदिनि कर कि **चंड करजोरी**। ...	२,६,८-चंड करचोरी ; ३,८-चंद कर चोरी ; ४, ५-चंद्र कर चोरी
२।२९८।५ आपु **समान** साज सब साजी। ...	४, ५, ७-समान ; २,३,६,८-समाज
२।३०० आपसु देइअ देव अब, सबइ **सुधारिअ** मोरि। ...	३-सुधारिअ ; ७-सुधारिय ; २, ४,५,६,८-सुधारी
२।३०२ भरत जनकु **मुनिगन** सचिव, साधु सचेत बिहाय। ...	२,३,४,५,६,७-मुनिगन ; ८-मुनिजन
२।३०४।३ तुम्हहि बिदित सबही कर **मरमू**। ...	३-मरमू ; २, ४, ५, ६, ७,८-करमू
२।३०४।६ नतरु प्रजा **पुरजन** परिवारू। ...	२,३,४,५,६-पुरजन ; ७,८ परिजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।३०५।४ **साधन** एक सकल सिधि देनी, कीरति सुगति **भूमिमय** बेनी।	३,४,५,७–साधन ; १,६, ८ साधक ; (भूमिमय) ; २,३,४, ५,६,७,८–भूतिमय
२।३०६।८ सो अवलंब **देउ** मोहि देई। ...	२,३,६,८–देउ ; ४,५,७–देव
२।३१०।५ **कटुक** कठोर कुबस्तु दुराई। ...	३,४,५,७–कटुक ; २,६,८–कटु
२।३१२।७ मोहि लगि **सहेउ सबहिं** संतापू। ...	३,८–सहेउ सबहि ; २,४,५,६– सबहि सहेउ ; ७–सहेउ सकल
२।३१३।१ सब **सुचि सरस** सनेह सगाई। ...	२,६,८–सुचि ; ३,४,५,७–रुचि सरस
२।३१४।५ **चलेहु** कुमग पग परै न खालेँ। ...	२,३,४,५, ६, ७, ८–चलेहु.... परहिं ; (चलत)
२।३१५।५ जनु जुग **जामिक** प्रजा प्रान के। ...	२,३,४,५,७,८–जामिक ; ६– जामिनि
२।३२२।३ करि प्रनाम **बर** बिनय निहोरे। ...	२,३,४,५,६,७–बर ; ८–बय
२।३२४।१ **घट न** तेजु बलु मुख छबि सोई। ...	४,५,७ में भा० का पाठ है ; ८–घटइ तेजु बल मुख छबि सोई; ६–घटइ तेजु बल सुख छबि सोई; २–घटत न तेजु बल सुख छबि सोई
२।३२५ माँगि माँगि आयसु करत, राज काज **चहुँ** भाँति। ..	२,५,६–चहुँ ; ३,४,७,८–बहु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरण्य कांड

३।श्लो०।१ मोहाँभोधर **पूग** पाटन··· १,२,३,४,५,६–पूग ; ७–पुञ्ज

३।०।१ **पुर नर भरत** प्रीति मैं गाई। ... १,२,३,४,५,६–पुर नर; (पूरन) ; ७–पुरजन

३।१।१ चला **भाजि** वायस भय पावा। ... १,२,३,४,५,६–भाजि ; ७–भागि

३।१।८ सब जगु **ताहि अनलहु** ते ताता।... १,२,३,४,६,७–ताहि ; ५–तेहि ; १,२,३,६–अनलहु ; ७–अनल ; ४,५–अनलहुँ

३।२।१ चरित किए **श्रुति** सुधा समाना। ... १,२,३,४,५,७–श्रुति ; ६–स्रुति

३।३ त्वदंघ्रि मूल ये **नराः** ।···**मत्सराः** १,४,५-नराः···मत्सराः ; २,३,६,७–नरा मत्सरा

३।३ त्वदीय भक्ति **संजुताः** । १,३,४–संयुताः ; २ संयुता ; ५,६–संयुतां ; ७–संयुतं

३।४।२ आसिष **देइ** निकट बैठाई। १,२,३,४,५,६–देइ; ७–दीन्ह

३।४।४ कह रिषि बधू **सरस** मृदु बानी। .. १,२,४,५,६–सरस ; ३,७–सरल

३।४।५ **मित प्रद सब** सुनु राजकुमारी। ... १,२,३,४,५,६–मित प्रद सब ; ७–मित सुख प्रद

३।४।७ आपद काल **परिखिअहि** चारी। ... १,२,३,४,५,६–परिखिअहि; ७–परिखियहि ; (परखिअहि)

३।४।८ बृद्ध रोग बस **जड़** धनहीना। ... १,२,३,४,५,६,७–जड़

३।४।१४ **सो** निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई। ... १,२,३,४,५,६–सो ; ७–ते

३।४।१६ पति प्रतिकूल **जन्म** जहँ जाई। ... १,३,४,५–जन्म ; २,६–जन्मि ; ७–जनम

३।५।२ आयसु **होइ** जाउँ बन आना। ... १,२,३,४,५,६–होइ ; ७–होउ

३।५।७ **भजी** तुम्हहि सब देव बिहाई। ... १,२,३,६,७–भजी ; ४,५–भजिय

३।५।९ केहि बिधि **कहाँ जाहु अब** स्वामी। १,२,३,६–कहाँ जाहु अब ; ४,५,७–कहाँ जाहु बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३।६।२ आगे राम **अनुज** पुनि पाछे।...**काछे**।	१,२,३,४,५,६–अनुज ; ७–लषन ; १,२,३, ४, ६–काछे ; ५,७–आछे
३।६।३ उभय बीच **श्री सोहइ** कैसी। ...	१,२,३,४,५,६–श्री सोहइ ; ७–श्री सोहति; (सिय सोहति;)
३।६।४ पति पहिचानि देहिँ **बर** बाटा। ...	१,२,३,४,५,६–बर ; ७–सब
३।२क।७ **सबदरसी तुम्ह** अंतरजामी। ..	१,२,३,४,७–सबदरसी; ५,६–समदरसी; १,२,३,४,५,६–तुम्ह; ७–उर
३।३क सकल मुनिन्ह के **आश्रमन्हि**, जाइ जाइ सुख दीन्ह। ...	१, २–आश्रमहि; ३, ४, ५–आश्रमन्हि; ६,७–आश्रम
३।३क।१ मुनि **अगस्ति** कर सिष्य सुजाना। ...	१, ३, ४,५,६,७–अगस्ति; २–अगस्त्य
३।३क।१ नाम **सुतीछन** रति भगवाना। ...	१,३,४,५–सुतीछन;७–सुतीच्छन, २,६–सुतीक्ष्ण
३।३क।४ **है बिधि** दीनबंधु रघुराया। ...	१,२,५,६–है बिधि; ३,४,७–हे बिधि
३।३क।१२ कबहुँक फिरि पाछे **पुनि** जाई। ...	१,२,३,६–पुनि; ४,५,७–चलि
३।३क।१७ **जाग** न ध्यान जनित सुख पावा। ...	१,२,३,४,५,७–जाग; ६–जान
३।४क।८ हर हृद मानस **बाल** मरालं। ...	१,२,३,४,५,७–बाल ; ६–राज
३।४क।१८ **बसतु** मनसि मम कानन चारी। ...	१,२,३,६–बसतु ; ४,५,७–बसहु
३।४क।२० **जो** कोसल पति राजिव नयना। ..	१,२,३,४,५,६,७–जो; (सो) १,२,६,७–नयना ; ३,४,५–नैना
३।४क।२४ समुझि न परै **झूठ का साँचा**। ...	१,२,३,४,५,७–झूठ का साचा ; ६–रूढ का साचा
३।५क।१ एवमस्तु **करि** रमानिवासा। ...	१, २–कार ; ३, ४, ५, ६, ७–कहि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३।५क।६ सुनत अगस्ति तुरत उठि धाए। ...	१,२,३,४,५,७–धाए; ६–धाय
३।६क मुनि समूह महँ बैठे, सन्मुख सब की ओर। ...	१, २, ४, ५, ७–महँ; ३–मह; ६–मो
३।६क।३ जेहि प्रकार मारौं मुनि द्रोही। ...	१,२,३,४,५,६–मुनि द्रोही; ७–सुर द्रोही
३।६क।६ ऊमरि तरु बिसाल तव माया। ...	१, २, ३, ४, ५,६–ऊमरि; ७–डूमरि
३।६क।८ तव भय डरत सदा सोउ काला। ...	१,२,३,४,५,६–भय; ७–डर
३।६क.१० बसहु हृदय श्री अनुज समेता। ...	१, ३, ४, ५, ६–श्री; २–स्री; ७-सिय।
३।७ गीध राज सैं भेंट भइ, बहु बिधि प्रीति बढ़ाइ। ...	१, २, ३, ४, ५,७– बढ़ाइ; ६–दृढ़ाइ
३।८ ईस्वर जीव भेद प्रभु, सकल कहौं समुझाइ। ...	१, २, ३–जीव; ४, ५, ६, ७–जीवहि; १,२,३,४,५,६,७–कहहु (कहौ)
३।८।३ सो सब माया जानेहु भाई। ...	१,२,३,४,५,७–सब; ६–सभ
३।८।४ बिद्या अपर अबिद्या दोऊ। ...	१, २, ३, ४, ५, ७–अपर; ६–अपार
३।६।६ निज निज कर्म निरत श्रुति रीती। ...	१,२, ३, ४, ५–कर्म; ६–धर्म; ७–धरम २–स्रुति;
३।६।७ यह कर फल मन बिषय बिरागा। ...	१,२–मन; ३,४,५,६,७–पुनि
३।९।७ तब मम धर्म उपज अनुरागा। ...	१,२,३,४,५,६–धर्म; ७ चरन
३।१० बचन कर्म मन मोरि गति, भजनु करहिं निःकाम। ...	१,३, ४, ५,७–निःकाम; २,६–निष्काम; (निहकाम)
३।१०।६ होइ बिकल सक मन नहिं रोकी।	१, २, ३,६,७–सक; ४,५–सकि; १,२–मन नहि; ३,४,५,६,७–मनहि न

५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३।१०।८ यह संजोग बिधि रचा बिचारी। ...	३, ४, ५-यह; १, २, ६-येह; ७-अस
३।१०।१० ताते अब लगि रहिउँ कुमारी।...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७-रहिउँ; (रहेउँ) १, २, ३, ४, ५, ६-कुमारी; ७-कुँआरी
३।१०।११ अहै **कुमार** मोर लघु भ्राता। ...	१, ५, ६, ७-कुमार; २,३,४-कुँआर
३।१०।१४ प्रभु **समथ** कोसलपुर राजा। ...	१,२,६-समथ; ३,४,५-समर्थ; ७-समरथ
३।१०।१६ लोभी जसु चह चार **गुमानी**। ...	१, २, ३, ४,५,७-गुमानी; ६-गुनानी
३।११ ताके कर रावन कहँ, ...	१,२,४,५-मनौ; ३, ६,७-मनहु;
मनो चुनवती दीन्हि।	१,२,७-चुनवती; ३, ४, ५,६-चुनौती
३।११।२ खरदूषन पहि गइ **बिलपाता**। ...	१,३,५,६-बिलपाता; २,४,७-बिलषाता।
३।११।४ धाए निसिचर **निकर** बरूथा। ...	१, २, ३, ४, ५, ७-निकर; ६-बरन
३।१२ मरकत **सयल पर लरत** दामिनि,...	१,२,४,५,६,७-सैल; ३-सयल
कोटि सो जुग भुजग ज्यौं।	१,२,३, ५, ६-लरत; ४, ७-लसत
३।१२ आइ गए बगमेल, ...	१, २, ३, ४, ५, ६-धावत; ७-धावहु
घरहु घरहु **धावत** सुभट।	
३।१२।३ देखे जिते **हते** हम केते। ...	१,२,३,४,५,७-हते; ६-हने
३।१२।१२ जौं न होइ बल **घर** फिरि जाहू। ...	१,३,४,५,६,७-घर; २-खर (गृह)
३।१३ उर दहेउ कहेउ कि धरहु **धाए**, ...	१,२,४,५,६-धाए; ३-धाये; ७-धावहु
बिकट भट रजनीचरा	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३।१३ प्रभु कीन्हि धनुष टकोर, प्रथम कठोर घोर भयावहा।	... १,२,३,४,५,६–भयावहा ; ७–भयामहा
३।१३।१ फुंकरत जनु बहु ब्याल।	... १,२,३,४,५,७–बहु ; ६–निज
३।१३।६ आयुध अनेक प्रकार।	... १,३,४,५,७–प्रकार ; २, ६–अपार
३।१३।१३ खग कंक काक सृकाल।	... १,२–सृगाल ; ३,४,५–सृकाल ; ६,७–शृगाल
३।१४ कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत, पिसाच खर्प्पर संचहीं।	... १,२–खर्प्पर ; ६–खर्पर ; ३, ४, ५,७–खप्पर
३।१४।५ धुआँ देखि खरदूषन केरा।	... १,३,४,५–धुआँ ; २,६–धुआं ; ७–धुआ
३।१५।९ रूप रासि बिधि नारि सँवारी।	... १,२,३,४,५,६–नारि ; ७–रची
३।१५।१० सुनि तव भगिनि करहिं परिहासा।	१,२,३,४,५–करहिं; ६–करहि ; ७-करी
३।१६ सूपनषहि समुझाइ करि, बल बोलेसि बहु भाँति	... १, २, ३, ४, ५,६,७–सूपनषहि ; (सूपनखइ)
३।१७ लछिमन गए बनहि जब, लेन मूल फल कंद।	१,२,३,४,५,६–मूल ; ७–फूल
३।१७।५ जो कछु चरित रचा भगवाना।	... १,२,३,४,५,७–रचा ; ६-रचेउ
३।१८।७ भइ मम कीट भृंग की नाईं।	... १,२,३,४,६,७–मम ; ५–मति ; १, २, ३, ४, ५, ६,७–की नाईं; (कै नाईं)
३।१९।४ बैद बंदि कबि मानस गुनी।	... १,२,३,४,५–मानस ; ६, ७–भानस
३।२० मम पाछे धर धावत, धरे सरासन बान।	... १, २, ३, ४, ५, ६, ७–धावत; (धाइहैं)
३।२०।११ माया मृग पाछे सोइ धावा।	... १,२–सोइ ; ३,४,५,६,७–सो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३।२०।१४ धरनि **परेउ** करि घोर पुकारा।	... १,२,३,४,५,६–परेउ ; ७–परा
३।२१।३ जाहु बेगि **संकठ** अति भ्राता।	... १,२,३,४,५,७–संकठ ; ६–कष्ट
३।२१।५ मरम बचन जब सीता **बोला**। ...**मन डोला**	... १, २, ३, ६, ७–बोला।... मन डोला; ४,५–बोली।...मति डोली
३।२१।९ इत उत चितइ चला **भड़िहाईं**।...	१,२,३,४,५,६–भड़िहाईं; ७–भड़िआई।
३।२१।१० रह न तेज तन बुधि **बल लेसा**। ...	१,२,३,४,५,६–बल लेसा ; ७–लवलेसा
३।२१।११ नाना बिधि कहि कथा **सुहाई**।	... १,२,३,६–सुहाई; ४,५–सोहाई; ७–सुनाई
३।२१।१२ **बोलेहु** बचन दुष्ट की नाईं।	... १,२,३,४,५–बोलेहु; ७–बोलहु; ६–बोले
३।२१।१६ सुनत बचन दससीस **रिसाना**।	... १,२,६,७–रिसाना ; ३,४,५–लजाना
३।२२।१ हा **जगदेक** बीर रघुराया।	... १,३–जगदेक ; २–जग एक ; ६–जगदैक ; ७–जगदेव ; ४,५–जगदीस
३।२२।११ निर्भय चलेसि न **जानेहि** मोही। ...	१,२,३,६,७–जानेहि ; ४,५–जानेसि
३।२३ तब असोक पादप तर, **राखिसि** जतनु कराइ।	... १, २, ३, ६–राखिसि ; ४, ५–राखेसि ; ७–राखे
३।२३।३ मम मन सीता आश्रम नाहीं।	... ३,४,५,६–में भा० का पाठ है; १, २–मम सीता आश्रम महुँ नाहीं; ७–मम मन आश्रम सीता नाहीं।
३।२३।५ अनुज समेत गए प्रभु **तहवाँ। जहवाँ।**	... १,२,३,४,५,७–तहवाँ ... जहवाँ; ६–तहाँ जहाँ
३।२३।१८ सुमिरत राम चरन **जिन्ह** रेखा। ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७–जिन्ह ; (चिन्ह)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३।२४।२ **तेहिँ** खल जनक सुता हरि लीन्ही ।...	१,२,४,५,६–तेहि ; ३–तेहिँ ; (तेइ)
३।२६ **जे** राम मंत्र जपंत ...	... १,२,३,४,५–जे ; ६,७–जो
३।२६ जेहि श्रुति **निरंजन** ब्रह्म व्यापक	... १,२,३,४,५,६–निरंजन ; ७–निरंतर ।
३।२६ पस्यंति जं जोगी जतनु करि, करत मन गो बस **सदा** ।	... १,२,३,४,५–सदा ; ६,७–जदा
३।२७ मन क्रम बचन कपट तजि, **जो कर** भूसुर सेव ।	... १,२,३,४,५,६,७–कर; (गुर)
३।२७ मोहि समेत बिरंचि सिव, बस **ताके** सब देव ।	... १,२,५,६–ताकेँ ; ३,४,७–ताके; (तेहि कइ)
३।२८।३ तिन्ह महँ मैँ **अति** मंद अघारी । ...	१,२,३,६–अति; ४,५,७–मति
३।२८।६ भगति हीन नर सोहै **कैसा** ।...**जैसा**	१,२,३, ४, ५, ६–कैसा...जैसा; ७–कैसे...जैसे
३।३१ सहित बिपिन मधुकर **खग**, मदन कीन्हि बगमेल ।	... १,२,३,४,५,६–खग; ७–खगन
३।३१ डेरा **कीन्हेउ** मनहु तब, कटकु हटकि मनजात ।	... १,२,३, ४,५, ६–कीन्हेउ; ७–दीन्हेउ
३।३१।१० चतुरंगिनी **सेन** संग लीन्हे ।	... १,२,३,४,५,७–सेन; ६–सेना
३।३२।२ कामिन्हि **कै** दीनता दिखाई ।	... १,२,३,४,५,६–कै; ७–कहँ
३।३२।५ **सत** हरि भजनु जगत सब सपना । ...	५,७–सत; ४–सत्त; १,२,३,६–सत्य
३।३३ मायाछन्न न **देखिए** जैसे निर्गुन ब्रह्म ।	१,२,३–देखिअै, ६–देखिअ; ४,५, देखियै; ७–देखिए
३।३३।६ पाटल पनस **पनास** रसाला ।	... १, २, ३–पनास; ४, ५, ६,७–परास
३।३४ फल **भारन नम्रि** बिटप सब, रहे भूमि नअराइ ।	... १,२, भारन नम्रि; ३,४,५,६,७–भर नम्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३।३५।१ सुनहु उदार परम रघुनायक।	... १,३,४,६—उदार परम; २—उदार सहज; ७—परम उदार
३।३७ काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह कै धारि।	... १,२,३,४,५,७—कै; ६—कइ
३।३७।५ होइ हिम तिन्हहि देति सुख मंदा।	१,२—देति सुख; ३,४,५—तिन्है दहै सुख; ६,७—देति दुख मन्दा
३।३८।६ जिन्ह ते मैं उनके बस रहऊँ।	... १,२,३,४,५—जिन्ह ते; ६—जाते, ७—जेहि ते
३।३८।६ धीर धर्म्म गति परम प्रवीना।	... १, २, ३, ४, ५—धर्म्मगति; ७—धरम गति; ६—भगति पथ
३।३९ गुनागार संसार दुख, रहित विगत संदेह।	... १,२,३,४,५,६—दुख, ७—सुख
३।४० दीप सिखा सम जुवति तन, मन जनि होसि पतंग।	... १,२—जुवति तनु; (जुवतिजन) ३,४,५,६—जुवती; [कोदवराम में यह दोहा नहीं है]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किष्किंधा कांड

४।०।१ आगे चले बहुरि **रघुराया** ।	... १,२,३,४,५,६,७–रघुराया
४।०।५ **पठए** बालि होहिँ मन मैला ।	... १,२,४,५,६–पठए ; ३–पठये ; ७–पठवा
४।१ जग कारन तारन **भव**, भंजन धरनी भार ।	... १,२,३,४,५,६,७–भव; (भवहिं)
४।२ एकु मैँ मंद मोह बस, **कुटिल** हृदय अज्ञान ।	... १,२,३,४,५,६–कुटिल ; ७–कीस
४।४ तब हनुमंत उभय दिसि, की सब कथा सुनाई ।	... १,२,३,५,७–की ; ६–कह ; ४–कहि
४।४।४ परबस परी बहुत **बिलपाता** ।	... १,२,३,४,५,७–बिलपाता ; ६–बिलखाता
४।५।१४ फरकि उठी **द्वौ** भुजा बिसाला ।	... १,२–द्वै ; ३,४,५–उठीं दोउ ; ६–उठी दौ ; ७–उठे दोउ
४।६ सुनु सुग्रीव **मारिहौं**, बालिहि एकहि बान ।	... १,२,३,४,५,६–मारिहौं ; ७–मैं मारिहौं
४।६।१२ बिनु प्रयास रघुनाथ **उठाए** ।	... ३–उठाए ; ७–रघुबीर ढहाए ; १,२–ढढ़ाए ; ४,५,६–रघुनाथ ढहाए
४।६।१३ बालि बधब इन्ह **भइ** परतीती ।	... १,२,७–भइ ; ४,५–भै; ३–भय; ६–बाली बध की भै
४।६।२१ अब प्रभु कृपा करहु **एहि** भाँती ।	... ४,५–एहि ; १,२–येहि ; ३,७–यहि ; ६–वेहि
४।७ **कह बाली** सुनु भीरु प्रिय,	... १,२,३,४,५,६–कह बाली ; ७–कहा बालि
४।७ जौँ कदाचि मोहि **मारहिँ**, तौ पुनि होउँ सनाथ ।	... १,३,५–मारहिँ ; ४–मारिहिँ ; ६–मारहि; ७–मारिहै; २–मारिहहि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४।१० सुमन माल जिमि कंठ ते, गिरत न **जानै** नाग । ...	१,२,३,४,५-जानै ; ७-जाने ; ६-जानइ
४।११।२ स्वारथ लागि **करहिं** सब प्रीती ।	१,२,३,४,५,७-करहिं; ६-करति
४।११।४ **सोइ** सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ । ...	१,२,३,४,५,६-सोइ ; ७-सो
४।१२।४ करहिं सिद्ध मुनि प्रभु **की** सेवा ।...	३-की ; १,२,४,५,६,७-कै
४।१३।२ दामिनि दमक **रह न** घन माहीं ।...	१,२,३,४,५,६-रह न ; ७-न रह; (रही)
४।१३।५ छुद्र नदी भरि चली **तोराई** । ... जस **थोरेहु** धन···	१,२,४,५,६,७-तोराई;३-तुराई; (उतिराई); १,२,४,५, ६, ७-थोरेहु ; ३-थोरेहुँ
४।१४ जिमि **पाखंड** बाद तें, ... **गुप्त** होहिं सदग्रंथ ।	१, २, ३, ५,६-पाखंड; ४,७-पाखंडी; १, २,३,४,५,६,७-गुप्त (लुप्त)
४।१४।४ खोजत **कतहुँ मिलइ** नहिं धूरी । ...	१,२,३, ४, ५, ७-कतहुँ मिलइ नहिं ; ६-कतहूँ मिलइहि
४।१४।१० जिमि हरिजन **हिय** उपज न कामा।...	१,२,३,४,५,७-हिय; ६-पिय
४।१५ कबहुँ प्रबल **बह** मारुत, ... जहँ तहँ मेघ उड़ाहिं ।	१,३,४,५,७-बह; २,६-चल
४।१५।२ जनु बरखा **कृत** प्रगट बुढ़ाई । ...	१,२,३,४,५,७-कृत; ६-ऋतु
४।१५।१० कोउ एक पाव भगति **जिमि** मोरी।...	१,२,३,४,५,७-जिमि; ६-जसि
४।१६।२ फूले कमल सोह सर **कैसा** ।...जैसा...	१,२,३,४,६-कैसा-जैसा; ५,७-कैसे...जैसे
४।१७।८ **लछिमन** क्रोधवंत प्रभु जाना । ...	१,२,३,४,५, ७-लछिमन; ६-लक्ष्मिन
४।१६।३ करि बिनती **समुझाउ** कुमारा । ...	१,२,३,४, ५, ६, ७-समुझाउ; (समुझाइ)
४।१६।७ मुनि मन **मोह** करै छन माहीं । ...	१,२,३,४,५,६-मोह; ७-छोभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४।२१।१ सो मूरुष जो **करन चह** लेखा। ...	१, २, ३,५,६–करन चह; ७–करि चहै; ४–किय चह
४।२२।३ मन क्रम बचन **सो जतन** बिचारेहु।	१,३,४,५–सो जतन; २,६–सो जतनु; ७–सुजतन
४।२३।७ सोइ **गुनज्ञ** सोई बड़भागी। ...	३,४,५,६,७–गुनज्ञ; १, २–गुन ज्ञान
४।२३।३ मिलै न जल **घन** गहन भुलाने। ...	१,२,३,४,५,६–घन; ७–बन
४।२४ दीख जाइ उपवन ... **बर सर बिगसित बहु** कंज।	१,२,४,५–बर सर बिकसित बहु; ३,६–सर बिकसित बहुतक; ७–सुभग सर बिगसित
४।२६ निज इच्छा **प्रभु अवतरइ**, सुर महि गो द्विज लागि। ...	१,२,३,४,७–प्रभु अवतरइ; ५–अवतरहिँ; ६–अवतरइ प्रभु
४।२६ सगुन उपासक संग तहँ रहहिँ **मोच्छ सब** त्यागि। ...	१,२–मोच्छ सब; ६–मोच्छ सुख, ३,४,५,७–मोच्छ सब
४।२६।१ गिरि कंदरा **सुनी** संपाती। ...	१,२,३,४,५–सुनी; ६,७–सुना
४।२६ **बाहेर** होइ **देखि** बहु कीसा। ...	१,२,३,४,५–देखि; ६,७–देखे; १,२,६–बाहेर; ३,४,५,७–बाहिर (बाहेरि)
४।२७।५ लागी दया देखि **करि** मोही। ...	१,२,३,४,५,६–करि; ७–अति
४।२७।६ जमिर्हाहँ पंख करसि जनि **चिंता**।	१,२,३,४,५,६–चिंता; ७–चीता; (चिन्ता)
४।२८ मैं देखउँ तुम्ह **नाहीँ**, गीधहि दृष्टि अपार ...	१,२,३,५,६–नाहीँ; ४–नाहि; ७–नाहिन
४।२८।५ अस कहि **गरुड** गीध जब गएउ।...	१,२,३,४,५,७–गरुड; ६–उमा
४।२८।६ पार जाइ **कै** संसय राखा। ...	१,२,३,४,५–कै; ६,७–कर
४।२९ उभय घरी महँ **दीन्ही**, सात प्रदच्छिन धाइ। ...	१, २, ३, ४, ५,६–दीन्ही; ७–दीन्हि मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४।२६।३	कहइ रीछ पति सुनु हनुमाना । का चुप साधि रहेहु बलवाना । ...	१,२,४,७–कहइ रीछपति सुनु हनुमाना ; ३–रिच्छपति ; १,२–का चुप साधि रहेहु बलवाना ; ३,४,५,७–का चुप साधि रहेउ बलवाना ; ६–का चुप साधि रहेउ बलवाना । कहइ रिछेस सुनहु हनुमाना ।
४।२९।५	जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं । ...	१,२,३,४,५–होइ तात ; ६,७–तात होइ
४।२९।८	लीलहिं नाघउँ **जलनिधि खारा** ।	१,२, ३, ४, ५, ६, ७–जलनिधि खारा ; (जलधि अपारा)
४।३०	तिन्ह कर सकल मनोरथ, सिद्ध करहिं **त्रिसिरारि** । ...	१,२,३,५,६–त्रिसिरारि ; ४,७ त्रिपुरारि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर कांड

५।श्लो०।१	**शांतं** शाश्वतमप्रमेयमनघं, **गीर्वाण**शांतिप्रदं ।	... १,२,३-शांतं साश्वत ; ४,५,६, ७-शांतं शाश्वत ; १,२,३,४,५, ७-गीर्वाण ; ६-निर्वाण
५।श्लो०।३	वानराणामधीशं ···	१,४,५,७-णाम ; २,३,६-नाम
५।०।३	**होइहि** काजु मोहि हरष बिसेखी ।	... १,२,३,६-होइहि ; ४,५,७-होइ
५।०।७	**जेहि** गिरि चरन देइ हनुमंता । **चलेउ**···	... १,२,३,४,५,६-जेहि···चलेउ ; ७-जे··दीन्ह ; (चलि सो गा)
५।०।८	**एही** भाँति **चला** हनुमाना ।	··· १,२,३,४-एही भाँति चला ; ५,७-तेही ; ६-योही
५।१।६	तासु **दून** कपि रूप देखावा ।	... १,२,३,४,६,७-दून ; ५-दुगुन
५।२।४	**सोइ** छल हनूमान **कहँ** कीन्हा ।	... १,२,३,४,५-सोइ···कहँ ; ७-सोइ···ते ; ६-सो···कहँ
५।३	कनक कोट बिचित्र मनि कृत, **सुंदरायतना** घना ।	... १, २, ३, ४,५,६-सुंदरायतना ; ७-सुंदरायत अति
५।३	कहुँ **माल** देह बिसाल···	१,२,३,४,५,६-माल; ७-मल्ल
५।३	नगर चहु दिसि **रछहीं** । ··**भछहीं**	१,२,३,४,५-रछहीं-भछहीं ; ६, ७-रच्छहीं-भच्छहीं
५।३।२	सो कह चलेसि मोहि **निंदरी** ।	... १, २, ३, ४, ५,६-निंदरी ; ७-निन्दरी
५।३।४	रुधिर **बमत** धरनी ढनमनी ।	··· १,२,३,४,५,७-बमत ; ६-बमन
५।३।७	बिकल होसि **तैं** कपि कें मारें ।	... १,२,३,४,५,६-तैं; ७-जब
५।४	**तात** स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिअ तुला एक अंग ।	१,२,३,४,५,६-तात ; ७-सात
५।४।३	**गरुड** सुमेरु रेनु सम ताही ।	१,२,३,४,५,६-गरुड ; ७-गरुअ
	राम कृपा करि **चितवा** जाही ।	१,२,३,४,५,६-चितवा ; ७-चितवहिं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५।५ नव **तुलसिका** बृंद तहँ, देखि हरष कपिराइ।	...	१,२,३,४,५,६–तुलसिका ; ७–तुलसी के
५।७।३ **सुनि** सब कथा विभीषन कही।	...	१,२–सुनि ; ३,४,५,६,७–पुनि
५।७।४ **देखी** चहौँ जानकी माता।	...	१,२,३–देखी ; ४,५,६,७–देखा
५।८ निज पद नयन दिएँ मन, राम **चरन महुँ** लीन।	...	१,२,४,७–चरन महु ; ३,५–चरन महँ ; ६–कमल पद
५।८।३ साम **दान** भय भेद देखावा।	...	१,२,३,४,५,६–दान ; ७–दाम
५।८।८ अस मन **समुझु** कहति जानकी।	...	१, २, ३, ४, ६–समुझु; ५,७–समुझि
५।९।४ सुनु सठ अस प्रवान **मन** मोरा।	...	१,२–मन; ३,४,५,६,७–पन
५।९।६ सीतल **निसि तव असि** बर धारा।		१, २,३,४,५,६–निसि तव असि; ७–निसित बहसि
५।१०।६ तब प्रभु **सीता** बोलि पठाई।	...	१, २, ३, ४, ५, ६–सीता; ७–सीतहि
५।११।११ देहि अगिनि **तन** करहि निदाना।	...	१,२,५,७–तन; ३, ४, ६–जनि; (जन)
५।१२।७ श्रवनामृत जेहि कथा **सुहाई**।	...	१,२,३,४,५,६,७–सुहाई; (सुनाई)
कही सो प्रगट...		१,२,५,६–कही; ३,४,७–कहि
५।१३।७ बचनु न आव नयन **भरि** बारी।	...	१,२,६–भरे; ३,४,५,७–भरि
५।१४।४ **जे हित रहे** करत तेइ पीरा।	...	१,२,६–जे हित रहे; ३,४,५,७–जेहि तरु रहे
५।१६ सुनु माता **साखामृग नहिँ** बल बुद्धि बिसाल।	...	१,३,४,५,६–साखामृग नहिँ; २–साखामृगन; ७–साखामृगहि
५।१६।४ निर्भर प्रेम **मगन** हनुमाना।	...	१,२,३,४,५,६–मगन; ७–हरख
५।१६ ८ परम सुभट रजनाचर **भारी**।	...	१,२,३,४,५,७–भारी; ६–धाती
५।२०।२ का धौं **श्रवन सुनेहि** नहिं मोही।	...	१,२,४,५,६,७–स्रवन सुने; ३–सुनेहि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५।२०।३ मारे निसिचर केहि अपराधा। ...	१,२,३,४,५–मारे; ६,७–मारेहि
५।२०।५ पालत सृजत हरत दससीसा। ...	१, २,३, ४, ५,६–पालत सृजत हरत; ७–सिरजत पालत हर
५।२१।६ जो सुर असुर चराचर खाई। ...	१,२,३,४,५,६, ७–असुर
५।२२ गए सरन प्रभु राखिहैं, तव अपराध बिसारि। ...	१,३,४,५–राखिहैं; २–राखिहैं; ७–राखिहै; ६–राखिहि; (राखि-हहिँ)
५।२२।६ सरित मूल जिन्ह सरितन्ह नाही ँ।...	१,२,३,४, सरित; ५,६,७–सजल
५।२३।४ मति भ्रम तोहि प्रगट मैँ जाना। ...	१,२,३,५,६–तोहि ; ४–तोरि; ७–तोर
५।२४ कपि के ममता पूँछि पर, सबहिं कह्यौ समुझाइ। ...	१,२–कह्यो; ३,४,५–कह्यौ ; ७–कहा ; ६–कहैं
५।२४।१ पूँछहीन बानर तहँ जाइहि। ...	१,२,३,४,५,६–तहँ ; ७–जब
५।२५।२ झपट लपट बहु कोट कराला। ...	१,२,३,४,५,६–झपट ; ७–दपट
५।२६।४ दीनदयाल बिरिदु संभारी। ...	१,२,३–बिरिदु ; ४,५,७–बिरद ; ६–बिरुद
५।२६।६ मास दिवस महुँ नाथ न आवा। पावा। ...	१,३,४,५,६–आवा-पावा; २,७–आवै-पावै
५।२७।१ गर्भ श्रवहिँ सुनि निसिचर नारी।	१, २, ३, ४, ५, ६–स्रवहि सुनि निसिचर ; ७–रजनीचर
५।२७।५ तलफत मीन पाव जिमि बारी। ...	१,२,३,४,५–जिमि ; ६,७–जनु
५।२८ जाइ पुकारे ते सब, बन उजार जुवराज। ...	१,२,३,४,५,६,७–सब ; (सबनि)
५।२८।३ मिलेउ सबन्हि अति प्रीति कपीसा।...	१,२,३,४,५–प्रीति ; ६,७–प्रेम
५।३० नाम पाहरू राति दिनु, ध्यान तुम्हार कपाट। ...	१,२,३,४,७–राति दिनु ; ५,६–दिवस निसि
५।३०।६ निसरत प्रान करहिँ हठि बाधा।...	१,२,३,४,५,६,७–हठि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५।३१	निमिख निमिख **करुनानिधि,** जाहिँ कलप सम बीति ।	...	१,२,३,४,५,६–करुनानिधि; ७–करुनायतन
५।३२।६	नाथ न **कछू** मोरि प्रभुताई ।	...	१,२,३,४,५,६–कछू ; ७–कछुक
५।३३	तव **प्रभाव** बडवानलहि, जारि सकै खल तूल ।	...	१,२,३,६–प्रभाव; ४,५,७–प्रताप
५।३३।१	नाथ भगति **अति सुख दायनी** ।		१, २, ३, ४, ५,६,७–अति सुखदायनी ; (तव अति सुखदायिनि)
५।३३।१	देहु कृपा करि **अनपायनी** ।	...	१,२,३,४,५, ६, ७–अनपायनी ; (सो अनपायिनि)
५।३३।५	सुनि **प्रभु** वचन कहहिँ कपि बृंदा ।	...	१,२,३,४,५,६–प्रभु ; ७–कपि
५।३४।५	जासु सकल मंगलमय **कीती** ।	...	१,२,३,४,५,६–कीती ; ७–रीती
५।३५	सहि सक न भार **उदार** अहिपति, बार बारहिँ **मोहई** ।	...	१,२,३,४,५,६–उदार ; ७–अपार १,२,३,४,६,७–वारहि मोहई ; ५–बार बिमोहई
५।३६।६	मंदोदरी हृदय कर **चिंता** ।	...	१,२,३,४,५,६–चिंता; ७–चींता
५।४०	सीता **देहु** राम कहुँ, अहित न होइ तुम्हार ।	...	१,२,३,४,५,६–देहु ; ७–देव
५।४०।३	जियसि सदा **सठ** मोर जिआवा ।	...	१, २, ३, ४,५,७–सठ; ६–सब
५।४३।२	जन्म कोटि अघ **नासहिँ** तबहीँ	...	१, २, ३,४,५, ६–नासहिँ ; ७–नासौं
५।४३।७	लछिमन **हनइ** निमिष महु तेते ।	...	१, २, ३, ४, ५, ६–हनइ; ७–हतहिं
५।४४।५	आनन अमित मदन **मन** मोहा ।	...	१,२,३,४,५,७–मन; ६–छबि
५।४६।१	लोभ मोह **मच्छर** मदमाना ।	...	१,२–मछर; ६–मच्छर; ३,४,५,७–मत्सर ।
५।४८	सगुन उपासक **परहित,** निरत नीति दृढ़ नेम ।	...	१, २, ३, ४,५,६–परहित; ७–परम हित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५।४६ जरत बिभीषन **राखेउ**, दीन्हेउ राजु अखंड ।	... १,२–राखेउ; ३,४,५,६–राखा; ७–राखे; (राखेऊ)
५।४९।६ अति अगाध दुस्तर **सब** भाँती ।	... १,२,३,४,५,६–सब; ७–बहु
५।५१।२ **सकल** बाँधि कपीस पहिँ आने ।	... १, २, ३, ४, ५, ६–सकल; ७–ताहि...कपिपति
५।५१।३ कह सुग्रीव सुनहु सब **बानर** ।	... १,२,३,४,५,६–बानर; ७–बनचर
५।५१।७ सुनि लछिमन **सब** निकट बोलाए ।	... १,२,३,४,५,६–सब; ७–तब
५।५२।३ कहसि न **कस** आपन, कुसलाता ।	... १,२–कस; ३, ४, ५, ६,७–सुक
५।५२।४ पुनि कहु **खबरि** बिभीषन केरी । जाहि मृत्यु	... १, २, ३, ४, ५,६–खबरि-जाहि ७–कुसल-जासु
५।५२।५ करतु राजु लंका सठ **त्यागी** ।	... १,२,३,४,५,६–त्यागी; ७–त्यागा
५।५३।३ कपिन्ह बाँधि **दीन्हे** दुख नाना ।	... १, २, ३, ४, ५–दीन्हे; ६,७–दीन्हेउ
५।५३।८ अमित नाम भट **कठिन** कराला ।	... १,२,४,५,६–कठिन ; ३–कठिन्ह; ७–बिकट
५।५४ द्विविद मयंद नील नल, **अंगद गद बिकटासि** ।	... १,५,६–अंगद गद बिकटास्य ; ४–अंगदादि बिकटास्य ; २,३–अंगद गद बिकटासि ; ७–अंगदादि बिकटासि
५।५४ दधिमुख केहरि **निसठ सठ**, जामवंत बल रासि ।	... १,२,३,४,५–निसठ सठ ; ६,७–कुमुद गव
५।५५ रावन **काल** कोटि कहुँ, जीत सकहिँ संग्राम ।	... १, २, ३, ४, ५, ६–काल ; ७–कालै
५।५५।७ बिजय बिभूति कहाँ **जग ताके** ।	... १,२,३,४,५–जग ताके ; ६,७–लगि ताके
५।५५।८ **सुनि** खल बचन **दूत** रिस बाढ़ी ।	... १,३,४,५,७–दूत; २,६–दूतहि
५।५६ **होइ** कि राम सरानल, खल कुल सहित पतंग ।	१,२,३,४,५,६–होहि ; ७–होसि राम सर अनल खल जनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५।५६।६	मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु **करिही** ।...	१,२,४,५,६–करिही; ३–करिहीं; ७–करिहहिं घरिहहिं
५।५७।४	ऊसर बीज **बोए** फल जथा । ...	१,२,३–बोए ; ७–बोये ; ६–बए ; ४,५–बये
५।५७।८	बिप्र रूप **आएउ** तजि माना । ...	१,२,४–आए ; ३,५,७–आएउ, ६–आए
५।५८	बिनय न मान खगेस सुनु, डाटेहि पइ **नवै** नीच । ...	१,२,४,५,६,७–नव ; ३–नवै
५।५८।४	प्रभु आयसु जेहि कहँ **जसि** अहई ।	१,२,५,६,७–जस ; ३,४–जसि
५।५६	**सुनत** बिनीत बचन अति,··· ...	१, २, ३, ४, ५, ६–सुनत ; ७–सुनतहि
५।६०	सुख भवन संसय समन **दवन**, बिषाद रघुपति गुन गना । ...	१,२,३,६–दवन ; ४,५,७–दमन
५।६०	तजि सकल आस भरोस गावहि, सुनहि संतत **सठ** मना । ...	१,२,३,४,५,६–सठ ; ७–सुठि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंका कांड

६।श्लो०।	नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं, **श्री शंकरं मन्मथारिं।** ...	१,२,३,४,७–श्रीशंकरं मन्मथारिं; ५,६–कन्दर्पहं शंकरं; (श्रीशंकर कामदम)
६।श्लो०।	खलानां **दंडकृद्योसौ**	१,४,५–दंड कृद्योसौ ; ६–कृत यो सौ ; ७–कृद्योसि ; २, ३–कृद्योऽसौ
६।०।७	सकल सुनहु बिनती **कछु** मोरी। ...	१,२,३,४,५–कछु ; ६,७–एक
६।१	अति उतंग **गिरि पादप** ... **नीलहि** ...	१,२,३,४,५–गिरि पादप; ६,७–तरु शैल गन ; १,२,३,४,५,६–नीलहि ; ७–नील कहँ
६।१।४	करिहौं इहाँ संभु **थापना**। ...	१, २, ३, ४, ५, ६–थापना ; ७–अस्थापना
६।१।७	सिव द्रोही मम **भगत** कहावा। ...	१,२,३,४,५,६–भगत ; ७–दास
६।२।१	**जे** रामेस्वर दरसनु करिहहिं। ते तनु तजि **मम लोक** सिधरिहहिं। ...	१,२,३,४, ५, ६, ७–जे;...मम; ६–हरि; (जो)
६।२।४	मम कृत सेतु जो दरसनु **करिही** ।... **तरिही**	१,२,३,४,५,६–करिही···तरिही; ७–करिहहिं···तरिहहिं
६।२।५	राम बचन सबके **जिय** भाए। ...	१,२,३,४,५,६–जिय ; ७–मन
६।२।७	**बाँधा** सेतु नील नल नागर। ...	१,२,३,४,५–बाँधा; ६,७–बाँधेउ
६।३।५	**मकर नक्र नाना** झख ब्याला। ...	१,२,३,४,५,७–मकर नक्र नाना झख ; ६–नाना मकर नक्र झख
६।३।९	चला कटकु **प्रभु आयसु पाई**। ...	१,२,३,४,५,७–प्रभु आयसु पाई; ६–कछु बरनि न जाई।
६।४।५	रितु **अरु कुरितु** काल गति त्यागी।	१,२,३,४,५–रितु अरु कुरितु ; ६–ऋतु अनऋतु ; ७–ऋतु अनऋतुहि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।५ **बाँध्यो** बन निधि नीर निधि। ... १,४,५–बाँध्यो ; ३–बाँध्यो ; २, ६–बाध्यो ; ७–बाँधे

६।५।१ **निज बिकलता बिचारि** बहोरी। ... १, २, ३, ४, ५–निज बिकलता बिचारि ; ६,७–व्याकुलता निज समुझि

६।५।६ खलु खद्योत **दिनकरहि** जैसा। ... १,२,३,४,५,६–दिनकरहि ; ७–दिवाकर

६।७ अस कहि **नयन नीर भरि,**
गहि पद कंपित गात। ... १,२,३,४,५–नयन नीर भरि ; ६,७–लोचन बारि भरि

६।७ नाथ भजहु **रघुनाथहि,**
अचल होइ अहिवात। ... १,२,३,४,५–रघुनाथहि अचल होइ अहिवात; ६,७–रघुबीर पद मम अहिवात न जात

६।७।६ काल **बस्य** उपजा अभिमाना। ... १, २, ३, ४, ५–बस्य ; ६, ७–बिबस

६।७।७ सभा आइ मंत्रिन्ह **तेहिँ** बूझा। ... १,३,४,५–तेहिँ ; २,६–तेहि ; ७–सन

६।७।८ बार बार **प्रभु पूछहु** काहा। ... १,२,३,६–प्रभु पूछहु ; ४, ५–पूछहु प्रभु ; ७–प्रभु बूझहु

६।८ **सब के बचन** श्रवन सुनि··· ... १,२,३,४,५,७–सब के बचन; ६–बचन सबहि के

६।८।१ कहहिँ सचिव **सठ** ठकुर सोहाती। १,२,३–सठ ; ४,५,६,७–सब

६।८।८ **अइसे नर** निकाइ जग अहहीँ। .. १,२,३–अइसे ; ४,५,६–अैसे ; ७–ऐसे

६।८।१० **सीता** देइ करहु पुनि प्रीती। ... १, २, ३, ४, ५, ७–सीता ; ६–सीतहि

६।९।८ लागे **किन्नर** गुन गन गावन। ... १,२,३,४,५–किन्नर ; ६–किन्नर गंधर्व ; ७–गंधर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।१० परम प्रबल रिपु सीस पर, तद्यपि सोच न त्रास।	... १,२,३-तद्यपि सोच न त्रास; ४,५-तदपि सोच नहिँ त्रास; ६-तदपि न कछु मन त्रास; ७-तदपि न तेहि कछु त्रास
६।१०।२ सिखर एक उतंग अति देखी। परम रम्य सम सुभ्र बिसेखी।	... १,२,३,४,५-सिखर एक उतंग अति देखी; ६, ७-सैल सृंग एक सुंदर देखी; १,२,३,४,५-परम रम्य; ६,७-अति उतंग
६।१०।४ तापर रुचिर मृदुल मृगछाला।	... १,२,३,४,५-तापर; ६, ७-तेहि पर
६।११ एहि बिधि कृपा रूप गुन, धाम रामु आसीन	... १,२,३,४,५,७-कृपा रूप गुन; ६-करुना सील गुन
६।११ धन्य ते नर एहि ध्यान जे, रहत सदा लयलीन।	... १,२,३,४,५,७-धन्य ते नर एहि ध्यान; ६-ते नर धन्य जे ध्यान एहि
६।१२ कह हनुमंत सुनहु प्रभु, ससि तुम्हार प्रिय दास।	... १,२,३,४,५-हनुमंत; ६, ७-मारुत सुत; १,२,३,४,५,७-प्रिय; ६-निज
६।१२ दछिन दिसि अवलोकि प्रभु, बोले कृपानिधान।	... १, २, ३, ४, ५, ७-दछिन दिसि अवलोकि प्रभु; ६-दच्छिन दिसा बिलोकि पुनि
६।१२।४ लंका शिखर उपर आगारा।	... १,२,३,४,५,७-उपर; ६-रुचिर
६।१२।७ सोइ रव मधुर सुनहु सुर भूपा।	... १,२,३,४,५-मधुर; ६,७-सरस
६।१३।४ मुकुट परे कस असगुन ताही।	... १,२,३,४,५-परे; ६,७-खसे
६।१३।८ जानि मनुज जनि हठ उर धरहू।	.. १,२,७-हठ उर; ६-मन हठ; ३,४,५-हठ मन
६।१५ मनुज बास सचराचर, रूप राम भगवान	... १,२,३,४,५,७-सचराचर; ६-चर अचर मय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।१५।२	नारि सुभाउ सत्य सब कहहीँ । ...	१,२,३–सत्र ; ४,५,६,७–कवि
६।१५।६	एहि बिधि कहेउ मोरि प्रभुताई ।...	१, २–विधि कहहु ; ७–बिधि कहेउ ; ३, ४, ५–बिधि कहेहु ; ६–मिसि कहिहि
६।१५।७	समुझत सुखद सुनत भय सोचनि ।	१,३,४,५,७–मोचनि ; २, ६–सोचनि
६।१६	एहि बिधि करत बिनोद बहु, ... प्रात प्रकट दस कंध ।	१,२,३,४,५–एहि बिधि करत बिनोद बहु प्रात प्रगट ; ६,७–बहु बिधि जल्पेसि सकल निसि प्रात भए
६।१६	सहज असंक लंकपति, ... सभा गएउ मद अंध ।	१,२,३,४,५,७–लंकपति ; ६–सुलंकपति
६।१६	मूरुख हृदय न चेत, ... जौँ गुर मिलहिँ बिरंचि सिव ।	१,३,४,५–सिव ; २–सम ; ६, ७–सत
६।१६।३	सुनु सरवज्ञ सकल उर बासी । बुधि बल तेज धर्म गुन रासी ।	१,२,३,४,५–उर बासी ; ६,७–गुन रासी ; १,२,३,४,५–बुधि बल तेज धर्म गुन रासी ; ६,७–सत्य संध प्रभु सब उर बासी
६।१६।८	रिपु सन करेहु बतकही सोई । ...	१,२,३,४,५,७–सन ; ६–सैं
६।१७।३	खेलत रहा होइ गै भेंटा । ...	१, २, ३, ५–होइ गै ; ७–तासु भइ ; ४,६–सो होइ गइ
६।१८।४	अंगद दीख दसानन बैसें ।···जैसे ।	१,२,३,४–बैसे···जैसे ; ५,६,७–बैसा···जैसा
६।१९।४	जीतेहु लोक पाल सब राजा । ...	१,२,३,४,५–सब ; ६,७–सुर
६।२०	आरत गिरा सुनत प्रभु, ... अभय करैगो तोहि ।	१, २, ३, ४, ५, ७–आरत गिरा सुनत प्रभु ; ६–सुनतहि आरत बचन प्रभु १, २, ३,६–करै गो ; ४,५,७–करहिँ गे ;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।२०।१ रे कपि पोत **बोलु** सँभारी।	... १,२,३,५, ६, ७-बेलु, ४-न बोल
६।२०।३ तासों कबहुँ भई ही भेंटा।	... १,२,३,४,६-ही ; ७-हुइ ; ५-रही
६।२०।४ **रहा** बालि बानर मैं जाना।	... १,२,३,४,५-रहा ; ६, ७-हाँ बाली
६।२०।६ गर्भ न **गएहु व्यर्थ** तुम्ह जाएहु।	... १, २, ३, ४,५, ६-गएहु व्यर्थ; ७-गयहु बृथा; २-गएउ
६।२१ अंधौ **बधिर** न अस कहहि, नयन कान तव बीस।	... १,२,३,४,५,७-बधिर;...कहहि; ६-बहिर;...कहइ
६।२१।६ **देखी** नयन दूत रखवारी।	... १,२,३,४,५-देखी;६,७-देखिउँ
६।२१।८ पावा दरसु **हमहुँ** बड़ भागी।	... १,३,४,५,७-हमहुँ; २,६-महूँ;
६।२२।४ जामवंत मंत्री अति **बूढ़ा**।	... १,२,३,४,५,७-बूढ़ा ; ६-मूढ़ा
६।२२।६ **सुनत बचन कह** बालि कुमारा।	... १,२,३,४,५-सुनत बचन कह ; ६,७-सुनि हँसि बोलेउ
६।२२।८ **सुनि अस बचन सत्य** को कहई।	१,२,३,४,५,७-सुनि अस बचन; ६-को अस झूठ सुनै
६।२३ **सत्य नगरु कपि जारेउ**, बिन प्रभु आएसु पाइ।	... १, २, ३, ४, ५-सत्य नगर कपि जारेउ ; ६-अब जानेउ पुर दहेउ कपि ; ७-अब जाना पुर दहेउ कपि
६।२३ **फिरि न गएउ सुग्रीव** पहिं, तेहि भय रहा लुकाइ।	... १,२,५-फिरि न गएउ सुग्रीव ; ३,४-फिरि न गयो सुग्रीव ; ६-गयेउ न फिरि निज नाथ ; ७-फिरि न गयउ निजनाथ
६।२३ तदपि कठिन दसकंठ सुनु, **छत्र** जाति कर रोष।	... १,२,३,४,६-छत्र ; ५,७-छत्रि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।२३	जो प्रति पालै तासु हित, करै उपाय अनेक ।	... १,२,३,४,५,७–जो ; २,६–जै
६।२३।२	पति हित करै धर्म निपुनाई ।	... १,२,३,४,५,६–करै ; ७–धरै
६।२३।१२	कहु रावन रावन जग केते ...जेते ।	... १,२,३,४,५,७–कहु ; ६–सुनु ; १,२,३,४,५,६–जेते ; ७–तेते
६।२४	इन्ह महुँ रावन तैं कवन, सत्य वदहि तजि माँष ।	... १,२,३,४,५, ७–इन्ह; ६–तिन्ह
६।२४।६	जिन्ह के दसन कराल न फूटे ।	... १,२,३,४,५,६–जिन्ह; ७–तिन्ह
६।२५	रे कपि बर्बर खर्ब खल, अब जाना तव ज्ञान ।	... १,३,४,५-अब जाना तव ज्ञान; ... २,६–अब जाना तव जान; ७–तब न जान अब जान
६।२५।४	सो नर क्यौं दससीस अभागा ।	... १,२,३,४, ५, ६–दससीस; ७–दसकंठ
६।२६।३	मूढ़ बृथा जनि मारसि गाला ।	... १,२,३,४,५,७–बृथा; ६–मुधा
६।२६।५	ते तव सिर कंदुक सम नाना ।	... १,२,३,४,५–सम; ६,७–इव
६।२७	कुंभकरन अस बंधु मम, सुत प्रसिद्ध सक्रारि ।	... १,२,३,४,५, ६–अस; ७–सम
६।२७।२	सूर न होहिं ते सुनु सब कीसा ।	... १, २, ३–सब; ४, ५, ७–सठ; ६–जड़
६।२७।८	हरि गिरि मथन निरखि मम बाहू ।	... १,७-निरखि; २, ३, ४, ५, ६–निरखु
६।२८	हुने अनल अति हरष बहु, बार साखि गौरीस ।	... १,२,३,४,५–अति हरष बहुबार साखि गौरीस; ६,७–महुँ बार बहु हरषि साखि गिरीस ।
६।२८।१०	इन्द्रजालि कहुँ कहिअ न बीरा ।	... १,२,३,४,५–इन्द्रजालि; ६,७–बाजीगर
६।२६	जरहि पतंग मोह बस, भार बहहिं खर वृंद ।...कहावहि...	... १,२,३,४,५–मोह;... कहावहिं; ६,७–विमोह...सराहिअहि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।२६।३ बार बार अस कहइ कृपाला। ...	१, २, ३, ४, ५-अस कहइ; ६,७-इमि कहइ ; (अस कहै)
६।२६।६ सूने हरि आनिहि परनारी। ...	१,२,६-हरि आनिहि; ३,४,५-हरि आनेहि; ७-हरि आनहि।
६।३० तब जुवतिन्ह समेत सठ, जनक सुतहि लै जाउँ ...	१, २, ३, ४-तब जुवतिन्ह; ५-तव जुवतीन्ह; ६,७-मंदोदरी
६।३०।७ रे कपि अधम मरन अब चहसी। ...	१,२,३,४,५,७-अधम; ६-पोत
६।३१ अगुन अमान जानि तेहि, दीन्ह पिता बनबास।...... पुनि निसि दिन ममत्रास। ...	१, २, ३, ४, ५, ७-जानि; ... निसिदिन; ६-विचारि... अनुदिन
६।३१।६ गिरत सँभारि उठा दसकंधर। ...	१,२,३,४,५-सँभारि उठा दसकंधर ; ६, ७-दसानन उठेउ संभारी
६।३२ तरकि पवन सुत कर गहेउ, आनि धरे प्रभु पास। ...	१,२,३,४,५-तरकि पवन सुत कर गहेउ ; ७-कूदि पवन सुत कर गहेउ ; ६-कूदि गहे कर पवन सुत
६।३२ { उहाँ सकोप दसानन, सब सन कहत रिसाइ। धरहु कपिहि धरि मारहु, सुनि अंगद मुसुकाइ। ...	१,२,३,४,५-भा० का पाठ है ; ६,७-उहाँ कहत दसकंध रिसाई। ... धरि मारहु कपि भागि न जाई ॥
६।३२।१ एहि बधि बेगि सुभट सब धावहु।...	१,२,३,४,६-बधि ; ५,७-बिधि
६।३२।४ बल बिलोकि बिहरति नहिं छाती।...	१, २, ३, ७-बिहरति ; ४, ५-बिहरत ; ६-बिहरी
६।३२।५ खल मल रासि मंद मति कामी।...	१, २, ३, ४, ५,६,७-मलरासि ; (मलराजि)
६।३२।६ भयेसि काल बस खल मनुजादा। ...	१,२,३,४,५-खल ; ७-सठ ६-निसि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।३३।३ गूलरि फल समान **तव** लंका। ...	१,२,३,४,५,७-तव ; ६-यह
६।३३।८ **समुझि राम प्रताप** कपि कोपा।...	१,२,३,४,५-समुझि राम प्रताप; ६,७-राम प्रताप सुमिरि
६।३४।१ उठा आपु **कपि के परचारे**। ...	१,२,३,४,५-कपि के परचारे ; ६,७-जुवराज प्रचारे
६।३५ रिपु बल **धरषि** हरषि कपि, बालि तनय बल पुंज। ...	१, २, ३, ४, ५, ७-धरषि ; ६-धरषित
६।३५ **पुलक सरीर नयन जल,** गहे राम पद कञ्ज। ...	१, २, ३, ५-पुलक सरीर नयन जल ; ६, ७-सजल सुलोचन पुलक तनु
६।३५ मंदोदरी **रावनहि,** बहुरि कहा समुझाइ। ...	१,२,३,४,५-रावनहि ; ७-तब रावनहि ; ६-निसाचरहिं
६।३५।३ जाके दूत केर **यह** कामा। ...	१, ३, ४, ५, ७-यह ; २-येह ; ६-अस
६।३५।६ जारि **सकल पुर** कीन्हेसि छारा।...	१,२,३,४,५,७-सकल पुर ; ६-नगर सब
६।३५।८ पति रघुपतिहि नृपति **जनि** मानहु।...	१,२,३,४,५,७-जनि; ६-मति
६।३५।१० जनक सभा अगनित **भुअपाला**। रहे तुम्हौ बल **अतुल** बिसाला। ...	१,२,४,५,७-भूपाला; ३-भुअपाला; ६-महिपाला; १,२,३,४,५-अतुल; ६,७-बिपुल
६।३७ दुइ सुत **मरे** दहेउ पुर... ...	१-मरेउ; २-मरे; ३,४,५,७-मारेउ; ६-मारे
६।३७ कृपासिंधु **रघुनाथ** भजि... ...	१, २, ३, ४, ५,७-रघुनाथ; ६-रघुपतिहि
६।३७।१ साम **दान** अरु दंड बिभेदा। ...	१,२,३,४,६-दान; ५,७-दाम
६।३८ **तेहि परिहरि गुन आए,** सुनहु कोसलाधीस। ...	१,२,३,४,५-तेहि परिहरि गुन आए; ६,७-आए गुन तजि रावनहिं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।३६ **जयति राम जय लछिमन,** जय कपीस सुग्रीव ।	... १,२,३,४,५–जयति राम जय लछिमन; ६,७–जयति राम भ्राता सहित
६।३८ गर्जहिँ **सिंहनाद** कपि, भालु महाबल सीव	... १,२,३,४,५–सिंहनाद; ६,७–केहरिनाद
६।३९।३ छुधावंत **सब निसिचर** मेरे ।	... १, २, ३, ४, ५–सब निसिचर; ६,७–रजनीचर
६।४१ एकु एक **निसिचर गहि,** पुनि कपि चले पराइ ।	... १,२–निसिचर गहि; ३,४,५–गहि निसिचर; ६, ७–गहि रजनिचर
६।४१।१ मर्दहिँ निसिचर **सुभट** बरूथा ।	... १, २, ३, ४, ५, ७–सुभट; ६–निकर
६।४१।३ चले **निसाचर** निकर पराई ।	... १,२, ३, ४, ५,७–निसाचर; ६–तमीचर
६।४१।४ रोवहिँ **बालक आतुर** नारी ।	... १,२,३,४,५–बालक आतुर; ६,७–आरत बालक
६।४१।६ निज दल बिचल **सुनी तेहि** काना । **फेरि** सुभट लंकेस रिसाना ।	... १,२,३,४,५–सुनी तेहि; ६,७–सुना जब; सुना तेहि); १,२,३,४,५,६,७–फेरि; (फिरे)
६।४१।७ जो रन बिमुख **फिरा मैं जाना** । **सो मैं हतब** कराल कृपाना ।	... १,२,६,७–फिरा मैं जाना; ३,४,५–सुना मैं काना; १, २, ३, ४,५, ७–सो मैं हतब; ६-तेहि मारिहौं
६।४१।८ समर भूमि भए **बल्लभ** प्राना ।	... १,२,३,४,५–बल्लभ ; ७–दुर्लभ ; ६–दुल्लभ
६।४१।९ **चले क्रोध करि सुभट** लजाने ।	... १,२,३,४,५,७–चले क्रोध करि सुभट ; ६–फिरे क्रोध करि बीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।४२	ब्याकुल किए भालु कपि, परिघ त्रिसूलन्हि मारि।	... १,२,३–ब्याकुल किए; ४,५,७–ब्याकुल कीन्हे; ६–कीन्हे ब्याकुल ··· प्रचंडन्हि मारि
६।४२।३	निल दल **बिकल सुना** हनुमाना।	१,२,३–बिकल सुना; ६–बिचल सुनी; ४,५,७–बिचल सुना
६।४२।८	**दुसरे** सूत बिकल तेहि जाना।	... १,२,३,४,५,६–दुसरे; ७–दूसर
६।४३।१	जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध द्वौ **बंदर**।	... १–बंनर; २,५,७–बंदर; ३,४,६–बानर
६।४३।२	रावन भवन चढ़े **द्वौ** धाई।	... १,२,३,४,५–द्वौ; ६,७–तब
६।४३।७	**गर्जि परे** रिपु कटक मझारी।	... १,२,३,४,५–गर्जि परे; ६–कूदि परे; ७–कूदि परेउ
६।४४	एक एक **सो मर्दहिं**, तोरि चलावहिं मुण्ड।	... १,२,३,४,५–सो मर्दहिं ७–सन मर्दहिं; ६–सन मर्दि करि
६।४५	कूदे जुगल **बिगत स्रम**, आए जहँ भगवन्त।	... १,२,३,४,५–बिगत स्रम; ६,७–प्रयास बिनु
६।४५।७	महाबीर निसिचर सब कारे।	... १,२,३,४,५–महाबीर निसिचर सब कारे; ६,७–बीर तमीचर सब अतिकारे।
६।४६	एकहि एकु न **देखई**, जहँ तहँ करहिं पुकार।	... १,२–देखई; ६,७–देख तब; ... ३,४,५–देखइँ
६।४६।१	सकल मरमु रघुनायक जाना।	... १,२,३,४,५–सकल मरमु रघुनायक जाना; ६,७–यह सब मरम राम बिभु जाना
६।४६।४	ज्ञान उदय जिमि **संसय** जाहीं	... १,२,३,४,५,७–संसय; ६–दुख सब
६।४६।५	धाए **हरषि** बिगत स्रम त्रासा।	... १,२,३,४,५,७–हरषि; ६–कोपि
६।४७	**कछु मारे कछु घायल**, कछु गढ़ चढ़े पराइ।	... १, २, ३, ४, ५–कछु मारे कछु घायल... ६,७–कछु घायल कछु रन परे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।४७ **गर्जहिं भालु बली मुख,** रिपु दल बल बिचलाइ। ...	१,२,३,४,५–गर्जहिं भालु बली-मुख ; ६,७–गर्जहिं मर्कट भालु भट
६।४७।३ उहाँ दसानन **सचिव** हँकारे। ...	१, २, ३, ४, ५, ७–सचिव; ६–सुभट
६।४७।८ वेद पुरान जासु जस **गायो** ।...**पायो**।	१, २,३,४, ५–गायो...पायो...; ६,७–गावा...पावा
६।४८ सिव बिरंचि जेहि सेवहिँ, तासो कवन बिरोध। ...	१,२,३,४,५–सिव बिरंचि जेहि सेवहिँ; ६,७–जेहि सेवहिँ सिव कमल भव।
६।४८।२ करिआ **मुँह** करि जाहि अभागे। ...	१,२,७–मुँह; ३,४,५,६–मुख
६।४८।४ बध्यो चहत एहि **कृपानिधाना**। ...	१, २, ३, ४,५,७–कृपानिधाना; ६–श्री भगवाना।
६।४९ गहि सैल **तेहि** गढ़ पर चलावहिँ	१,२,३,४,५,७–तेहि; ६–तेइ
६।४९ **उतर्‌यौबीरु दुर्ग ते,** सन्मुख चल्यौ बजाइ। ...	१,२,३,४,५- उतर्‌यौ बीर; ६–उतरि दुर्ग ते बीर बर; ७–उतरि बीर बर दुर्ग ते
६।४९।२ आजु **सबहि** हठि मारौं ओही। ...	१,२,३,४,५–सबहिं ; ६, ७–सठहिं
६।४९।४ अतिसय **क्रोध** स्रवन लगि ताने। ...	१,२,३,४,५,७–क्रोध; –कोप
६।४९।७ **जहँ तहँ भागि चले** कपि रीछा। ...	१,२,३,४,५–जहँ तहँ भागि चले ; ६,७–भागे भय व्याकुल
६।५० **दस दस सर सब मारेसि,** परे भूमि कपि बीर। ...	१,२,३,४,५–दस दस सर सब मारेसि ; ६,७–मारेसि दस दस बिसिख सब
६।५० **सिंहनाद करि गर्जा, मेघनाद बलबीर।**	१, २, ३, ४, ५–सिंहनाद करि गरजा...; ६;७–सिंहनाद गर्जत भएउ मेघनाद रनधीर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।५०।२	**महासैल एक तुरत** उपारा ।	... १, २, ३,४,५–सैल एक तुरत ; ६,७–महीधर तमकि
६।५०।५	**रघुपति निकट** गएउ घननादा	... १,२, ३, ४, ५–रघुपति निकट; ६,७–राम समीप
६।५०।७	देखि **प्रताप** मूढ़ खिसिआना ।	१,२, ३, ४, ५,७–प्रताप ; ६–प्रभाउ
६।५२	आएसु **माँगि** राम पहिँ, अंगदादि कपि साथ ।	... १, २, ३, ४,५–माँगि; ७–माँगी; ६–माँगेउ
६।५२	लछिमन चले **क्रुद्ध होइ**, बान सरासन हाथ ।	... १,२,३–क्रुद्ध होइ ; ६,७–सकोप अति ; ४,५–क्रुद्ध है
६।५४	जगदाधार **सेष** किमि, उठइ चले खिसिआइ ।	... १,२,३,४,५–सेष ; ६,७–अनंत
६।५५	**राम पदारविंद** सिर, नाएउ आइ सुखेन ।	... १, २, ३, ४, ५–रामपदारविंद ; ६,७–रघुपति चरन सरोज
६।५५।४	तासु पंथ को रोकन **पारा** ।	... १, २, ३–पारा ; ४, ५–रोकनहारा ; ६,७–रोकनिहारा
६।५५।५	छाँडहु नाथ **मृषा** जल्पना ।	... १,२,३,४,५–मृषा ; ६,७–बृथा
६।५५।७	**मैं तैं मोर मूढ़ता** त्यागू । महा मोह निसि **सूतत** जागू ।	... १, २, ३, ४, ५–मैं तैं मोर मूढ़ता;६,७–अहंकार ममदा मद; ७–सोवत ;
६।५७।२	मानहु सत्य बचन **कपि** मेरा ।	... १, २, ३, ४, ५, ७–कपि ; ६–प्रभु
६।५७।३	निसिचर निकट गएउ **कपि** तबहीं ।	१,३,४,५–कपि ; ६,७–सो
६।५८	बिनु फर **सायक** मारेउ, चाप स्रवन लगि तानि ।	... १,२,३,४,५,७–सायक ; ६–सर तकि
६।५८।२	सुनि प्रिय बचन भरतु **तब** धाए ।	... १,२,३,४,५,७–तब ; ६–उठि
६।५६।२	कपि सब चरित **समास** बखाने ।	... १,२,३,४,५,७–समास; ६–संछेप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।६० तव प्रताप उर राखिप्रभु, जैहौं नाथ तुरंत। अस कहि आयेसु पाइ, पद बंदि चलेउ हनुमंत।	... १,२,३,४,५-भा० का पाठ है ; ६, ७-तव प्रताप उर राखि गोसाईं। जैहौं राम बान की नाईं॥ भरत हरषि तब आयसु दएऊ। पद सिर नाइ चलत कपि भएऊ॥
६।६० मन महुँ जात सराहत, पुनि पुनि पवन कुमार।	... १,२,३,४,५,७-मन महुँ जात सराहत ; ६-जात सराहत मनहि मन
६।६०।११ जैहौं अवध कौन मुहुँ लाई।	... १, ३, ७-मुहुँ ; २,४,५-मुह ; ६-मुख
६।६१ प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भए बानर निकर।	... १, २, ३, ४, ५-प्रलाप ; ६,७-बिलाप
६।६१।६ ब्याकुल कुंभकरन पहिँ आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा।	... १,२,३,४,५-आवा, जगावा; ६, ७-गयऊ करि बहु जतन जगावत भएऊ
६।६१।८ कुंभकरन बूझा कहु भाई।	१,२,३,४,५,७-कहु ; ६-सुनु
६।६२।६ नारद मुनि मोहि ज्ञान जो कहा, कहतेउँ तोहि समय निर्बहा।	... १, २, ३, ४,५-कहा...निर्बहा ; ६,७-कहेऊ... निर्बहेऊ
६।६२।७ लोचन सुफल करौं मैं जाई।	१,२,३,४,५,७-मैं ; ६-निज
६।६३ राम रूप गुन सुमिरत, मगन भएउ छन एक।	... १,२,३,४,५-सुमिरत ; ६,७-सुमिरि मन
६।६३।३ देखि बिभीषनु आगे आएउ। परेउ चरन निज नाम सुनाएउ।	... १,२,३,४,५,७-में भा० का पाठ है ; ६-गएऊ। पद गहि नाम कहत निज भएऊ
६।६४।१ बंधु बचन सुनि चला बिभीषन।	१,२,३,४,५,७-चला ; ६-फिरा
६।६४।४ लिए उठाइ बिटप अरु भूधर।	... १,२,३-उठाइ ; ४,५-उठाय; ६,७-उपारि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।६४।५ करहिँ भालु कपि **एक एक** बारा।	१,२,३,६–एक एक ; ४,५,७–एकहि
६।६४।६ **मुरयौ न** मनु तनु टरयौ न टारयौ। जिमि गज अर्क फलनि को मारयौ।	१,२,३,४,५–में भा० का पाठ है; ६,७–मुरै न मन तन टरै न टारा। जिमि गज अर्क फलन्हि कर मारा॥
६।६५ अंगदादि कपि **मुरुछित**, करि समेत सुग्रीव। ..	१,२,४,५–मुरुछित ; ३–मुछित ; ६,७–घाय बस
६।६५।५ **सुग्रीवहुँ** कै मुरुछा बीती।	१,२,३,४,५–सुग्रीवहुँ ; ६, ७–कपिराजहँ
६।६५।७ **गहेउ चरन गहि भूमि** पछारा।...	१,२,३,४,५–गहेउ चरन गहि ; ६,७–गहेसि चरन धरि धरनि
६।६५।८ जयति जयति जय कृपा निधाना। ...	१,२,३,४,५–में भा०का पाठ है ; ६,७–जय जय कारुनीक भगवाना
६।६५।९ नाक कान काटे **जिय** जानी। ...	१,२,३,४,५,७–जिय ; ६–सोइ
६।६६ एकहिँ बार **तासु** पर, **छाडेन्हि** गिरि तरु जूह। ...	१,२,३,४,५–तासु ; ६, ७–जो तासु ; १,२,६–छाड़ेन्हि ; ३,४,५,७–डारेन्हि
६।६६।६ मुरे सुभट **सब** फिरहिँ न फेरे। ...	१,२,३,४,५,७–सब ; ६–रन
६।६६।७ कुंभकरन कपि फौज **बिड़ारी**। ...	१,२,३,४,५,७–बिड़ारी ; ६–बितारी
६।६७ सुनु **सुग्रीव बिभीषन अनुज**, सभारेहु सेन। ..	१, २, ३, ४, ५–सुग्रीव बिभीषन अनुज ; ६, ७–सैामित्र कपीश तुम्ह सकल
६।६७।१ कर सारंग **साजि** कटि भाथा। **अरि दल दलन** चले रघुनाथा। ...	१,२,३,४, ५–साजि,...अरि दल अरि दल दलन ; ६,७–बिसिख, मृगपति ढवनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।६७।४ **जह तहँ चले बिपुल** नाराचा। ... १, २, ३, ४, ५–जहँ तहँ चले बिपुल; ६, ७–अति तब चले निसित

६।६७।७ लागत बान **जलद** जिमि गाजहिँ। ... १, २, ३, ४, ५, ७–जलद; ६–बनद

६।६८ पुनि **रघुबीर निषंग महुँ,** प्रबिसे सब नाराच। ... १,२,३,४,५–रघुबीर निषंग महुँ; ६,७–रघुपति के त्रोन महुँ

६।६८।१ **हति छन माँझ निसाचर** धारी।... १,२,३,४,५–हति छन माँझ निसाचर; ६, ७–हती निमिष महँ निसिचर

६।६८।२ **भा अति क्रुद्ध महाबल** बीरा। ... १,२,३,४,५,७–भा अति क्रुद्ध महा; ६–भएउ क्रुद्ध दारुन

६।६८।८ बिहँसा जबहिँ निकट **कपि** आए।.. १,२,३,४,५–कपि; ६–भट; ७–चलि

६।६९ **महानाद करि गर्जा,** कोटि कोटि गहि कीस। ... १,२,३,४,५–महानाद करि गर्जा; ६,७–गर्जत धाएउ बेग अति

६।७० करि चिक्कार घोर अति, धावा बदनु पसारि। हेति पुकारि। ... १,२,३,४,५–करि चिक्कार घोर अति......हेति; ६, ७–करि चिकार अति घोर तर...होत

६।७०।३ सरन्हि भरा **मुख सन्मुख** धावा। ... १,२,३, ४, ५, ७–मुख सन्मुख; ६–सनमुख सो।

६।७०।६ **सुर** दुंदुभी बजावहिँ हरषहिँ। ... १,२, ३, ४, ५, ७–सुर; ६–नभ, **अस्तुति करहिँ सुमन बहु** बरषहिँ १, २,३, ४, ५–अस्तुस्ति करहि सुमन बहु ; ६–जय जय करि प्रसून सुर; ७–जय जय करहि सुमन सुर

६।७१ स्रम बिंदु मुख राजीव लोचन, **अरुन तन** सोनित कनी ... १,२, ३, ४,५–अरु तन; ६,७–रुचिर तन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।७१	निसिचर अधम **मलाकर**, ताहि दीन्ह निज धाम । ...	१,२,३, ४, ५–मलाकर; ६,७–मलायतन
६।७१।३	निज मुख कहे **सुकृत** जेहि भाँती ।...	१,२,३,४,५–सुकृत, ६,७–धर्म
६।७२	मेघनाद **मायामय**, रथ चढ़ि गएउ अकास । ...	१, २, ३, ४, ५, ७–मायामय; ६–माया रचित
६।७२	गर्जेउ **अट्टहास करि**, भइ कपि कटकहि त्रास । ...	१, २, ३, ४, ५-अट्टहास करि; ६,७–प्रलय पयोद जिमि
६।७२।३	**दस दिसि रहे बान नभ** छाई । ...	१,२,३,४,५–दस दिसि रहे बान नभ; ६, ७–रहे दसहुँ दिसि सायक
६।७२।४	धरु धरु मारु **सुनिअ धुनि** काना ।...	१,२,३,४,५-सुनिअ धुनि; ६, ७–सुनहिं कपि
६।७२।१३	रन सोभा लगि **प्रभुहिँ** बधायो । **नाग पास** देवन्ह भय पायो । ...	१,२, ३, ४,५–प्रभुहि बँधायो; ७–आपु बधावा; १,२–नाग पास देवन्ह भय पायो; ३,४,५–नाग पास देवन्ह दुख पायो ६,७–देखि दसा देवन्हि भय पावा
६।७३	**गिरिजा** जासु नाम जपि, मुनि काटहिँ भव पास । **सोकि बंध तर आवै**, व्यापक विस्व निवास । ...	१, २, ३, ४,५,७–गिरजा; ६–खगपति; १,२,३,४,५–सो कि बंध तर आवै; ६,७–सो प्रभु आव कि बंध तर
६।७३।५	लागेसि **अधम** पचारै मोहीं । ...	१, २, ३, ४, ५–अधम; ६,७–पतित
६।७३।६	अस कहि **तरल** त्रिसूल चलायो । ...	१, २, ३, ४, ५, ७–तरल; ६–तीव्र
६।७३।७	परा **भूमि** घुर्मित सुरघाती । ...	१, २, ३, ४, ५,७–भूमि; ६–धरनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।७४	खगपति सब धरि खाए, माया नाग बरूथ। माया बिगत भए सब, हरषे बानर जूथ।	... १, २, ३, ४, ५ में भा० का पाठ है; ६, ७–पन्नगारि खाए सकल छन महँ ब्याल बरूथ। भए बिगत माया तुरत हरषे बानर जूथ।
६।७४।३	इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा। सुनहु नाथ बल अतुल उदारा।	... १, २, ३, ४, ५ में भा० का पाठ है; ६,७–सो सुधि पाइ बिभीषन कहई। सुनु प्रभु समाचार अस अहई
६।७४।५	नाथ बेगि **पुनि** जीति न जाइहि।	... १, २, ३, ४, ५–पुनि; ६,७–रिपु
६।७४।६	जामवंत **सुग्रीव** बिभीषन।	... १, २, ३, ४, ५,७–सुग्रीव; ६–कपिराज
६।७५	**रघुपति चरन नाइ सिरु,** चलेउ तुरंत अनंत। **सुभट** हनुमंत।	... १,२,३,४,५,७–रघुपति चरन नाइ सिर...सुभट; ६–बंदि राम पद कमल जुग...रिषभ
६।७५।२	**कीन्ह कपिन्ह सब** जग्य बिधंसा।	... १, २, ३, ४, ५,७–कीन्ह कपिन्ह सब; ६–तब कीसन्ह कृत
६।७५।१४	लछिमन मन अस मंत्र दृढ़ावा। एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा।	... १,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६, ७–एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा। अब बध उचित कपिन्ह भय पावा
६।७६	धन्य **धन्य तव जननी,** कह अंगद हनुमान।	... १,२,३,४,५–धन्य तव जननी; ६,७–सक्रजित मातु तव
६।७६।३	श्री **रघुनाथ** बिमल जसु गावहिं।	... १,२,३, ४, ५–रघुनाथ; ६,७–रघुबीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।७७ तब दसकंठ बिबिध बिधि, समुझाई सब नारि। नस्वर रूप जगत सब, देखहु हृदय बिचारि।	... १, २, ३, ४, ५–दसकंठ बिबिध बिधि ...जगत सब ; ६,७–लंकेस अनेक बिधि...प्रपंच
६।७७।१ आपुन मंद कथा सुभ पावन।	... १, २, ३, ४, ५,७–पावन; ६–भाव न
६।७८ गोमाय गीध करार खर रव, स्वान बोलहिं अति घने।	... १,२,३,४–बोलहिं ; ५,६,७–रोवहिं
६।७८।३ प्राबिट जलद मरुत जनु प्रेरे।	... १, २, ३, ४, ५, ६, ७–मरुत ; (पवन)
६।७८।८ प्रलय समय के घन जनु गाजहिं।	... १,२,३,४,५–प्रलय समय; ६, ७–महाप्रलय
६।७९ भिरे बीर इत रामहित, उत रावनहि बखानि।	... १,२,३,४–राम हित ; ५–राम कहि; ६,७–रघुपतिहि
६।८० सुनि प्रभु बचन बिभीषन, हरषि गहे पद कंज।	... १, २, ३, ४,५–सुनि प्रभु बचन बिभीषन; ६,७–सुनत बिभीषन प्रभु बचन
६।८० एहि मिस मोहि उपदेसेहु, राम कृपा सुख पुंज।	... १, २, ३,४, ५–एहि मिस मोहि उपदेसेहु; ७-एहि बिधि मोहि उपदेसे ; ६–एहि बिधि मोहि उपदेस दिअ
६।८० उत पचार दसकंधर, इत अंगद हनुमान।	... १,२,३–पचार दसकंधर; ४,५, ७–प्रचार दसकंधर ; ६–प्रचार दसकंठ भट
६।८०।६ उदर बिदारहिँ भुजा उपारहिँ। गहि पद अवनि पटकि डारहिँ।	... १, २, ३, ४, ५, ७–उपारहि... डारहिं; ६–उपाटहि...डाटहिं
६।८०।७ ऊपर ढारि देहिँ बहु बालू।	... १–ढारि; ३,४,५,६,७–डारि ; २–टारि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।८१	निज दल **बिचलत देखेसि**, बीस भुजा दस चाप। **रथ चढ़ि चलेउ दसानन**, फिरहु फिरहु करि दाप।	... १,२,३,४,५–बिचलत देखेसि··· रथ चढ़ि चलेउ दसानन;६,७–बिचल बिलोकि तेहि···चलेउ दसानन कोपि तब
६।८१।४	चला न अचल **रहा रथ** रोपी।	... १, २, ३, ४, ५, ७–रहा रथ; ६–महारथ
६।८२	**निज दल बिकल देखि कटि** कसि निषंग धनु हाथ। लछिमन चले **सक्रुद्ध** होइ, नाइ राम पद माथ॥	... १,२,३,४, ५–निज दल बिकल देखि कटि कसि...सक्रुद्ध होइ; ६–बिचलत देखि अनीक निज कटि...सरोष तब; ७–निज दल बिकल बिलोकि तेहि......कोपि तब
६।८२।४	कोटिन्ह आयुध रावन **डारे**।	... १,२,३,४,५,६–डारे ; ७–मारे
६।८२।७	परेउ **धरनि**-तल सुधि कछु नाहीं।	... १, २, ३, ४, ५–धरनि ; ६,७–अवनि
६।८३	ब्रह्मांड **भवन** बिराज जाके, एक सिर जिमि रज कनी।	... १,२,५,६–भवन ; ३,४,७–भुवन
६।८३	**देखि पवन सुत धाएउ**, बोलत बचन कठोर। **आवत कपिहि हन्यो तेहिँ**, मुष्टि प्रहार प्रघोर॥	... १, २, ३, ४, ५–देखि पवन सुत धाएउ···आवत कपिहि हन्यो तेहि; ६,७–देखत धाएउ पवन-सुत ··आवत तेहि उर महँ हतेउ
६।८३।१	जानु टेकि कपि भूमि न **गिरा**।	... १, २, ३, ४, ५, ६, ७–गिरा ; (परा)
६।८३।८	पुनि कोदंड बान गहि धाए। रिपु सन्मुख अति आतुर आए।	... १, २, ३, ४, ५, ७ में भा० का पाठ है; ६–धरि सर चाप चलत पुनि भए। रिपु समीप अति आतुर गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।८४ **राम बिरोध बिजय चह, सठ हठ बस अति अग्य।**	... १,२,३,४,५–राम बिरोध बिजय चह ; ६–जय चाहत रघुपति बिमुख ; ७–बिजय चहत रघुपति बिमुख
६।८४।३ पठवहु **नाथ** बेगि भट बन्दर।	... १,२,३,४,५–नाथ; ६,७–देव
६।८४।८ अस कहि अंगद **मारा** लाता।	... १, २, ३, ४, ५–मारा ; ६,७–मारेउ
६।८५ नहिँ चितव जब **करि कोप कपि**... गहि दसन्ह-लातन्ह मारहीँ।	१, २, ३, ४,५–करि कोप कपि; ६,७–कपि कोपि तब
६।८५ **जग्य बिधंसि कुसल कपि,** आए रघुपति पास। चलेउ **निसाचर** क्रुद्ध होइ, त्यागि जिवन कै आस॥	.. १,२,३,४,५–जग्य बिधंसि कुसल कपि...निसाचर; ६, ७–मख बिधंसि करि कुसल सब..... लंकपति
६।८५।५ इहाँ देवतन्ह **अस्तुति** कीन्ही।	... १, २, ३,४,५,७–अस्तुति ; ६–बिनती
६।८६ **सोभा देखि हरषि सुर,** बरषहिँ सुमन अपार।	... १,२,३,४,५–सोभा देखि हरषि सुर ; ६, ७–हरषे देव बिलोकि छबि
६।८६ जय जय जय करुना निधि, छबि बल गुन आगार।	... १, २, ३,४,५ में भा० का पाठ ... है; ६, ७–जय जय प्रभु गुन ग्यान बल धाम हरन महिभार।
६।८६।२ देखि चले सन्मुख कपि **भट्टा**। **घट्टा**।	... १,२,३,४,५,७–भट्टा . घट्टा ; ६–भटा...घटा
६।८६।३ जनु **दह** दिसि दामिनी दमंकहिँ।	... १,२,३,४,५,६–दह ; ७ दस
६।८६।४ **गर्जहिँ** मनहुँ बलाहक घोरा।	... १, २, ३–गर्जहिँ ; ४,५–गरजहिं; ६, ७–गर्जत
६।८६।१० स्रवहिँ सैल जनु निर्झर **भारी**	... १, २, ३, ५–भारी ; ४, ६,७–बारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।८७ कादर भयंकर रुधिर सरिता, चली परम अपावनी ।	... १,२,३,४,५–चली; ६,७-बढ़ी
६।८७ कादर देखि डरहिं तहँ, सुभटन्ह के मन चेन ।	... १,२,३,४,५–देखि डरहिँ तहँ; ६,७-देखत डरहिँ तेहि
६।८७।१० कोटिन्ह रुंड मुंड बिनु डोल्लहिँ ।	१,२,६–चल्लहिँ; ३,५–डोल्लहिँ; ४,७–डोलहि
६।८८ खप्परिन्ह खग्ग अलुभिक्त जुभ्भहिँ, सुभट भटन्ह ढहावहीं ।	... १, २,३,४,५–भटन्ह ढहावहीं; ६,७–सुरपुर गावहीँ
६।८८ बानर निसाचर निकर मर्दहिँ, राम बल दर्पित भए ।	... १, २, ३, ४, ५ में भा० का पाठ है; ६, ७–निसिचर बरूथ बिमर्दि गर्जहि भालु कपि दर्पित भए
६।८८ रावन हृदय बिचारा, भा निसिचर संघार ।	... १, २, ३, ४, ५–रावन हृदय बिचारा; ६, ७–हृदय बिचारेउ दसबदन
६।८८।४ हरषि चढ़े कोसलपुर भूपा ।	... १, २, ३, ४, ५–हरषि चढ़े; ६-बिहँसि चढ़े; (हरषि चले)
६।८८।६ लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची ।	१,२,३,४,५–लछिमन कपिन्ह सो मानी; ६,७–सब काहू मानी करि
६।८९ बहु राम लछिमन देखि मर्कट, भालु मन अति अपडरे ।	... १, २, ३, ४, ५ में भा० का पाठ है; ६, ७–बहु बालि सुत लछिमन कपीस बिलोकि मरकट अपडरे
६।८९ माया हरी हरि निमिख महुँ, हरषी सकल मर्कट अनी ।	... १, २, ३, ४, ५- मर्कट ; ६,७–बानर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।८६।२ गर्जत तर्जत सन्मुख **धावा** । … १, २, ३, ४–धावा ; ५, ६,७–आवा

६।८६।५ खरदूषन **बिराध** तुम्ह मारा । … १, २, ३, ४,५,७–बिराध ; ६–कबंध

६।८६।६ **बिहँसि बचन** कह कृपा निधाना । … १,२,३,४,५–बिहँसि बचन कह; ६–कहेउ बिहँसि तब; ७–बिहंसि कहे तब

६।९० राम बचन सुनि **बिहँसा**, मोहि सिखावत ज्ञान । … १,२,३,४,५–बिहँसा; ७–बिहँसेउ ; ६–बिहँसि कह

बयरु करत नहिँ तब **डरे**, अब लागे प्रिय प्रान । … १,२,३,४,५,७–डरे; ६–डरेहु

६।९०।३ **पावक सर** छाँड़ेउ रघुबीरा । … १,२,३,४,५-पावक सर; ६,७–अनल बान

६।९०।४ बान संग प्रभु फेरि **चलाई** । … १, २, ३, ४, ५–चलाई; ६,७–पठाई

६।९१ कोदंड धुनि अति चंड सुनि, **मनुजाद सब मारुत ग्रसे** । … १, २, ३, ४, ५, ६, ७–सब ; (भय)

६।९१ **तानेउ चाप** स्रवन लगि, छाँड़े बिसिख कराल । … १, २, ३, ४, ५–तानेउ चाप; ६,७–तानि सरासन

६।९१।१३ पुनि पुनि प्रभु काटत भुज **बीसा** ।… १,२ -बीसा ; ३, ४, ५, ६, ७–सीसा

६।९२।४ दंड एक रथ देखि न **परेऊ** । जनु निहार महुँ **दिनकर** दुरेऊ । … १,२,३,४,५,७–परेऊ····दिनकर दुरेऊ ; ६–परा···दिनमनि दुरा

६।९२।८ कहँ लछिमन **सुग्रीव** कपीसा । … १, २, ३, ४, ५–सुग्रीव; ६,७–हनुमान

६।९३ सिर मालिका **कर कालिका गहि**, बृंद बृंदन्हि बहु मिलीँ । … १, २, ३, ४, ५,७–कर कालिका गहि; ६–गहि कालिका कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।६३ पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ, छाड़ी सक्ति प्रचंड। ... १,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–पुनि रावन अति कोप करि छाड़िसि; (पुनि दसकंठ क्रुद्ध करि छाड़ी)

६।६३।१ आवत देखि सक्ति **अति घोरा**। प्रनतारत भंजन पन मोरा। ... १, २, ३, ४, ५ में भा० का पाठ है; ६,७–खर धारा। प्रनतारति हर बिरद सँभारा

६।६४ रघुबीर बल **दर्पित** बिभीषनु, घालि नहिँ ता कहुँ गनै। ... १, २, ३, ४, ५–दर्पित; ६,७–गर्वित

६।६४ सो अब भिरत काल ज्यौँ, श्री रघुबीर प्रभाउ। ... १,२,३,४,५,७–सो अब भिरत... ६–भिरत सो काल समान अब

६।९४।४ पुनि रावन **कपि** हतेउ पचारी। **चलेउ गगन** कपि पूँछ पसारी। ... १,२,३, ४, ५–कपि......चलेउ गगन; ६,७–तेहि......चलेउ

६।६५ **तब रघुबीर पचारे,** धाए कीस प्रचंड। कपि बल प्रबल **देखि** तेहिँ, कीन्ह प्रगट पाखंड। ... १, २, ३, ४, ५–तब रघुबीर पचारे... ..देखि; ६, ७-राम प्रचारे बीर तब ...बिलोकि

६।६५।३ जहँ तहँ भजे भालु अरु कीसा। ... १,२,३,४,५–जहँ तहँ भजे...; ६,७–भागे भालु बिकल भट कीसा

६।६५।४ **भागे बानर** धरहिँ न धीरा। ... १,२,३, ४, ५–भागे बानर; ६, ७–चले बली मुख

६।६६ सजि **सारंग** सर एक सर, हते सकल दससीस। ... १, २, ३, ४, ५–सारंग; ६,७, त्रिसिखासन

६।९६।५ अस्तुति करत देवतन्हि देखे। ... १,२–अस्तुति करत...; ३,४,५–अस्तुति करत देव तेहि; ६–करत प्रसंसा सुर तेहि देखे; ७–करत प्रसंसा सब सुर देखे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।६६।६	अस कहि कोप गगन पर धाएल। ...	१,२,७—पर; ३,४,५,६—पथ
६।६७	तब रघुपति रावन के, सीस भुजा सरचाप। काटे बहुत बढ़े पुनि, जिमि तीरथ कर पाप। ...	१,२,३,४,५—रावन के...काटे बहुत बढ़े पुनि......; ६,७—लंकेस के......काटे भए बहोरि जिमि कर्म मूढ़ कर पाप
६।६७।३	बानर राज दुबिद बल सीला। ...	१,२,३,४,५,७—बानरराज दुबिद; ६—दुबिद कपीस पनस
६।९७।७	रुधिर देखि बिषाद उर भारी। ...	१,२,३,४,५—रुधिर देखि बिषाद उर भारी ; ६,७—रुधिर बिलोकि सकोप सुरारी।
६।६८	गहे भालु बीसहु कर मनहुँ, कमलन्हि बसे निसि मधुकरा। ...	१,२,६—गहे ; ३,४,५,७—गहि ;
६।६८	मुरछा बिगत भालु कपि, सब आए प्रभु पास। ...	१, २, ३, ४, ५—मुरुछा बिगत ; ६,७- गै मुरुछा तब
६।६८।११	बहु बिधि कर बिलाप जानकी। ...	१,२,३—कर ; ५,६,७—करति ; ४—करत
६।६६	तब रावनहि हृदय महुँ, मरिहहिँ रामु सुजान। ...	१,२,३,४,५,७—रावनहि ; ६—रावन के
६।६६।३	जुग सम भई सिराति न राती। ...	१, २,७—सिराति ; ६—बिहाति ; ३,४,५—न राति सिराती
६।१०१	ताके गुन गन कछु कहे, जड़मति तुलसीदास। जिमि निज बल अनुरूप ते, माछी उड़ै अकास। ...	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७— कहे तासु गुन गन कछुक···निज पौरुष अनुसार जिमि मसक उड़ाहिं अकास
६।१०१।५	नाभि कुंड पियूष बस याके। ...	१, २, ३, ४, ५—पियूष ; ६, ७—सुधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।१०१।७ **असुभ होन लागे** तब नाना । रोवहिँ खर सृकाल बहु स्वाना । ... १, २, ३, ४, ५, ७–असुभ होन लागे…रोवहिँ खर…; ६–असगुन होन लगे…रोवहि बहु सृकाल खर स्वाना

६।१०२ प्रतिमा **रुदहिँ** पविपात नभ, अति बात बह डोलति मही । ... १, २, ३, ४, ५–रुदहिँ ; ६,७–स्रवहिँ

६।१०२ उतपात अमित बिलोकि **नभ सुर,** बिकल बोलहिँ जय जए । ... १, २,३,४,५–नभ सुर ; ७–सुर-मुनि ; ७–मुनि सुर

६।१०२ **खैँचि सरासन स्रवन लगि,** छाँडे सर एकतीस । ... १, २, ३, ४, ५–खैँचि सरासन स्रवन लगि ; ६, ७–आकरषेउ धनु कान लगि

६।१०२।३ तब सर हति प्रभु कृत दुइ खंडा । ... १,२,३–दुइ ; ४,५,६,७–जुग

६।१०२।६ **धरनि परेउ** द्वौ खंड बढ़ाई । ... १,२,३,४,५–धरनि परेउ ; ६, ७–परेउ बीर

६।१०२।८ प्रविसे सब निषंग महुँ **जाई** । ... १,२,३,४–जाई ; ५,६,७–आई

६।१०३ **सुर सुमन बरषहिँ हरष संकुल,** बाज दुंदुभि गहगही । १,२,३,४,५–सुर सुमन बरषहिँ हरष संकुल ; ६, ७–सिद्ध मुनि गंधर्ब हरषे

६।१०३ **भालु कीस सब हरषे,** जय सुख धाम मुकुंद । ... १, २, ३, ४, ५–भालु कीस सब हरषे; ६,७–हरषे बानर भालु सब

६।१०३।३ छूटे कच नहिँ बपुष सँभारा । ... १,२,३,४,५–छूटे कच नहिँ बपुष सँभारा ; ६–छूटे चिकुर न सरीर सँभारा ; ७–छूटे चिकुर न चीर सँभारा

६।१०४ अहह नाथ रघुनाथ सम, कृपा सिंधु **नहिँ** आन । **जोगि वृंद दुर्लभ गति,** तोहि दीन्हि भगवान । ... १, २, ३, ४, ५–नहिँ ६,७–को १,२,३,४,५,७–जोगि वृंद दुर्लभ, ६–मुनि दुर्लभ जो परम गति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।१०४।४ रुदन करत **देखी** सब नारी। ...	१, २, ३, ४, ५–देखी ; ६,७–बिलोकि
६।१०४।५ बंधु दसा **बिलोकि** दुख कीन्हा। ... **तब प्रभु अनुजहि** आयेसु दीन्हा।	१,२,३,४,५,७–बिलोकि...तब प्रभु अनुजहिं ; ६,७–देखत ; ६–राम अनुज कहँ
६।१०४।६ लछिमन **तेहि बहु बिधि समुझायो।**	१,२,३,४,५,७–तेहि बहु बिधि समुझायो ; ६–जाइ ताहि समुझाएउ
६।१०५ **मंदोदरी आदि सब,** देइ तिलांजलि ताहि। ... भवन गईं **रघुपति** गुन, गन बरनत मन माहिँ। ...	१, २, ३, ४, ५–मंदोदरी आदि सब...रघुपति ; ६, ७–मय तनयादिक नारि सब...रघुबीर
६।१०५।६ तिलक **सारि** अस्तुति अनुसारी। ...	१,२,३,४,५,७–सारि ; ६–कीन्ह
६।१०६ **प्रभु के बचन श्रवन सुनि,** ... नहिँ अघाहिँ कपि पुंज। ... **बार बार सिर नावहिँ,** ... गहहिँ सकल पद कंज।	१,२,३,४,५–प्रभु के बचन...बार बार सिर नावहिँ ...; ६,७–सुनत राम के बचन मृदु...बारहिं बार बिलोकि मुख
६।१०६।४ जनक सुता देखाइ **पुनि** दीन्ही।	१,२,३,४,५,७–पुनि ; ६–तिन्ह
६।१०७ सानुकूल **कोसलपति,** ... रहहु समेत अनंत।	१,२,३,४,५–कोसलपति ; ६,७–रघुबंस मनि
६।१०७।३ सुनि **संदेसु भानुकुल** भूषन। ...	१,२,३,४,५–संदेसु भानुकुल ; ६,७–बानी पतंगकुल
६।१०७।६ बेगि बिभीषन्ह तिन्हहि **सिखायो।** ... तिन्ह बहु बिधि मजन करवायो।	१, २, ३, ४, ५–सिखायो। तिन्ह बहु बिधि...; ६, ७–सिखावा। सादर तिन्ह सीतहि अन्हवावा
६।१०७।७ **बहु प्रकार** भूषन पहिराए। ...	१,२,३,४,५,७–बहु प्रकार ; ६–दिब्य बसन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।१०७।१२ **देखहु** कपि जननी की नाईं । ... १, २, ३, ४, ५–देखहु ; ६,७–देखहिं

६।१०८ तेहि कारन **करुनानिधि**, ... १,२,३,४,५–करुनानिधि; ६,७–
कहे कछुक दुर्बाद । करुनायतन
सुनत जातुधानी **सब**, ... १,२,३,४,५–सब ; ६,७–सकल
लागीं करै बिषाद ।

६।१०८।३ बिरह बिबेक धरम **निति** सानी । ... १,२–नीति ; ४–जुति ; ३,५,६–नुति ; ७–नय

६।१०८।५ **पावक प्रगटि** काठ बहु लाए । ... १,२,३,४,५,७–पावक प्रगटि ; ६–प्रगटि कृसानु

६।१०८।६ **पावक प्रबल** देखि बैदेही । ... १,२,३,४,५–पावक प्रबल; ६,७–प्रबल अनल बिलोकि बैदेही

६।१०९ धरि रूप पावक पानि गहि, ... १,२,३,४,५ में भा० का पाठ है;
श्री सत्य श्रुति जग बिदित जो । ६,७–तब अनल भूसुर रूप कर गहि सत्य श्री

६।१०६ **बरषहिं सुमन हरषि सुर**, ... १,२,३,४,५–बरषहिं सुमन हरषि
बाजहिं गगन निसान । ... सुर…सुरबधू ; ६,७–हरषि सुमन
गावहिं किन्नर **सुर बधू** , ... बरषहिं बिबुध…अपछरा
नाचहिं चढ़ी बिमान ।

६।१०६ **जनक सुता समेत** प्रभु, ... १,२,३,४,५–जनक सुता समेत;
सोभा अमित अपार । ६,७–श्री जानकी समेत ; १,२,
देखि भालु कपि हरषे, ३,४,५–देखि भालु कपि हरषे;
जय रघुपति सुख सार ॥ ६–देखत हरषे भालु कपि ; ७–हरषे देखत भालु कपि

६।१०६।६ **यह खल मलिन सदा** सुर द्रोही । १,२,३,४,५,७–यह खल मलिन सदा ; ६–रावन पापमूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।१०९।१० अधम सिरोमनि तव पद पावा।	...	१,२,३,४,५,७ में भा० का पाठ है; ६–सोउ कृपाल तव धाम सिधावा
६।१०९।११ स्वारथ रत प्रभु भगति बिसारी।	...	१,२,३,४,५,७–प्रभु ; ६–तव
६।११० अति सप्रेम तन पुलकि बिधि, अस्तुति करत बहोरि।	...	१,२,३,४,५–अति सप्रेम तनु पुलकित ; ६,७–अतिसय प्रेम सरोज भव
६ ११०।१४ मद मार मुधा ममता समनं।	...	१, २, ३, ४, ५–मुधा ; ६,७–महा
६।११०।१५ सब रूप सदा सब होइ न गो।	...	१,२,३–गो ; ४,५,६,७–सो
६।११०।१७ निरखंति तवानन सादर ए।	...	१,२,३,४,५,७–ए ; ६–जे
६।१११ बिनय कीन्हि चतुरानन, प्रेम पुलक अति गात।	...	१,२,३,४,५–चतुरानन ; ६,७–बिधि भाँति बहु
सोभा सिंधु बिलोकत, लोचन नहीं अघात।	...	१,२,३,४,५–सोभा सिंधु बिलोकत ; ६, ७–बदन बिलोकत राम कर
६।१११।२ अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा।	...	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–सहित अनुज प्रनाम प्रभु कीन्हा
६।११२ सोभा देखि हरषि मन, अस्तुति कर सुरईस।	...	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–छबि बिलोकि मन हरषित
६।११३।३ सुनु खगेस प्रभु कै यह बानी।		१, २, ३, ४, ५–खगेस ; ६,७–खगपति
६।११३।७ मुक्त भए छूटे भव बंधन।	...	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६–गए ब्रह्म पद तजि सरीर रन ; ७–गए परम पद तजि सरीर रन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।११४ देखि सुअवँसरु **प्रभु** पहिँ, आएउ संभु सुजान।	.. १,२,३,४,५,७–प्रभु; ६–राम
६।११५ कृपा सिंधु मैँ आउब, देखन चरित उदार।	.. १, २, ३, ४, ५,७–कृपा सिंधु मैं आउब; ६–तब मैं आउब सुनहु प्रभु
६।११५।७ पुनि मोहि सहित अवध **पुर** जाइअ।	...१,२,३,४,५,७–पुर; ६–प्रभु
६।११६ **भरत दसा सुमिरत मोहि,** निमिष कल्प सम जात।	... १,२,३,४,५–भरत दसा सुमिरत मोहि; ६,७–दसा भरत कै सुमिरि मोहि
६।११६ तापस वेष **गात** कृस, जपत निरंतर मोहिं।	१, २,३,४,५–गात; ६,७–सरीर
६।११६ **बीते अवधि जाउँ जौं,** जिअत न पावौँ बीर। **सुमिरत अनुज प्रीति** प्रभु, पुनि पुनि पुलक सरीर।	... १,२,३,४,५,७–बीते अवधि जाउँ जौ ... सुमिरत अनुज प्रीति; ६–जौ जैहौं बीते अवधि; ६,७–प्रीति भरत कै समुझि
६।११६ पुनि मम धाम **पाइहहु,** जहाँ संत सब जाहि।	... १, २, ३, ४, ५–पाइहहु; ६,७–सिधाइहहु
६।११७ **मुनि जेहि ध्यान न पावहिँ,** नेति नेति कह बेद।	... १,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–ध्यान न पावहि जाहि मुनि;
६।११७।२ नाना जिनिस देखि **सब** कीसा।	... १,२,३,४,५–सब; ६,७–प्रभु
६।११७।५ सुमिरेहु मोहि **डरपहु** जनि काहू।	... १,५ डरपेहु; २,३–डरपहु; ४ डरेहु; ६,७–डरहु
६।११७।९ मसक **कहूँ** खगपति हित करहीँ।	... १, २, ३, ४, ५, ७–कहूँ, ६–कतहुँ
६।११८ हरष बिषाद **सहित चले, बिनय बिविध बिधि भाखि।**	... १, २, ३, ४, ५–सहित चले बिनय......; ६, ७–समेत तब चले बिनय बहु भाखि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।११८ कपिपति नील रीछपति, अंगद नल हनुमान।	... १, २,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–जामवंत कपिराज नल अंगदादि हनुमान
६।११८।७ परम सुखद **चलि** त्रिविध बयारी। ...	१, २, ३, ४, ५, ६–चलि; ७–बह
६।११६ **इहाँ सेतु बाँध्यो अरु,** थापेउँ सिव सुख धाम। सीता सहित **कृपानिधि,** संभुहि कीन्ह प्रनाम।	... १,२,३,४,५,७–इहाँ सेतु बाध्यों अरु...कृपानिधि; ६–यह देखि सुंदर सेतु जहँ...; ६, ७–कृपायतन
६।११६ जहँ जहँ **कृपासिंधु** बन, कीन्ह बास बिस्राम।	... १,२,३,४,५–कृपासिंधु; ६–करुना सिंधु
६।११६।१ **तुरत** विमान तहाँ चलि आवा। ···	१, २, ३, ४, ५–तुरत; ६, ७–सपदि
६।११९।७ **निरषत जन्म** कोटि अघ भागा। ...	१, २, ३, ४, ५-निरखत जन्म; ६,७–देखत जन्म
६।११६।९ पुनि **देखु** अवधपुरी अति पावनि।...	१, २, ३, ४, ५, ६–देखु; ७–देखेउ
६।१२० सीता सहित अवध कहुँ, कीन्ह कृपाल प्रनाम। सजल नयन तन पुलकित, पुनि पुनि हरषित राम।	... १,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६, ७–तब रघुनायक श्री सहित अवधहि कीन्ह प्रनाम। सजल बिलोचन पुलक तन पुनि पुनि हरषत राम।
६।१२० कपिन्ह **सहित बिप्रन्ह कहुँ,** दान बिबिध बिधि दीन्ह।	... १,२,३,४,५–सहित बिप्रन्ह कहुँ; ६–समेत महि सुरन्ह कहँ; ७–सहित महि सुरन्ह कहँ
६।१२०।६ इहाँ निषाद **सुना प्रभु** आएउ। ...	१,२,३–सुना प्रभु; ४,५–सुन्यौ प्रभु आए; ६–सुना हरि आए; २,७–सुना प्रभु आए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।१२०।७ सुरसरि नाघि जान तब आयो। ...	१, २, ४, ५,७–तब; ३,६–जब आवा
६।१२१ समर विजय रघुबीर के, चरित जे सुनहिँ सुजान। ...	१, २, ३, ४, ५–रघुबीर के चरित...; ६ ७–रघुपति चरित सुनिहिं जे सदा...
६।१२१ श्री रघुनाथ नाम तजि नाहिन आन अधार। ...	१,२,३,४,५–रघुनाथ नाम तजि नाहिन ...; ६, ७–रघुनायक नाम तजि नहिं कछु ..

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर कांड

७।श्लो० १ **सुरवर** विलसद्विप्र पादाब्ज चिन्हं	...	१, २, ३, ४, ५, ७–सुरवर ; ६–उरवर
७।श्लो० २ **कोमलावज** महेश वंदितौ	...	१,२,३,५,६–कोमलावज; ४,७–कोमलाम्बुज
७।श्लो० ३ अंबिकापतिमभीष्ट **सिद्धिदं**	...	१,२,३,४,५,७–सिद्धिदम ; ६–मंदिरं
७।० जानि सगुन मन हरष अति, लागे **करन** बिचार।	...	१,२,३,४,५,७–करन ; ६–करै
७।०।१ **रहेउ** एक दिन अवधि अधारा।	...	१,३,४,५,६–रहेउ; २,७–रहा
७।१।४ रघुकुल तिलक **सुजन** सुखदाता।	...	१,२,३,४,५,७–सुजन ; ६–सो जन
७।१।५ सीता **सहित अनुज प्रभु** आवत।	...	१,२,३,४–सहित अनुज प्रभु ; ५,७–अनुज सहित प्रभु ; ६–अनुज सहित पुर
७।१।६ तृषावंत जिमि **पाइ** पियूषा।	...	१,२,३,४,५–पाइ ; ६,७–पाव
७।१।१३ **यह** संदेस सरिस जग माहीं।	...	१,३,४,५,७–यह ; २–एह ; ६–एहि
७।२ काहे न होइ बिनीत परम, पुनीत सदगुन **सिंधु** सो।	...	१,२,३,४,५,७–सिंधु ; ६–पाथ
७।२ कही कुसल सब जाइ हरषि, **चलेउ** प्रभु जान चढ़ि।	...	१,२,६–चलेउ ; ३,४,५,७–चले
७।२।६ गावत **चलीं** सिंधुर गामिनी।	...	२,५,६–चलिं ; १,३,४–चली ; ७–चलि सब
७।२।१० भइ **सरजू** अति निर्मल नीरा।	...	३,४,५–सरजू ; १,२,६–सरऊ ; ७–सरयू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।३	चले भरत **मन प्रेम अति**, सन्मुख कृपा निकेत।	... १,२,३,४,५,७–मन प्रेम अति ; ६–अति प्रेम मन
७।३।१	कपिन्ह देखावत नगर **मनोहर**।	... ३,४,५,६,७–मनोहर ; १, २–सुधाकर
७।३।४	अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ।	... १,२,३,४,५–अवधपुरी सम···; ६,७–अवध सरिस प्रिय मोहि न सोऊ
७।४।३	धाइ **धरे** गुरु चरन सरोरुह।	... १,२,३,४,५,७–धरे ; ६–गहे
७।४।७	**बर** करि क्रिपासिंधु उर लाए।	... १,२,३,४,५,६,७–बर ; (बल)
७।५	जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि, मिले बर **सुषमा** लही।	... १, २, ४, ५–सुषमा ; ३,६,७–परमा
७।५	**लछिमन भरत मिले तब**, परम प्रेम दोउ भाइ।	... १,२,३,४,५,६–लछिमन भरत मिले तब ; ७–लछिमन भेंटे भरत पुनि
७।५।७	छन महिं सबहि मिले भगवाना।	... १,२,३, ७–महि ; ४,५–महँ ; ६–महु
७।६	**कैकइ कहँ पुनि पुनि मिले**, मन कर छोभ न जाइ।	... १, २, ५, ७–कैकइ कहँ पुनि पुनि ; ३,४,६–कैकई कहुँ पुनि मिले; (कैकेई कहँ पुनि मिले)
७।६।२	**होइ** अचल तुम्हार अहिवाता।	... १,२–होइ ; ३–होहु ; ४,५,६,७–होउ
७।७	लछिमन अरु सीता सहित, प्रभुहि बिलोकति **मातु···गातु**।	... १, २, ३, ४, ५,७–मातु···गातु ; ६–मात··· गात
७।७।५	मुनि पद **लागहु सकल** सिखाए।	... १,२,३,४,५–लागहु सकल ; ६, ७–लागन कुसल
७।८	चढ़ी अटारिन्ह देखहिं, नगर नारि **बर** बृंद।	··· १,२,३,६–बर ; ४,५,७–नर
७।८।६	तेउ **यह** चरित देखि ठगि रहहीं।	... १,२,३,४,५,७–यह ; ६–येह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।६	होहिँ सगुन सुभ बिबिध, बिधि बाजहिँ **गगन** निसान।	... १,२,३,४,५–गगन ; ६,७–नाक
७।६।३	कृपासिंधु **तब** मंदिर गए।	... १,२,४,५–तब ; ३,६,७–जब... गयऊ
७।६।४	आजु सुघरी सुदिन **समुदाई**।	... १,२,३–समुदाई ; ४,५,६,७–सुभदाई
७।१०	तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन, सुनत चलेउ **हरषाइ**।	... १,२,३,४,५–हरषाइ ; ६,७–सिरनाइ
७।१०।१	देवन्ह सुमन बृष्टि **झर** लाई।	... १,२–झर ; ३,४,५,६,७–झरि
७।१०।८	अंग अनंग **देखि सत लाजे**।	... १,२,३–देखि सत लाजे ; ४,५,७–कोटि छबि लाजे ; ६–कोटि छवि छाजे
७।१२	नव अंबुधर बर गात, अंबर पीत **सुर** मन मोहई।	... १,२,३,४,५–सुर ; ६,७–मुनि
७।१२	भिन्न भिन्न अस्तुति करि, **गए** सुर निज निज धाम।	... १,२,३,६–गए ; ७–गे ; ४,५–गये
७।१३	भव पंथ भ्रमत **अमित** दिवस, निसि काल कर्म गुननि भरे।	... १,२,३,५–अमित ; ४,६,७–श्रमित
७।१३	पल्लवत फूलत **नवल नित**, संसार बिटप नमामहे।	... १,२,३,५,७–नवल नित ; ४,६–नव ललित
७।१३।७	**मनजात** किरात निपात किए।	... १,२,३,५,६–मनजात ; ४,७–मनुजात
७।१३।१८	भव रोग महा **गद** मान अरी।	... १,२,३,६–गद ; ४,५,७–मद
७।१४।१	त्रिबिध ताप भव **भय** दावनी।	... १,२,३,४,५,६–भय ; ७–दाप
७।१४।५	लहहिँ भगति गति संपति **नई**।	... १,२,३,४,५,६–नई ; ७–नितई
७।१५	जात न जाने **देवस तिन्ह**, गए मास षट बीति।	... १,२–देवस तिन्ह ; ३,४,५,६–दिवस तिन्ह ; ७–दिवस निसि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।१५।१	जिमि पर द्रोह संत मन **नाही**ँ ।	... १,२,३–नाहीँ; ४,५,७–माहीँ; ३–माहिं
७।१७।६	राखहु सरन **नाथ** जन दीना ।	... १,२,३,६–नाथ; ४,५,७–जानि
७।१६	कहेहु दंडवत प्रभु **सै**ँ, तुम्हहिँ कहौँ कर जोरि ।	... १,२,३,४,५,६–सैँ; ७–सन
७।१६	**चित्त खगेस** राम कर, समुझि परै कहु काहि ।	... १,२,३,,४,५,६–चित्त खगेस; ७–चित खगेस अस
७।२०	चलहिँ सदा पावहिँ **सुखहि**, नहिँ भय सोक न रोग ।	... १,२,७–सुखहि; ३,४,५,६–सुख
७।२०।२	चलहि स्वधर्म निरत श्रुति **नीती** ।	... १,२,३,४,५,७–नीती; ६–रीती
७।२०।७	सब निर्दंभ धर्म रत **पुनी** ।	... २,६–घृनी; १,३,४,५,७–पुनीं
७।२१।५	कहहिँ महा मुनिवर **दमुसीला** ।	... १,३,५,६–बर दमसीला; २,४,७–बरद सुशीला
७।२२	जीतहु मनहि **सुनिअ अस**, रामचंद्र के राज ।	... १, २, ३, ४, ५, ७–सुनिअ अस; ६–अस सुनिअ जग
७।२२।५	लता विटप मागे मधु **चवहीँ** ।	... १, ३, ४, ५, ६, ७–चवहीँ; २–बहहीँ
७।२३।६	उमा रमा **ब्रह्मादि** बंदिता ।	... १,३,४,५,६–ब्रह्मादि; २,७–ब्रह्मानि
७।२५	ज्ञान गिरा गोतीत अज, माया **मन गुन** पार ।	... १, २, ३, ४, ५, ६, ७–मन; (गुन गो)
७।२५।१	प्रातकाल सरजू करि मज्जन ।	... १,२,६–सरऊ; ३,४,५–सरजू; ७–सरयू
७।२५।७	सबके गृह **गृह होहिं** पुराना ।	... १, २, ३, ४, ५, ७–गृह होहिँ; ६–होहिं बेद
७।२७	प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट, बनाइ बहु बज्रन्हि **खचे** ।	... १,२,३,४,५,६–खचे; ७ पचे
७।२७	राम चरित जे **निरख** मुनि, ते मन लेहिँ चोराइ ।	.. १,२,३,५—निरख; ४,६,७–निरखत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।२७।६ जहँ तहँ **देखहिँ** निज परिछाहीँ ।...	१, २, ३, ४, ५,७–देखहिं; ६–निरषहिँ
७।२८ बाजार **रुचिर** न बनै बरनत, बस्तु बिनु गथ पाइए । ...	१,२,३,५,७–रुचिर ; ४,६–चारु
७।२८।४ चहुँ दिसि **तिन्हके** उपवन सुंदर ।...	१,३,४,५,७–तिन्ह के ; २–तिन्ह को ; ६–जिन्ह की
७।२८।५ **बसहि** ज्ञान रत मुनि सन्यासी । ...	१,२,३,४,५,७–बसहिँ ; ६–सबहिँ
७।३० सानुकूल सब पर **रहहि,** संतत कृपानिधान । ...	१,२,३,४,५,७–रहहिं ; ६–रह
७।३०।२ **बहुतेन्ह सुख बहुतन** मन सोका ।	१,२,३–बहुतेन्ह सुख बहुतन ; ६–बहुतेन्ह सुख बहुतेन्ह ; ५,७–बहुतन्ह सुख बहुतन्ह ; ४–बहुतेहु सुख बहुतन्ह
७।३१।८ राम कथा **मुनिबर** बहु बरनी । ...	१,२,३,४,५,७–मुनि बर बहु ; ६–मुनि बहु विधि
७।३२।८ बड़े भाग **पाइब** सतसंगा । ...	१,२,३–पाइब ; ४,५,७–पाइय ; ६–पाइअ
७।३३ संत **संग** अपवर्ग कर, कामी भव कर पंथ । **सद ग्रंथ ।** ...	१, २, ३, ४, ५–संग ; ६,७–पंथ १, २, ३,४,५,७–सद ग्रंथ ; ६–सब ग्रंथ
७।३३।१ जय निर्गुन **जय जय** गुन सागर । ...	१,२,३,४,५,७–जय जय गुन-सागर ; ६–जय गुन निधि सागर
७।३३।४ **अनुपम अज** अनादि सोभाकर । ...	३,४,६,७–अनुपम अज; ५–अज अनुपम ; १,२,३–अति अनुपम
७।३४ परमानंद कृपायतन, मन **परिपूरन** काम । ...	१,२,३,४,५,७–परिपूरन ; ६–पर पूरन
७।३४।२ प्रनत काम **सुरधेनु** कल्प तरु । ...	१,२,३,४,५,७–सुर ; ६–धुक
७।३४।३ **सेवत** सुलभ सकल सुखदायक । ...	१,२,३,४,५,६,७–सेवत; (सेवक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।३५।४	अंतरजामी प्रभु **सभ** जाना ।	... १,२ सभ ; ३,४,५,६,७–सब
७।३६।२	बहु बिधि बेद **पुरानन्ह** गाई ।	... १,२,३,४,५,७–पुरानन्ह ; ६–पुरानन्हि
७।३७	अनल दाहि पीटत **घनहि,** परसु बदनु यह दंड ।	... १, २, ३, ४, ५,७–घनहि ; ६–घनन्हि
७।३७।४	भरत प्रान सम मम **ते** प्रानी ।	... १,२,३,४,५,६,७–ते ; (तेइ)
७।३७।६	द्विज पद प्रीति धर्म **जनयत्री** ।	... १, २, ६–जनयित्री ; ३, ४, ५–जनयत्री ; ७–जनजंत्री
७।३८।४	**हरषहिँ** मनहुँ परी निधि पाई ।	... १, २, ३, ४, ५, ७–हरषहिँ ; ६–हरखैं
७।३८।५	**निर्दय** कपटी कुटिल मलायन ।	... १,२,३,४,५,६,७–निर्दय;(निंदय)
७।३६।८	बिप्र द्रोह **परद्रोह** बिसेखा ।	... १,२,३,४,५–पर द्रोह ; ६,७–सुर द्रोह
४।४०।८	संत **असंतन्ह** के गुन भाखे । ते न **परहिँ** भव जिन्ह लखि राखे ।	... १, २, ३, ४, ५,६,७–असंतन्ह ; (असंतेन्ह);१,२,३,४,५,७–परहिं; ६–परिहिं
४।४१।६	सुनि बिरंचि **अतिसय** सुख मानहिँ ।	१,२,३,४,५,७–अतिसय ; ६–सुर अति
७।४२।२	बैठे **गुरु मुनि अरु द्विज** सज्जन।... बोले बचन **भगत भव** भंजन ।	१, २, ३, ४, ५–गुरु मुनि अरु द्विज; ६,७–सदसि अनुज मुनि ; १,२,३,५–भगत भव ; ४,७–भक्त भय ; ६–भगत भव
७।४३।२	गुंजा **ग्रहै** परस मनि खोई ।	... १,३,६–ग्रहै ; २–ग्रहैं ; ४,५,७–गहै
७।४४	सो कृत निंदक मंद मति, **आत्माहन** गति जाइ ।	... १,२,३–आत्माहन ; ७–आतम हन; ४,५,६–आत्महन
७।४४।४	भक्ति हीन **मोहि प्रिय नहिँ** सोऊ ।	१,२,३,४,५,७–मोहि प्रिय नहिँ ; ६–प्रिय मोहि न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।४४।५ भक्ति **सुतंत्र** सकल सुख खानी। ...	१, २, ३, ४, ५,७–सुतंत्र ; ६–स्वतंत्र
७।४६।८ निज **निज गृह गए आइसु पाई**।...	१,२,३,४,५,७–निज गृह गए आयसु ; ६- गृह गए सुआयसु
७।४७।२ पद पखारि **पादोदक** लीन्हा। ...	१,२,३,४,५,७–पादोदक ; ६–चरनोदक
७।४७।६ **उपरोहित्य** कर्म अति मंदा। ...	१, ३, ५–उपरोहित्य ; २–उपरोहित ; ४,६,७–उपरोहिती
७।४८।५ घृत कि पाव **कोइ** बारि बिलोए। ...	१,३–कोइ ; २–कोई ; ४,५,६, ७-कोउ
७।४९।४ दिए उचित जिन्ह जिन्ह **तेइँ** चाहे।	१, २–तेइ ; ३,४,५,६,७–जेइ; (जोइ)
७।४९।८ हनूमान **सम नहिँ** बड़भागी। ···	१,२,३,४,५,७–सम नहिँ ; ६–समान
७।५०।१ कृपा बिलोकनि **सोच** बिमोचन। ···	१,२,३,४,५,७–सोच ; ६–सोक
७।५०।८ कारुनीक **ब्यलीक** मद खंडन। ...	१, २, ३, ४, ५–ब्यलीक ; ६–बालीक ; ७ बालि क
७।५२ तुम्हरी **क्रिपा कृपायतन,** अब कृतकृत्य न मोह। ...	१, २, ४, ५–क्रिपा कृपायतन ; ३,७–कृपा कृपायतन ; ६–कृपाल मइ
७।५२।६ ते जड़ जीव **निजात्मक** घाती। ...	१,२,३–निजात्मक ; ४, ५, ७–निजातम ; ६–निजात्म
७।५२।७ **हरि चरित्र** मानस तुम्ह गावा। ...	१,२,३,४,५,६–हरि चरित्र ; ७–राम चरित
७।५३ बिरति ज्ञान विज्ञान दृढ़, **राम चरन** अति नेह। ...	१,२,३,४,५,७–राम चरन ; ६–राम चरित
७।५५ सो सब सादर **कहिहौं,** सुनहु उमा मन लाइ। ...	१, २, ३, ४, ५,६–कहिहौं ; ७–कहउँ मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।५५।६ कौतुक देखत फिरौं बेरागा। ... १,२ ३–बेरागा;४,५–बिरागा;७–बिभागा ; ६–फिरै बिरागा

७।५६।६ आँब छाँड़ि कर मानस पूजा। ... १, २, ३, ४, ६–आँब ; ५,७–आम

७।५६।८ आवहिँ सुनहिँ अनेक बिहंगा। १, २, ३, ४, ५, ७–सुनहि ; ६–सुनै

७।५८।८ सोइ करेहु जेहि होइ निदेसा। ... १,२,३,४,५–जेहि होइ ६,७–जो देहिं

७।५९।२ समुझि प्रताप प्रेम अति छावा। ... १,२,३,४,५–अति ; ६,७–उर

७।५९।५ अग जग मय जग मम उपराजा। ... १,२,३,४,५–जग ; ६,७–सब

७।६०।२ सुनि ता करि बिनती मृदुबानी। ... ६–बिनीत ; १,३,४,५,७–बिनती; २–ताकरी बिनती

७।६१।१ किए जोग तप ग्यान बिरागा। ... १,२,३–तप ; ४,५,६,७–जप

७।६२ सिव बिरंचि कहु मोहै,
कोहै बपुरा आन। ... १,२,३,४,५,६–मोहै; ७–मोह है; (मोहइ)

७।६२।१ गएउ गरुड़ जहँ बसै भुसुंडा। ... १,२,३,४–भुसुंडा; ५,७–भुसुंडी

७।६२।५ कथा अरंभ करइ सोइ चाहा। ... १,२,३–करइ ; ४,५,६,७–करै

७।६३ जेहि कै अस्तुति सादर,
निज मुख कीन्हि महेस। ... १,२,३,६–जेहि कै; ७-जेहि की; ४,५–जिन्ह कै

७।६३।१ सुनहु तात जेहि कारन आएउँ। ... १,२,३,४,५–कारन ; ६-कारज

७।६३।३ सदा सुखद दुख पुंज नसावनि। ... १,३,४,५,७–पुंज ; २,६–पूंग

७।६५ कहि बिराध बध जेहि बिधि,
देह तजी सरभंग।
बरनि सुतीछन प्रीति पुनि,
प्रभु अगस्ति सन संग। ... १,२,३,४,५,६–जेहि...सन संग
७–जाहि......सतसंग

७।६६ पुनि सुग्रीव मिताई,
बालि प्रान कर भंग। ... १,२,३,४,५,६–मिताई ; ७–मिताइ कहि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।६६	कपिहि तिलक करि प्रभु **कृत**, सैल प्रवरषन बास । **बरनत** बरषा सरद **रितु**, राम रोष कपि त्रास ।	१,२–क्रित ; ३, ४, ५, ६–कृत ; ७–जुकृत । २,३,४,५–बरनन ; १,६–बरनत; ७–वरने । १, ७–ऋतु, ३,४,५– अरु; ६–कर;
७।६७	निसिचर कीस **लराई**, बरनिसि बिबिधि प्रकार ।	१, २, ३, ४, ५, ६–लराई ; ७–लराइ पुनि
७।६७।६	पुर **बरनन** नृप नीति अनेका ।	१, २, ३, ४, ५, ७–बरनन ; ६–बरनत
७।६८	चिदानंद **संदोह**, राम बिकल कारन कवन ।	१, २, ३, ४, ५,७–संदोह ; ६–सो मोह
७।६८।२	**सोइ** भ्रम अब हित करि मैं माना ।	१,२,३,४,५,६–सोइ ; ७ सो भ्रम अब हित करि मैं जाना
७।६८।८	तव प्रसाद **सब** संसय गएऊ ।	१,२,३,४,५–सब ; ६,७–मम
७।६९	सुनि बिहंगपति **बानी**, सहित बिनय अनुराग ।	१, २, ३, ४, ५, ६–बानी ; ७–बानि बर
७।६६	गाइ उमा अति गोप्य**मपि**, सज्जन करहिं प्रकाश ।	१,२,३,४,५,६–मपि ; ७–मत
७।६६।८	त्रिष्ना केहि न कीन्ह **बौराहा** । केहि कर हृदय क्रोध नहिं **दाहा** ।	१, ३, ४, ५, ७–बौराहा···दाहा; २,६–बौरहा···दहा
७।७०	**मृग लोचनी के नैन** सर, को अस लाग न जाहि ।	१,२–मृगलोचनी के नैन ; ३,४, ५,६–मृगलोचनि लोचन ; ७–मृगनयनी के नयन
७।७०।४	चिंता सापिनि **को नहिँ** खाया ।	१,२,३,४,५–को नहिँ ; ७–केहि नहिँ ; ६–काहि न; (केहि नहिँ)
७।७०।६	सुत बित **लोक** ईषना तीनी ।	१,२,३,६–लोक ; ४,७–नारि ; ५–सोक···ईर्षना
७।७०।७	यह सब माया कर **परिवारा** ।	१,२,३,४,५,७–परिवारा ; ६–परिचारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।७१।३	अज बिज्ञान रूप बल धामा।	... १,२,३,४,५-बल ; ६,७-गुन
७।७१।५	अगुन अदभ्र गिरा गोतीता। सबदरसी अनवद्य अजीता।	... १, २, ४, ५-अदभ्र ; २,६,७-अदर्भ ; (अदंभ) ; १,२,३,४,५,६-सबदरसी ; ७-समदरसी
७।७१।६	निर्मम निराकार निरमोहा।	... १,२,३,४,५-निर्मम ; ६-निर्मल; ७-निरमम
७।७२	जथा अनेक वेष धरि, नृत्य करै नट कोइ। सोइ सोइ भाव देखावै, आपुन होइ न सोइ ॥	... १, २, ३, ४, ५,६-अनेक...सोइ सोइ ; ७-अनेकन...जो जो
७।७२।४	जब जेहि दिसिभ्रम होइ खगेसा।	... १,२,३,४,५,६-दिसिभ्रम ; ७-भ्रम दिसि
७।७३	निर्गुन रूप सुलभ अति, सगुन जान नहिँ कोइ।	... १,२,७-जान नहिँ ; ३,४,५,६-न जानहि
७।७४	व्याधि नास हित जननी, गनत न सो सिसु पीर।	... ३,४,५,६-गनत ; १,२ ७-गनइ
७।७४	तुलसिदास ऐसे प्रभुहि, कस न भजहु भ्रम त्यागि।	... १, २, ३, ४, ५,७-भजहु ; ६-भजसि
७।७५	लरिकाइ जहँ जहँ फिरहिँ, तहँ तहँ संग उड़ाउँ।	... ①,२-लरिकाइँ ; ३,४,५,६,७-लरिकाई
७।७५	एक बार अति सैसव, चरित किए रघुबीर।	... ①,२,३-अति सैसव ; ६-अतिसै सब ; ४,५-अतिसय सब ; ७-अतिशय सुखद
७।७५।१	राम चरित सेवक सुखदायक।	... १,२,३,४,५,७-सेवक ; ६-सेवत
७।७६	उर आयत भ्राजत बिबिधि, बाल बिभूषन चीर।	... १,२,३,४,५,७-चीर ; ६-बीर
७।७६।६	बरनत मोहि होति अति व्रीड़ा।	... १ २,३,४,५-मोहि होति; ६,७-चरित होत मोहिं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।७८ राकापति षोड़स उअहिँ, तारागन समुदाइ । ... १, २, ३, ४, ५,६–उअहिँ ; ७–उगहिँ

७।७८।१ ऐसेहिँ **हरि बिनु** भजन खगेसा । ... ①,२,३,४–हरि बिनु ; ५,६,७–बिनु हरि

७।७८।८ तहँ **भुज हरि** देखौँ निज पासा । १,२,३,४,५–भुज हरि ; ६,७–हरि भुज

७।७९ ब्रह्मलोक लगि गएउँ मैं, **चितएउँ** पाछ उड़ात । १,२,३,४,५,६–चितएउँ ; ७–चितवत

७।७६ सप्तावरन भेद करि, **जहाँ लगे गति** मोरि । ... १,३,४,५,६–जहाँ लगे गति ; ... २–जहाँ लागि ; ७–जहँ लगि गति रहि

७।८० एक एक ब्रह्मांड महुँ, **रहौँ** बरष सत एक । ... ३,५,६–रहौँ ; ४–रह्यौं ; १,२–रहों ; ७–रहे

७।८०।४ सब प्रपंच तहँ **आनै** आना । ... १,२,३–आनै ; ४,५,७–आनइँ ; ६–आनहि

७।८०।५ देखेउँ **जिनस** अनेक अनूपा । ... १, २, ३, ४, ५,६–जिनस ; ७–जिनिस

७।८०।६ अवधपुरी प्रति भुवन **निनारी** । **सरजू** भिन्न भिन्न नर नारी । ... १,२,३,६–निनारी...सरऊ ; ४, ५,७–निहारी...सरजू

७।८०।७ दसरथ कौसल्या **सुनु ताता** । ... १,२,३,४,५,६–सुनु ताता ; ७–कौसल्यादिक माता ; (सुनु माता)

७।८०।८ देखौँ बाल बिनोद **अपारा** । ... १, २, ३, ४, ५, ७–अपारा ; ६–उदारा

७।८१ भिन्न भिन्नु **मैं दीख सबु**, अति बिचित्र हरि जान । ... १,२,३,४,५,७–मैं दीख सब ; ६–सब दीख मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।८१	**सोइ** सिसुपन सोइ सोभा, सोइ क्रिपाल रघुबीर। भुवन भुवन देखत फिरौं, प्रेरित मोह **समीर**॥	... १,२,३,४,५,६–सोइ ; ७–सो ; १, २, ३, ४, ५,७–समीर ; ६–सरीर
७।८१।४	**देखौं** जन्म महोत्सव जाई।	... १,२,३,५–देखौं ; ४,७–देखउँ ; ६–देखेउँ
७।८३	सुनि सप्रेम **मम बानी**, देखि दीन निज दास।	... १,२,३,४,५,६–मम बानी ; ७–मम बैन बर
७।८३।२	आजु देउँ **सब** संसय नाहीं।	... १,२,३,४,५,७–सब ; ६–तव
७।८३।६	भगति हीन गुन **सब सुख ऐसे**।	... १,२,३–सब सुख ऐसे ; ७–सुख सब कैसे ; ४,५,६–सब सुख कैसे
७।८४	**जेहि** खोजत जोगीस मुनि, प्रभु प्रसाद कोउ पाव।	... १,२,३,४,५,६–जेहि ; ७–जो
७।८५।३	मम माया संभव **संसारा**।	... १, २, ३, ४, ५, ७–संसारा ; ६–परिवारा
७।८५।६	तिन्ह महँ प्रिय बिरक्त **पुनि** ग्यानी।	१,२,३,४,५,६–पुनि ; ७–अरु
७।८५।७	**जेहि गति मोरि न** दूसरि आसा।	१,३,४,५,७–जेहि गति मोरि न; २,६–भगति मोरि नहिं
७।८५।८	**सभ जीवहु सम** प्रिय मोहि सोई।	१,२–सभ जीवहु ; ३,६,७–सब जीवहु ; ४,५–सब जीवन
७।८६।५	जद्यपि सो सब भाँति **अयाना**।	१,२,३,५–अयाना ; ७–अजाना; ६–सयाना
७।८६।७	अखिल बिस्व यह मोर **उपाया**।	... १,२,३,४,५,७–उपाया ; ६–मम उपजाया
७।८६।८	**भजहि** मोहि मन बच अरु काया।	१,७–भजहि ; २,३,४,५–भजइ; ६–भजे
७।८७	**पुरुष** नपुंसक नारि **वा**, जीव चराचर कोइ। **सर्व** भाव	... १, २, ३, ४, ५, ७–वा···सर्व ; ६–नर···भक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।८७।१ **सुमिरेसु भजेसु** निरंतर मोही॑ ।...	१,२–सुमिरेसु भजेसु ; ३,४,५–सुमिरेहु भजेहु ; ७–सुमिरसु भजसु ; ६–सुमिरि स्वरूप
७।८८ **जेहि** सुख लागि पुरारि, असुभ बेष कृत सिव सुखद । ...	१,२,३,४,५,६–जेहि ; ७–जो
७।८८ **सोई सुख** लवलेस, जिन्ह बारक सपनेहु लहेउ । **ते नहि॑ गनहि॑** खगेस, ब्रह्म सुखहि सज्जन सुमति । ...	१,२,३,४,५,६–सोई सुख ; ७–सो सुख कर ; १,२,३,४,५ ते नहि॑ गनहि॑ ; ६–ते नहिं गनैं ; ७–सो नहिं गनै
७।८८।५ बिनु हरि भजन न **जाहि॑** कलेसा ।	१,२,३,४,५–जाहि॑ ; ७–जाहि ; ६–जाइ
७।८९ बिनु गुरु होइ कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ बिराग बिनु । गावहि॑ बेद पुरान, सुख कि **लहिअ** हरि भगति बिनु । ...	१,२,३,४,५,७–कि ... लहिअ ; ६–न...लहहि
७।८९ चलै कि जल बिनु नाव, कोटि जतन पचि पचि **मरिअ** । ...	१,२,३ मरिअ ; ४,५,७–मरिय ; ६–मरै
७।८९।१ बिनु संतोष **काम न** नसाहीं । ...	१,२,३–काम न ; ४,५,६,७–न काम
७।९० बिनु बिस्वास भगति नहि॑, तेहि बिनु द्रवहि॑ न **रामु** । राम कृपा बिनु सपनेहु, **जीव न लह** बिश्रामु । ...	१,२,३,४,५,७–न रामु ; ६–कि राम ; १,२,३,४,५–जीव न लह ; ७–जिव कि लहै ; ६–मन न लहहि
७।९० भजहु राम **रघुबीर**, करुनाकर सुंदर सुखद । ...	१, २, ३, ४, ५,७–रघुबीर ; ६–रणधीर
७।९०।१ निज मति सरिस नाथ मैं॑ गाई । ...**खगराई** । ...	१,२,३,४,५,७–गाई···खगराई ; ६–गाया···खगराया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।९०।२ कहेउँ न कछु करि जुगुति **बिसेखी** । ··· देखी । ... १,२,३,४,५,७–बिसेखी···देखी; ६–बिसेखा···देखा

७।९१ ससि सत कोटि **सुसीतल**, समन सकल भव त्रास । ... १,२,३,४,५,७–सुसीतल ; ६–सो सीतल

७।९१।२ तीरथ अमित कोटि **सम** पावन । नाम अखिल अघ **पूग** नसावन । ... १,२,३,४,५,६–सम ; ७–सत; १,२–पूग ; ३,४,५,६,७–पुंज

७।९१।६ बिस्नु कोटि **सम** पालन कर्ता । ... १,२,३,४,६–सम ; ७–सत

७।९१।८ **भार** धरन सत कोटि अहीसा । ... ३,४,५,६,७–भार ; १,२–धरा

७।९२ निरुपम न उपमा आन, राम समान **रामु निगम** कहै । ... १,२,३,४,५,७–राम निगम ; ६–निगमागम

७।९२ प्रभु भाव गाहक अति कृपाल, सप्रेम **सुनि** सुख मानहीँ । १,२,३,४,५,७–सुनि ; ६–ते

७।९२ संतन्ह सन जस कछु सुनेउँ, तुम्हहि **सुनाएउँ** सोइ । ... १,२,३,४,५,७–सुनाएउँ; ६–सुनायो

७।९२ तजि ममता मदमान भजिअ, सदा **सीता रवन** । ... १,२,३–सीता रवन ; ४,५,७–सीता रमन; ६–सीता पतिहि

७।९२।२ श्री **रघुपति प्रतापु** उर आना । ... १,२,३,७–रघुपति प्रताप ; ६–रघुबर प्रताप ; ४, ५–रघुपति प्रभाव

७।९२।३ ब्रह्म अनादि मनुज करि **माना** । ... १,२,३,४,५,६–माना ; ७–जाना

७।९३ ताहि **प्रसंसि** बिबिधि बिधि, सीस नाइ कर जोरि । ... १,२,३,४,५–प्रसंसि ; ७–प्रसंसे ; ६–प्रसंसेउ

७।९३ प्रभु अपने अविवेक ते, **बूझौँ** स्वामी तोहि । ... १,२,३,४,५,७-बूझौँ ; ६–पूछौँ

७।९३।६ **मुधा** बचन नहिँ ईस्वर कहई । **सोउ** मोरे मन संसय अहई । ... १,२,३,४,५–मुधा... सोउ;६,७–मृषा ... सो

७।९४ प्रभु तव आश्रम **आए**, मोर मोह भ्रम भाग । ... १,२,३–आए ; ५–आएँ ; ४, ६–आएउँ; ७–आयउँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।६४।१ बोलेउ उमा परम अनुरागा। ... १,२,३–परम ; ४,५,६,७–सहित

७।६४।४ सब निज कथा कहौं मैं गाई। ... १,२,३, ४,५,६, ७–सब ... कहौं मैं ; (अब...सुनावौं)

७।९४।५ जप तप मख सम दम ब्रत दाना। ... १,२,३,४,५,७–मख सम दम ब्रत ; ६–ब्रत मख सम दम

७।६५ पाट कीट तें होइ, ... १,२,३,४,५–तेहि तें ;६,७–ता ते
तेहि तें पाटंबर रुचिर।

७।६५।२ जो तनु पाइ भजै रघुबीरा। ... १,२,७–भजै ; ३–भजिअ ; ४,५,६–भजिय

७।६७ कलि मल ग्रसे धर्म सब, ... १,२,३,४,५,६–ग्रसे ; ७–ग्रासे ;
लुप्त भए सदग्रंथ। १,२,३,४–लुप्त ; ७–लुगुत; ५–गुप्त

७।९७।१ श्रुति बिरोध रत सब नरनारी। ... १,२,३,४,५–सब ; ६,७–ब्रत

७।६७।२ द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन। ... १, २, ३, ५, ६–बेचक ; ४,७–बंचक

७।९७।६ जो कह झूठ मसखरी जाना। ... १,२,३,४,५,७–कह ; ६–करि

७।९७।७ कलिजुग सोइ ज्ञानी सो बिरागी।... १, ३, ४, ५–ज्ञानी सो बिरागी; २–ज्ञान बैरागी ; ६, ७–ज्ञानी बैरागी

७।९८ तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर, ... १,२,३,४,५,७–जोगी ; ६–तापस
पूजिति कलिजुग माहिं। १,२–पूजिति ; ३–पुज्य ते; ४,५,६–पूज्य ते ; ७–पूजित ;

७।९८ जे अपकारी चार, ... १,२,३,४,५–मान्य तेइ ; ६–मान्य बहु ; ७–मान्यता
तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ।

७।९८।३ देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी। ... १,२,३,४,५–देव बिप्र श्रुति ; ७–देव बिप्र अरु ; ६–बेद बिप्र गुरु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।९८।६	गुरु सिष बधिर अंध **का** लेखा। ...	१, ३, ४, ५, ७–का ; २–क ; ६–कर
७।९८।८	उदर भरै सोइ **धर्म** सिखावहिँ। ...	१, २, ३, ४, ५–धर्म ; ७–धरम ; ६–ज्ञान
७।९९	कौड़ी लागि **मोह** बस, करहिँ बिप्र गुर घात। ...	१–मोह ; २,३,४,५,७–लोभ ; ६–कारन लोभ
७।९९।३	आपु गए अरु **तिन्हहूँ** घालहिँ, **जे कहुँ सत मारग** प्रति पालहिँ। ...	१, २, ३, ४, ५ ७–तिन्हहूँ ; ६–औरनि। १,२,३,४,५–जे कहुँ ; ६–जो कहुँ ; ७–जे कछु। १,२–सन्मारग ; ३, ४, ५, ६, ७–सत मारग
७।९९।६	नारि मुई **गृह** संपति नासी। ...	१,२,३,४,५,७–गृह ; ६–घर
७।९९।९	सूद्र करहिँ जप तप ब्रत **नाना**। ...	१,२,३,५–नाना ; ४,६,७–दाना
७।१००	भए बरन संकर **कलि**, भिन्न सेतु सब लोग।	१,२,३,४,५–कलि ; ७–कली ; ६–सकल ; (कलिहि)
७।१००।१	बिषया **हरि लीन्हि रही** बिरती। ...	१,३,४,७–हरि लीन्हि रही ; ६–हरि लीन रही ; २–हरि लीन्हि न रही
७।१००।३	**कुलवंति** निकारहिँ नारि सती। ...	१,२,७–कुलवंति ; ३,४,५,६–कुलवंत
७।१००।४	सुत **मागहिं** मातु पिता तब लौं। **अबलानन** दीख नहीँ जब लौं। ...	१–मागहिँ ; २, ३, ४, ५, ६,७–मानहिँ ; १, २, ३,४, ५,७–अबलानन दीख नहीँ ; ६–अबला नहिं डीठ परी
७।१००।७	नहिं मान **पुरान न** बेदहि जो। ...	१,२,३,४,५,७–पुरान न ; ६–पुराननि
७।१००।९	गुन **दूषक** ब्रात न कोपि गुनी। ...	१,२,३,५,७–दूषक ; ४,६–दूषन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।१०१ देव न **बरषहिं** धरनि पर, बए न जामहिँ धान।	१, ७–बरषहिं; २, ३, ४, ५–बरखै धरनी। १,२,४,५,७–बए; ३–बये; ६–बोए
७।१०२ सुनु ब्यालारि **कालकलि,** मल अवगुन आगार। गुनौ **बहुत कलिजुगकर,** बिनु प्रयास निस्तार॥	... १,२,३,४,५–काल कलि; ६,७–कराल कलि; १,२,३,४,५,७–बहुत कलिजुग कर; ६–बड़ तौ कलिकाल के
७।१०२ कृत जुग त्रेता **द्वापर,** पूजा मष अरु जोग। जो गति होइ सो **कलि हरि,** नाम तेँ पावहिँ लोग।	... १, ३, ४, ५, ६–द्वापर; २,७–द्वापरहु; (द्वापर समै)। १,२,३,४,५,७–हरि; ६–विषे
७।१०२।८ कलि **कर** एक पुनीत प्रतापा।	... १,२,३,४,५,७,–कर; ६–जुग
७।१०३।१ **नित** जुग धर्म होहिं सब केरे।	... १, २, ४,५–नित; ३,६,७–कृत
७।१०३।५ कलि **प्रभाव** बिरोध चहुँ ओरा।	... १, २, ३, ४, ५,७–प्रभाव; ६–सुभाउ
७।१०३।७ **काल धर्म** नहिँ ब्यापहि **ताही**।... रघुपति चरन प्रीति **अति जाही**।	१,२,३,४,५,७–धर्म ... ताही... अति जाही; ६–कर्म...तेही... रति जेही
७।१०५ गुर **नित मोहि प्रबोध,** दुखित देखि आचरन मम।	... १, २, ३, ४, ५, ७–नित मोहि प्रबोध; ६–मोहि नित्य प्रबोध
७।१०५।५ हर **कहुँ** हरि सेवक गुर कहेऊ।	... १, ३, ५, ७–कहँ; २, ४–कहुँ; ६–को
७।१०५।११ सब कर **पद** प्रहार नित सहई।	... १,२,३,४,५,७–पद; ६–पग
७।१०५।१२ मारुत **उड़ाव** प्रथम तेहि भरई। ... **पुनि नृप नयन किरीटन्हि** परई।	१, २, ३, ४,५,७–उड़ाव...पुनि नृप नयन किरीटन्हि; ६–उड़ाइ ... नृप किरीट पुनि नयनन्हि
७।१०५।१४ खेल सन कलह **न भल नहिँ** प्रीती।	१, २, ३, ४, ५,७–न भल नहिं; ६–संग...नहीं भल प्रीती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।१०६	एक बार हर **मंदिर**, जपत रहेउँ सिव नाम।	... १, २, ३, ४, ५, ६–मंदिर ; ७–मंदिरहु; (मंदिरहि)
७।१०६	**सो** दयाल नहिँ कहेउ कछु, उर न रोष लवलेस।	... १,२,३,४,५,७–सो; ६–गुरु
७।१०६।२	अति कृपाल **चित** सम्यक बोधा।	... १,१,३,४,५,७–चित ; ६–उर ; (गुरु)
७।१०६।७	सर्प **होहि** खल मल मति व्यापी।	... १,२,३,४,५–होहि ; ७–होहिं ; ६–होहु
७।१०७	विनय करत गदगद **स्वर**, समुझि घोर गति मोरि।	.. १,२,३,४–स्वर ; ५,६,७-गिरा
७।१०७।७	चलत्कुंडलं **भ्रू सुनेत्रं** विशालं।	.. १,२,३,४,५–भ्रू सुनेत्रं ; ७–भ्रू त्रिनेत्रं ; ६–शुभ्र नेत्रं
७।१०८	जौं प्रसन्न **प्रभु मो पर**, नाथ दीन पर नेहु। निज पद **भगति देइ प्रभु**, पुनि दूसर बर देहु॥	... १,२,३,४,५, ६–प्रभु मो पर ; ७–अति मोहि पर; १,२,३,४,५–भगति देइ प्रभु ; ६–पद्म भक्ति दृढ़ ; ७–भगती देइ प्रभु
७।१०८	**तिहि** पर क्रोध न **करिअ** प्रभु, कृपा सिंधु भगवान।	... १,२,३,४,५,६–तेहि ; ७–ता ; १, २, ३, ४, ५,७–करिय ; ६–कीजिए
७।१०८	साप अनुग्रह होइ **जेहि**, नाथ थोरेही काल।	... १,२,३,४,५,७–जेहि ; ६–ज्यौं
७।१०८।५	ते द्विज **मोहि** प्रिय जथा खरारी।	... १, २, ३, ४, ५, ६–मोहि ; ७–मम
७।१०८।६	मोर साप द्विज व्यर्थ न **जाइहि**, जन्म सहस **अवस्य** यह **पाइहि**।	... १,२,३,४,५,७–जाइहि ; ६–जाई ; १,२–अवस्य ; ३,४,५, ६,७–अवसि
७।१०८।८	सुनहि सूद्र मम बचन **प्रवाना**।	... १,२,३–प्रवाना; ४, ५, ६, ७–प्रमाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।१०८।११ सुनु मम बचन सत्य **अब** भाई । ... १, २, ३, ४,५,७–अव...तोषन ;
हरि **तोषन** व्रत द्विज सेवकाई। ६–अति...तोषण

७।१०९ सुनि सिव बचन हरषि गुर, ... १,२,३,४,५,७–इति ; ६–तब
एवमस्तु **इति** भाषि ।

७।१०६ प्रेरित काल **बिंधि** गिरि, ... १,२,३,४,५–बिधि ; ७–सुबिंधि ;
जाइ भएउ मैं ब्याल । ६–सुविंध्य ; १ २,३,४,५,६–सो;
पुनि प्रयास बिनु **सो** तनु, ७–सोउ
तजेउँ गए कछु काल ॥

७।१०९ **सिव राखी** श्रुति नीति, ... १, २, ३, ४, ५,७–सिव राखी ;
अरु मैं नहिं **पावा** क्लेस । ६–सिव असीस

७।१०६।३ **चर्म** देह द्विज कै मैं पाई । ... १, २, ३, ५–चर्म ; ७–चरम ;
४,६–छर्म

७।१०६।४ खेलौं **तहूँ** बालकन्ह लीला । १,३,४,५–तहूँ ; २–तह ; ६,७–
तहाँ

७ १०६।११ कहहिँ सुनौ **हरषित** खगनाहा । ... १, २, ३, ४, ५,७–हरषित; ६–
हरषौं

७।१०६।१३ छूटी त्रिविधि **ईषना** गाढ़ी । ... १,२,३,७–ईषना ; ४,५–ईर्षना ;
६–इर्षना

७।११० गुर के बचन सुरति करि, ... १,२,३,४,५,७–चरन मन लाग ;
राम **चरन मन लाग** । ६–चरित अनुराग

७।११० तब मैं कहा **कृपानिधि**, ... १,२,३,४,५,६–कृपानिधि ;
तुम्ह सर्वज्ञ सुजान । ७–कृपायतन ; १, २, ३, ४, ५–
सगुन ब्रह्म **अवराधन**, ... अवराधन ; ७–अवराधना ; ६–
मोहि कहहु भगवान । आराधना

७।११०।१ **कहे** कछुक सादर खगनाथा । ... १,२,३,४,५,७–कहे ; ६–कह्यौ

७।११०।६ सो **तैं** तोहि ताहि नहिं भेदा । ... १,२,३,४,५,७ तैं; ६–तइ

७।११०।७ निर्गुन मत **मम** हृदय न आवा । ... १,२,३,४,५,६–मम ; ७–मोहि

७।११०।१० सोइ उपदेस **कहहु** करि दाया । ... १,२,३,४,५,७–कहहु ; ६–करहु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।११०।१२	खंडि सगुन मत **अगुन निरूपा** । ...	१,२,३,४,५,७–अगुन निरूपा ; ६–निर्गुन रूपा
७।११०।१५	सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा **किए** । उपज क्रोध ज्ञानिन्ह के हिए । ...	१,६–किए ; ५–किये ; २,३,४–कीये...हीये ७–कियहू...हियहू ; १, २, ३, ४, ५,७–उपज; ६–उपजै; १,२,३–ज्ञानिन्ह ; ४,५, ६,७–ज्ञानिहुँ
७।११०।१६	अति संघरषन **जौं कर** कोई । अनल प्रगट **चंदन** ते होई । ...	१,२,३,४,५–जौं कर ; ७–जो कर ; ६–जो करै; १,२,३,४, ५, ७–चंदन ; ६–चंदनहु
७।१११	**क्रोध कि द्वैत बुद्धि बिनु,** द्वैत कि बिनु अज्ञान । ...	१,२,३,४,५,७–क्रोध कि द्वैत बुद्धि बिनु ; ६–द्वैत बुद्धि बिनु क्रोध किमि
७।१११।२	परद्रोही **की होहिँ** निसंका । ...	१,२,३–को होहिँ ; ४,५—की होइ ; ६,७–कि होइ
७।१११।५	भव कि परहि **परमात्मा** विंदक । सुखी **की** होहिँ कबहुँ **हरि**निंदक । ...	१,२,३,४,५–परमात्मा ; ६, ७–परमातम; १,२–की...हरि ; ३, ४,५,७–कि...हरि; ६–कि...पर
७।१११।१०	अघ कि **पिसुनता सम** कछु आना ।	१,३,४,५–पिसुनता सम ; २,६, ७–बिना तामस
७।११२	निज प्रभु मय देखहिं जगत, **केहि सन** करहिँ बिरोध । ...	१,२,३,४,५,६–केहि सन ; ७–का सन
७।११२।३	मन **बच क्रम** मोहिं निज जन जाना ।	१,२,३,४,५,७–बच क्रम ; ६–क्रम बचन
७।११२।४	रिषि मम **महत** सीलता देखी । ...	१,३,४,५–महत ; २,६,७–सहन
७।११२।६	हरषित राम मंत्र **तब** दीन्हा । ...	१,२,३,४,५,७–तब ; ६–मोहि
७।११२।१६	**बसिहि** सदा प्रसाद अब मोरे । ...	१,२,३,४,५,७–बसिहि ; ६–बसहु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।११३ **जेहि** आश्रम तुम्ह बसब **पुनि**, ... १,२,३,४,५,६–जेहि;७–जे;(जो)
सुमिरत श्री भगवंत। १,२,३,४,५–बसब पुनि ; ६–
बसहु गे; ७–बसहु पुनि

७।११३।४ **हरि** प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीँ। ... १,२,३,४,५,६–हरि ; ७–प्रभु

७।११५ न तु कामी **बिषया बस**, ... १,२,३,४,५–बिषया बस ; ७–
बिमुखु जो पद रघुबीर। ... बिषया बिवस ; ६–जो विषय वस

७।११५ **सोउ** मुनि ज्ञान निधान, ... १,२,३,४,५,७–सोउ... बिबस ;
मृग नयनी बिधु मुख निरषि। ६–सो...बिकल
बिबस होइ हरिजान,
नारि बिस्व माया प्रगट।

७।११५।२ पन्नगारि यह **रीति** अनूपा। ... १,२,३,४,५,६–रीति ; ७–नीति

७।११६ **जो जानै** रघुपति क्रिपा, ... १,२,३,४,५–जो जानै ; ६,७–
सपनेहु मोह न होइ। ... जाने ते

७।११६ औरौ ज्ञान भगति कर, ... १,२,३,४, ५–सुप्रबीन ; ६–सो
भेद सुनहु **सुप्रबीन**। प्रबीन; ७–परबीन; १,२,३,४,५–
जो सुनि होइ राम पद, ... अबिछीन ; ६,७–अवछीन
प्रीति सदा अबिछीन।

७।११६।१ सुनहु **तात** यह अकथ कहानी। ... १,२,३,४,५,६,७–तात ; (नाथ)
समुझत बनै न **जाइ** बखानी। १,२,३,४,५,६–जाइ ; ७–जात

७।११६।६ सात्विक श्रद्धा धेनु **सुहाई**। ... १,२,३,४,५,७–सुहाई; ६–लवाई

७।११६।११ भाव बछ सिसु **पाइ** पेन्हाई। ... १,२,३,४,५,७–पाइ : ६–धेनु

७।११६।१५ दम **अधार** रजु सत्य सुबानी। ... १, २, ३, ४, ५, ७–अधार ; ६–
सुधार

७।११६।१६ बिमल बिराग **सुभग** सुपुनीता। ... १,२,३,४,५,७–सुभग; ६–सुपरम

७।११७ तब बिज्ञान **रुपिनी**, ... १, २, ३, ४, ५–रुपिनी ; ६–
बुद्धि बिसद घृत पाइ। स्वरुपिणी ; ७–निरुपनी

७।११७ जातहि **जासु** समीप, ... १,३,४,५,६–जासु ; २,७–तासु
जरहिँ मदादिक सुलभ सब।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।११७।२ तब भव मूल भेद भ्रम नासा। ...	१,२,३,४,५,७–भेद भ्रम ; ६–देह भ्रम
७।११७।४ तब सोइ बुद्धि पाइ उँजियारा। ... उर गृह बैठि ग्रंथि निरुआरा।	१, २, ३, ४, ५, ६–उँजियारा··· निरुआरा ; ७–उजियारी··· निरुआरी
७।११७।५ छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई। ...	१,२,३,४,५,७–सोई ; ६–कोई
७।११७।८ कल बल छल करि जाहिँ समीपा।	१,२,३–जाहिँ ; ४,५,६,७–जाइ
७।११७।६ होइ बुद्धि जौं परम सयानी। ... ... जानी।	१,२,३,४,५,७–सयानी···जानी; ६–सयाने··· जाने
७।११७।१० जौं तेहि बिघ्न बुद्धि नहिँ बाधी।...	१,२,३,४,५,७–बिघ्न बुद्धि ; ६–बुद्धि बिघ्न
७।११७।१२ ते हठि देहिँ कपाट उघारी। ...	१,२,३,४,५,७–ते ; ६–तेहि
७।११७।१६ तेहि बिधि दीप को बार बहोरी। ...	१,२,३,४,५,७–बार ; ६–करै
७।११८ तब फिरि जीव बिबिधि बिधि, ... पावै संसृतिक्लेस। ...	१,२,३,४,५,७–बिबिधि बिधि ; ६–सुबिबिध बिधि
७।११८ कहत कठिन समुझत कठिन, ... साधत कठिन अनेक। होइ घुनाच्छर न्याय जौँ, पुनि प्रत्यूह अनेक।	१,२,५–साधत ; ३, ४, ६, ७–साधन ; १, २, ३, ४,५,७–जौं ; ६–ज्यौं
७।११८।१ ज्ञान पंथ कृपान कै धारा। ...	१,२,३,४,५,६–पंथ ; ७–क पंथ
७।११८।४ राम भजत सोइ मुकुति गोसाईं।...	१, २, ४, ५, ६–भजत ; ३–भजन ; ७–भगति
७।११६।५ प्रबल अविद्या तम मिटि जाई। ...	१, २, ३, ४, ५, ७–प्रबल ; ६–अचल
७।११९।१२ सुगम उपाय पाइबे केरे।···भट भेरे।	१,२,३,४,५,७–केरे···भेरे ; ६–केरो···भेरो
७।११६।१९ अस बिचारि जोइ कर सतसंगा। ...	१,२,३,४,५,६–जोइ ; ७–जेइ ; (जो)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।१२० कथा सुधा मथि **काढ़हिँ**, भगति मधुरता जाहि । ... १, २, ३, ४, ५, ७—काढ़हिँ ६—काढ़िये

७।१२०।६ कहहु कवन अघ परम **कराला** । ... १,२,३,४,५,७—कराला ; ६—कृपाला

७।१२०।१० ज्ञान बिराग भगति **सुभ** देनी । ... १,२,५—सुभ ; ३,४,६,७—सुख

७।१२०।११ **होहिँ** बिषय रत मंद ंद तर । ... १,२,३,४,५,७—होहिँ ; ६—होइ

७।१२०।१२ काचु किरिच बदले **ते** लेही । ... १, ३, ४, ५, ७—ते ; २—जे ; ६—जिमि

७।१२०।१३ संत मिलन सम सुख **जग** नाहीँ । ... १,२,३,४,५,६—जग ; ७—कछु

७।१२०।१६ **भूर्ज** तरू सम संत कृपाला । परहित **निति** सह बिपति बिसाला । ... १,२,३,४,५—भूर्ज तरू···निति ; ६,७—भूरज तरू ; ३,६—नित ; ७—निज

७।१२०।२० दुष्ट **उदय** जग **अनरथ** हेतू । ... १,२,३,५,७—उदय; ४,६—हृदय; १, २,७—अनरथ ; ६—आरत ; ३,४,५—आरति

७।१२०।२६ मोह निसा प्रिय ज्ञान भानु **गत** । ... १,२,३,४,५,७—गत ; ६—मत

७।१२०।२८ **जिन्ह ते** दुख पावहिँ सब लोगा । ... १,२,३,४,५,७—जिन्ह ते ; ६—जेहि ते ; (जिहि ते)

७।१२०।२९ **तिन्ह ते** पुनि उपजहिँ बहु सूला । ... १, २, ३, ४, ५—तिन्ह ते ; ६—तेहि ते ; ७—जेहि ते

७।१२०।३५ अहंकार अति दुखद **डमरुआ** । दंभ कपट मद मान **नेहरुआ** । ... १, २, ३, ४, ५—डमरुआ ; ७—डहरुआ; ६—हकरुआ; १,२,३—नेहरुआ ; ४,५,६,७—नहरुआ

७।१२१ नेम धर्म आचार तप, **ज्ञान** जज्ञ जप दान । भेषज पुनि **कोटिन्ह** नहिँ, रोग जाहिँ हरिजान । ... १,२,३,४,५,६—ज्ञान ; ७—जोग; १, २, ३, ४, ५—कोटिन्ह ; ६—कोटिक ; ७—कोटिहु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।१२१।१	एहि बिधि सकल जीव **जग** रोगी ।...	१,२,३,४,५,७–जग ; ६–जड़
७।१२१।२	मानस रोग कछुक मैं **गाए** । **इहिं** सब के लखि बिरलेन्ह पाए ।	१,२,३,४,५,६–गाए; ७-गाई… पाई; १, २, ३, ४, ५-इहिं ; ६–होहिं; ७-है; (होहिं)
७।१२१।६	सद् गुर **बैद** बचन बिस्वासा । ...	१,२,३,४,५,६–बैद ; ७–बेद
७।१२१।७	अनूपान श्रद्धा **मतिपूरी** । ...	१,२,३,४,५,७–मतिपूरी ; ६–अति रूरी
७।१२१।८	एहि बिधि **भलेहि सो** रोग नसाहीं ।	१,३–भलेहि सो रोग ; ४,५,६–भलेहीं रोग; ७–भलेहि कुरोग; २–भलेहिं रोग
७।१२१।१८	अंधकारु बरु **रबिहि** नसावै । ...	१, २, ३, ४, ५,७–रबिहि ; ६–ससिहि
७।१२२	बिनु हरि भजन न भव **तरिअ**, येह सिद्धांत अपेल । ...	१,२,३–तरिअ ; ४,५,७–तरिय ; ६–तरहिं
७।१२२।३	**मोहि से** सठ पर ममता जाही । ...	१,२,३,४,५,६–मोहि से ; ७–मोहिते ; (मोते)
७।१२३	चरित सिंधु **रघुनायक**, थाह कि पावै कोई ...	१, २, ३, ४, ५–रघुनायक ; ७–रघुनाथ कर ; ६–रघुबीर के
७।१२३।१	सुमिरि राम **के** गुन गन नाना । ...	१,२,३,४,५,६–के ; ७–कर
७।१२४	जासु नाम भव भेषज, हरन **घोर** त्रय सूल । सो कृपाल **मोहि तो पर,** **सदा रहौ** अनुकूल ॥ ...	१,२,३,४,५, ७–घोर; ६–ताप; १,२–मोहि पर सदा रहौ राम ; ३,४,५,६–मोहि तोहि पर सदा रहहु ; ७–मम तुम्ह पर सदा रहहु
७।१२४।३	मोह जलधि बोहित तुम्ह **भए** ।...**दए**	१,२,३,४,५–भए…दए ; ६,७–भयेऊ…दयेऊ
७।१२४।४	**मो पहिँ** होइ न प्रति उपकारा । ...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७–पहिं ; (पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।१२४।७	कहा कबिन्ह **परि** कहैं न जाना । ...	१,२,३–परि ; ४, ५, ७–पै ; ६–पइ
७।१२४।८	पर दुख द्रवहिँ **संत सुपुनीता** । ...	१,२,७–संत सुपुनीता ; ३,४,५, ६–सुसंत पुनीता
७।१२६।४	**सोइ** कबि कोबिद **सोइ** रनधीरा । ...	१,२,६–सोइ ··· सोइ ; ३,४,५, ७–सो ··· सो
७।१२६।५	धन्य **देस सो जहँ** सुरसरी । ...	१,२,३,४,५–देस सो जहँ ; ६, ७–सो देस जहाँ ; (सुदेस जहाँ)
७।१२६।७	धन्य पुन्य रत मति **सोइ** पाकी । ...	१, २, ३, ४, ५, ७–सोइ ; २–जाकी ; ६–सो
७।१२७।४	यह न **कहिय सठही** हठ सीलहि । ...	१,२,३,४,५,७–कहिय सठही ; ६–कहीजे सठ
७।१२७।६	राम कथा के **तेइ** अधिकारी । ...	१,२–तेइ ; ३,४,५,६,७–ते
७।१२८	राम चरन रति जो **चह**, अथवाँ पद निर्बान । भाव सहित सो येहि कथा, **करौ** श्रवन पुट पान । ...	१,२,३,४–चह ; ६, ७–चहै ; ५–चहँ ; १,२,३,५–करौ , ४, ७–करै ; ६- करहि
७।१२८।१	कलि मल **समनि** मनोमल हरनी । ...	१, २, ३, ४, ५, ७–समनि ; ६–हरनि
७।१२८।३	रघुपति भगति केर **पंथाना** । ...	१,२,३,४,५,६–पंथाना ; ७-पथ नाना
७।१२८।४	अति हरिकृपा **जाहि** पर होई । ...	१, २, ३, ४, ५, ७–जाहि ; ६–जासु
७।१२८।५	मन कामना सिद्धि नर **पावा** । ... .**गावा**	१,२,३,४,५,६–पावा ···· गावा ; ७–पावै ·· गावै
७।१२८।७	सुनि **सब** कथा हृदय अति भाई । ...	१,२,३,४,५,७–सब ; ६–सुभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।१२६।८	ताहि **भजिअ** मन तजि कुटिलाई ।...	१,२–भजिअ ; ३, ६–भजहि; ४,५,७–भजिय
७।१३०	दारुन अबिद्या पंच जनित, बिकार **श्री रघुबर** हरे । ...	१,२,३,४,५–श्री रघुबर;६,७–श्री रघुपति
७।१३०	तिमि **रघुनाथ निरंतर,** प्रिय लागहु मोहि राम । ...	१,२,३,५,७–रघुनाथ निरंतर ६–रघुवंश निरंतरहिं

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरितमानस की कुछ अर्धालियाँ जो किन्हीं प्रामाणिक प्रतियों में नहीं मिलतीं उनका संकेत इस प्रकार है—

बाल कांड

१।७७।४ सुनत रिषिन के बचन भवानी। बोली गूढ़ मनोहर बानी।

भा० १,२,३,४,५,७,८–में है ; ६–में नहीं है

१।२३६।६ चले सकल गृह काज बिसारी। बाल जुवान जरठ नर नारी।

भा० १,२,३,४,५,७,८–में है ; ६–में नहीं है

१।२६१।७ रही भुअन भरि जय जय बानी। धनुष भंग धुनि जात न जानी।

भा० १,२,३,४,५,७,८–में है ; ६–में नहीं है

१।२६३।६ सुनत जुगल कर माल उठाई। प्रेम बिवस पहिराय न जाई।

भा० १,२,३,४,५,७,८–में है; ६–में नहीं है

१।२८१।७ देव एक गुन धनुष हमारे। नव गुन परम पुनीत तुम्हारे।

भा० १,२,३,४,५,७,८–में है ; ६–में नहीं है

१।३२४।२ जाइ न बरनि मनोहर जोरी। जो उपमा कछु कहौं सो थोरी।
राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं। जगमगाति मनि खंभन्ह माहीं।

भा० १,२,३,४,५,७,८–में है ; ६–में नहीं है

अयोध्या कांड

२।१।२ सकल सुकृत मूरति नरनाहू। राम सुजस सुनि अतिहि उछाहू।

भा० २,३,४,५,६,७–में है ; ८–में नहीं है

२।४।३ प्रमुदित मोहि कहेउ गुर आजू। रामहि राय देहु जुबराजू।

भा० २,३,४,५,६,७–में है ; ८–में नहीं है

२।[illegible]।४ बार बार गनपतिहि निहोरा। कीजै सफल मनोरथ मोरा।
के आगे ७–में है ; भा० २,३,४,५,६,८–में नहीं है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।१६।४ कीन्हिसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू। फिरि न नवइ जिमि उकठि कुकाठू।

भा० २,३,६-में है ; ७-में नहीं है

२।२८।५ गयेउ सहमि नहिं कछु कहि आवा। जनु सचान बन झपटेउ लावा।

भा० २,३,४,५,८-में है ; ६,७-में नहीं है

२।५६।६ बहु विधि बिलपि चरन लपटानी। परम अभागिनि आपुहि जानी।

भा० २,३,४,५,७,८-में है ; ६-में नहीं है

२।६३।७ अस कहि सिय रघुपति पद लागी। बोली बचन प्रेम रस पागी।

के आगे ७-में है ; भा० २,३,४,५,६,८-में नहीं है

२।८७।४ सहज सनेह बिबस रघुराई। पूँछी कुसल निकट बैठाई।

भा० २,३,४,५,६,७-में है ; ८-में नहीं है

२।१७२।७ तीनि काल तिभुवन जगमाहीं। भूरि भाग दसरथ सम नाहीं।

के आगे ७-में है ; २,३,४,५,६,८-में नहीं है

२।१८३।१ ... ... । राम सनेह सुधा जनु पागे।

लोग बियोग विषम विष दागे। ... ...

भा० २,३,४,५,६,७-में है; ८-में नहीं है

२।१८४।७ केहि न भाव सिय लछिमन रामू। सब कहँ प्रिय हिय सदा सकामू।

के आगे ७-में है ; भा० २,३,४,५,६,८-में नहीं है

२।२०१।६ निदहिं आपु सराहि निषादहिं। को कहि सकइ बिमोह बिषादहिं।

भा० २,३,४,५,६,८-में है; ७-में नहीं है

२।२१७।२ कह गुर बादि छोभु छलु छाँड़ू। इहाँ कपट करि होइअ भाँडू।

भा० २,३,४,५,६,७-में है; ८-में नहीं है

२।२२४।२ भरतहि सहित समाज उछाहू। मिलिहहिं राम मिटिहि दुख दाहू।

भा० ३,४,५,७,८-में है; २,६-में नहीं है

२।२५५।२ ... ... । अरथ तजहिं बुध सरबसु जाता।

तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई। फेरिय लषन सीय रघुराई।

सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता। ... ... ।

भा० २,३,४,५,६,७-में है; ८-में नहीं है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२।२७८।५ ... ... । जनु महि करति जनक पहुनाई।
तब सब लोग नहाइ नहाई। ... ...।
भा० २,३,४,५,६,७-में है; ८-में नहीं है

२।२९०।६ ... ... । रिषि धरि धीर जनक पहिँ आए।
राम वचन गुर नृपहिं सुनाए। ... ...।
भा० २,३,४,५,६,७-में है; ८-में नहीं है

२।२९५।२ गए जनकु रघुनाथ समीपा। सनमाने सब रविकुल दीपा।
भा० ३,४,५,७,८-में है; २,६-में नहीं है

२।३२४।७ भरत रहनि समुझनि करतूती। भगति बिरति गुन बिमल विभूती।
भा० ३,४,५,७,८-में है; २,६-में नहीं है

आरण्य कांड

[इस कांड में काशिराज की प्रति में बहुत से ऐसे अंश हैं जो अन्य किसी प्रामाणिक प्रति में नहीं मिलते। उनके लिये देखिए नागरीप्रचारिणी पत्रिका सं० १९९८ अंक ३ पृ० २३३—२४०]

३।४० दीप सिखा सम जुवति तन मन जमि होसि पतंग।
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग॥
भा० १, २, ३, ४,५,६-में है; ७-में नहीं है

किष्किंधा कांड

४।२५।२ सब मिलि कहहिँ परसपर बाता। बिनु सुधि लए करब का भ्राता।
भा० १,२,३,४,५,६-में है; ७-में नहीं है

४।२५।६ पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीँ। मरन भएउ कछु संसय नाहीँ।
अंगद बचन सुनत कपि बीरा। बोलि न सकहिँ नयन बह नीरा।
छन एक सोच मगन होइ रहे। पुनि अस बचन कहत सब भए।
हम सीता कै सुधि लीन्हे बिना। नहिँ जैहैँ जुवराज प्रबीना।
भा० १,२,३,४,५,६-में है; ७-में नहीं है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४।२६।३ आजु सबहि कहुँ भच्छन करऊँ। दिन बहु चलेउ अहार बिनु मरऊँ।
कबहुँ न मिलै भर उदर अहारा। आजु दीन्ह बिधि एकहिं बारा।
भा० १,२,३,४,५,६-में है, ७-में नहीं है

४।२६।६ कपि सब उठे गीध कहँ देखी। जामवंत मन सोच बिसेखी।
भा० १,२,३,४,५,६-में है; ७-में नहीं है

लंका कांड

लव निमेष परवानु जुग बरष कलप सर चंड।
भजसि न मन तेहि रामकहुँ कालु जासु कोदंड।
भा० १,२,५,६-में यह दोहा श्लोक के पहले है ; ३,४,७-में श्लोक के बाद है

६।१५ अस बिचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन बयरु बिहाइ।
प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ।
भा० १,२,३,४,५,७-में है; ६-में नहीं है

६।३४ कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ।
झपटहिं टरै न कपि चरन पुनि बैठहिं सिर नाइ।
भा० १,२,३,४,५,७-में है ; ६-में नहीं है

६।३८।७ हरषित राम चरन सिर नावहिं। गहि गिरि सिखर बीर सब धावहिं।
भा० १,२,३,४,५-में है ; ६,७-में नहीं है

६।७०।७ परे भूमि जिमि नभ ते भूधर। हेठ दाबि कपि भालु निसाचर।
भा० १,२,३,४,५-में है ; ६,७-में नहीं है

६।७४।६ मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई। जेहिं छीजै निसिचर सुनु भाई।
भा० १,२,३,४,५-में है ; ६,७-में नहीं है

६।७५।१ जाइ कपिन्ह सो देखा बैसा। आहुति देत रुधिर अरु भैंसा।
भा० १,२,३,४,५-में है; ६,७-में नहीं है

६।८८।४ चंचल तुरग मनोहर चारी। अजर अमर मन सम गति का[illegible]।
भाग १,२,३,४,५-में है ; ६,७-मे[illegible]हीं है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६।११९ जहँ जहँ कृपासिंधु बन कीन्ह बास बिश्राम।
सकल देखाए जानकिहि कहे सबन्हि के नाम।
भा० १,२,३,४,५,६–में है ; ७–में नहीं है

———

उत्तर कांड

७।२६।५ काल कराल ब्याल खग राजहि। नमत राम अकाम ममता जहि।
लोभ मोह मृग जूथ किरातहि। मनसिज करि हरिजन सुखदातहि।
भा० १,२,३,४,५,७–में है ; ६–में नहीं है

७।१२५ गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन।
बिनु हरि कृपा न होइ सो गावहिँ वेद पुरान।
भा० १,२,३,४,५–में है; ६,७–में नहीं है

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110746

रामचरितमानस के पाठभेद का मूल उद्गम वा अंतिम स्वरूप, आधारभूत मानी गई इन्हीं **दस पोथियों**[1] को लेकर चला है। सातों कांडों के पाठ-भेद के संकेत इस प्रकार समाप्त होते हैं। पर इन कुछ निर्देश किए गए स्थलों से पाठ-भेद का अध्ययन समाप्त नहीं हो जाता, कारण कि जिन स्थलों में सभी (आधारभूत) पोथियों का पाठैक्य है वे इस सूची में नहीं आ सके हैं और वे मारके के पाठ हो सकते हैं। ये तो रामचरितमानस के परखने के कुछ चावल मात्र हैं। शुद्ध रामचरितमानस का नमूना तो एक यत्नपूर्वक—बिंदु विसर्ग तक—संशोधित प्रति ही हो सकती है। ऐसी संशोधित प्रतियों का निकलना अब अत्यंत आवश्यक है और इसके लिये संगठित प्रयत्न होना चाहिए। रामचरितमानस हिंदी पढ़ी लिखी जनता का नैतिक भोजन बन गया है। प्रति वर्ष—नई फसल की नाईं—इसके नवीन शुद्ध, उत्तम पर सुलभ संस्करणों का निकलना बढ़ती हुई जनता की माँग की पूर्ति के लिये नितांत आवश्यक है। जब तक यह नहीं होता हिंदी के हिमायतियों के लिये कलंक की, हिंदी प्रकाशकों के लिये निंदा की और हिंदी जनता के लिये दुर्भाग्य की बात समझनी चाहिए। तब तक श्रावण 'शुक्ला सप्तमी' वा 'श्यामा तीज' के दिन चित्र पर माला फूल सजा कर कोई जलसा कर लेना, कुछ रो गा लेना अपनी हृदयहीनता तथा विचारशून्यता के विज्ञापन के अतिरिक्त और कोई अर्थ नहीं रखता[2]।

१—देखिए, इस लेख का पृ० ८

२—लेखक ने रामचरितमानस का सर्वांगीण अध्ययन करते हुए चौपाइयों के प्रत्येक चरण और छंद, सोरठा, दोहा की प्रत्येक पंक्ति का एक वर्णानुक्रम-कोश तैयार किया है। हम आशा करते हैं कि अधिकारी प्रकाशक इसके लिये उत्साह दिखाएँगे।

—सं०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

110746
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघुनाथरूपक गीताँ रो

(संपादक—श्री महताबचंद खारैड़, विशारद)

डिंगल-भाषा के महाकवि मंछ (मनसाराम) का यह प्रसिद्ध ग्रंथ १८८३ वि० में लिखा गया था। इसमें रामचंद्रजी की कथा का बड़ा कवित्व-पूर्ण वर्णन है और यह डिंगल-भाषा का अत्यंत प्रामाणिक रीतिग्रंथ भी है। छंदों का हिंदी में शब्दार्थ और भावार्थ भी दिया गया है। आरंभ में पुरोहित हरिनारायण शर्मा, बी० ए०, विद्याभूषण की लिखी हुई महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पृष्ठ-संख्या ३६०, सजिल्द, मूल्य २)।

मोहें जो दड़ो

(लेखक—श्री सतीशचंद्र काला, एम० ए०)

मोहें जो दड़ो अर्थात् 'मुर्दों का टीला' सिंधु प्रांत में एक बहुत प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ की खोदाई में मिली हुई वस्तुओं से भारत के प्राचीन इतिहास और संस्कृति पर अच्छा प्रकाश पड़ता है जिसका वर्णन इस पुस्तक में है। पृष्ठ-संख्या २००, मू० २)

नई कहानियाँ

(संपादक—श्री राय कृष्णदास, श्री पद्मनारायण आचार्य, एम० ए०)

हिंदी के कहानी-साहित्य के नवीनतम विकास का सबसे सुंदर उदाहरण यह पुस्तक है। इसमें १२ चुनी हुई नई कहानियाँ संगृहीत हैं। आरंभ में विद्वत्तापूर्ण 'प्रस्तावना' और अंत में 'नई कहानियों का अनुशीलन' अध्ययन के लिये बहुत उपयोगी है। पृष्ठसंख्या १८४; मू० १।)

नागरीप्रचारिणी पत्रिका

(नवीन संस्करण)

सभा की इस मुख-पत्रिका में अब तक अनेकानेक गवेषणापूर्ण लेख, निबंध एवं शोध संबंधी अनेक नई स्थापनाएँ प्रकाशित हुई हैं। इसके चलते वर्ष का मूल्य १०) प्रति भाग है। पिछले वर्षों का मूल्य घटाकर ३) प्रति भाग कर दिया गया था, पर अब सभा में स्थान की संकीर्णता के विचार से नवीन संस्करण के आरंभ से लेकर सं० १९९३ तक के प्राप्य भागों का मूल्य ॥) प्रति भाग कर दिया गया है। इनकी बहुत थोड़ी प्रतियाँ शेष रह गई हैं। ग्राहक कृपया शीघ्रता करें, अन्यथा पत्रिका के ये भाग सदा के लिये अलभ्य हो जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी शब्दसागर

सभा द्वारा प्रकाशित यह शब्दसागर हिंदी भाषा का सबसे बृहत् और सर्वाधिक प्रामाणिक कोश है। इसके कुछ खंड समाप्त प्राय हैं जिनके शेष होने पर संपूर्ण कोश उपलब्ध न हो सकेगा। अतः जिन सज्जनों अथवा संस्थाओं का विचार इसे मँगाने का हो वे कृपया अविलंब मँगा लें। चार सुंदर और मजबूत जिल्दों के एक सेट का मूल्य ७५) है। आर्डर के साथ कम से कम २०) अग्रिम और निकटस्थ रेलवे स्टेशन का नाम आना आवश्यक है।

रत्नाकर

सस्ता संस्करण

[पहला भाग　　　　　पृ० ३२५　　　　　मूल्य १)

स्वर्गीय बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' की समस्त प्रकाशित-अप्रकाशित कविताओं का संग्रह 'रत्नाकर' के नाम से सभा ने प्रकाशित किया था। इसके विशिष्ट संस्करण का मूल्य ८) और साधारण संस्करण का ७) होने से सर्वसाधारण, विशेषतः अल्पवित्त हिंदी-प्रेमी, इस ग्रंथ से वंचित ही रहे। अतः अब दो भागों में इस ग्रंथ का एक सस्ता संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। पहले भाग की पृष्ठ-संख्या लगभग ३२५ और मूल्य १) होगा। इस सस्ते संस्करण की बहुत थोड़ी प्रतियाँ छप रही हैं, अतएव काव्यरसिक अपनी प्रतियाँ कृपया शीघ्र सुरक्षित करा लें।

उद्धवशतक

रत्नाकर के पारखियों ने उद्धवशतक को रत्नाकर जी की सर्वाधिक प्रौढ़ और मर्मस्पर्शी कृति माना है। विभिन्न शिक्षालयों में यह पाठ्य पुस्तक के रूप में नियत है। अतः विद्यार्थियों की सुविधा का ध्यान रखते हुए यह शतक अलग पुस्तकाकार प्रकाशित हो रहा है। मूल्य ≡) मात्र।

गंगावतरण

गंगावतरण भी रत्नाकर जी का एक विशिष्ट प्रबंध-काव्य है। इसमें गंगा के स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरने की पौराणिक कथा की बहुत ही विशद, ओजपूर्ण और सौंदर्य-समन्वित रहस्यमयी वर्णना है। यह भी कतिपय शिक्षालयों में पाठ्य-पुस्तकों के अंतर्गत है। विद्यार्थियों की सुविधा के विचार से इसका भी अलग पुस्तकाकार प्रकाशन हो रहा है। मूल्य ||) मात्र।

मुद्रक—श्री अपूर्वकृष्ण बसु, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस-ब्रांच।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri